₹ 49/-

TOPPERS CLUB
IAS ACADEMY

Monthly CURRENT AFFAIRS
By - Toppers Club

Nov-25

Contact Us
+91 6388671098
dpsctc@gmail.com
www.topperclubiasacademy.in

Er Dev Pratap Singh
Director

IAS | IPS | PCS | IFS | IRS & OTHER COMPETITIVE EXAMS

बिहार **एसआईआर** विवाद:
जाने विस्तार से

फ्रांस, बोलीविया और जापान
ने नए राष्ट्रीय नेताओं की नियुक्ति की

सर क्रीक का महत्व:
जाने विस्तार से

भारत में
माओवादी आंदोलन
का क्षीण होना

हेनले पासपोर्ट
इंडेक्स 2025:
सिंगापुर शीर्ष पर, भारत 85 वें स्थान पर

भारत ने एशिया कप 2025 जीता,
अभिषेक शर्मा ने
शीर्ष पुरस्कार जीता

सबरीमाला गोल्ड-प्लेटिंग
विवाद की व्याख्या

केंद्र ने **सोनम वांगचुक** के
एनजीओ का एफसीआरए
लाइसेंस रद्द किया

70th
फिल्मफेयर पुरस्कार और सरस्वती सम्मान
प्रदान किए गए

नोबेल पुरस्कार
2025
एक नज़र

Toppers Club IAS Acacdemy
All Copyright Reserved

Contact Info:
Phone No: +91 6388671098
Mail: dpsctc@gmail.com
Website: www.topperclubiasacademy.in

अस्वीकरण

यह पुस्तक विशेष रूप से शैक्षणिक और सूचनात्मक उद्देश्यों के लिए तैयार की गई है। लेखक(ों) द्वारा यह सुनिश्चित करने का हर संभव प्रयास किया गया है कि किसी भी मौजूदा कॉपीराइट या बौद्धिक संपदा अधिकार का उल्लंघन न हो। यदि किसी स्रोत का अनजाने में उल्लेख नहीं किया गया है या किसी प्रकार का अनचाहा उल्लंघन हुआ है, तो कृपया प्रकाशक को लिखित रूप में सूचित करें ताकि आवश्यक सुधारात्मक कार्रवाई तुरंत की जा सके।

हालाँकि सामग्री की सटीकता और पूर्णता सुनिश्चित करने के लिए गहन समीक्षा की गई है, फिर भी अनजाने में कुछ त्रुटियाँ या चूक हो सकती हैं। किसी भी पाई गई विसंगति को आगामी संस्करणों में ठीक किया जाएगा। लेखक(ों), प्रकाशक और वितरक इस पुस्तक में दी गई जानकारी के उपयोग या दुरुपयोग के कारण होने वाले किसी भी नुकसान, क्षति या परिणाम के लिए उत्तरदायी नहीं हैं। पाठकों को सलाह दी जाती है कि वे किसी भी कानूनी, तथ्यात्मक या महत्वपूर्ण जानकारी की पुष्टि के लिए आधिकारिक स्रोतों से परामर्श करें।

बाइंडिंग में दोष, प्रिंटिंग में त्रुटि या पृष्ठों की कमी जैसी समस्याओं के मामलों में प्रकाशक की ज़िम्मेदारी केवल उसी या समकक्ष संस्करण की दोषपूर्ण प्रति के प्रतिस्थापन तक ही सीमित है। प्रतिस्थापन के लिए अनुरोध खरीद की तारीख से सात दिनों के भीतर प्रस्तुत किया जाना चाहिए, और इससे संबंधित सभी लागतें, जैसे कि शिपिंग, क्रेता द्वारा वहन की जाएंगी।

सर्वाधिकार सुरक्षित

इस प्रकाशन के किसी भी भाग को बिना प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के किसी भी रूप में—चाहे वह इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोग्राफिक या अन्य कोई माध्यम हो—प्रतिलिपि, संग्रह या प्रेषित नहीं किया जा सकता है। बिना अनुमति के उपयोग, पुनरुत्पादन या वितरण के परिणामस्वरूप कानूनी कार्रवाई की जा सकती है।

लेखक इस कृति की मूल सामग्री पर पूर्ण अधिकार रखते हैं, सिवाय उन उद्धरणों के जहाँ उपयुक्त अनुमति के साथ स्रोत का उल्लेख किया गया है। यह प्रकाशन किसी कॉपीराइट, ट्रेडमार्क, पेटेंट, गोपनीयता कानूनों का उल्लंघन नहीं करता है, और इसमें कोई मानहानिकारक सामग्री सम्मिलित नहीं है।

प्रिय अभ्यर्थियों,

"सपने तब तक पूरे नहीं होते जब तक आप उनके लिए मेहनत नहीं करते — क्योंकि बिना प्रयास की महत्वाकांक्षा केवल एक इच्छा बनकर रह जाती है। आप जो भी पृष्ठ पढ़ते हैं, जो भी अवधारणा समझते हैं, और जितनी निरंतरता बनाए रखते हैं, वह हर क्षण आपको आपके सपने के और करीब ले जाती है।"

एक सिविल सेवक बनने की दिशा में, समसामयिक घटनाएँ (Current Affairs) आपकी तैयारी की रीढ़ हैं। यह केवल घटनाओं से अवगत रहने का माध्यम नहीं हैं, बल्कि शासन, कूटनीति, अर्थव्यवस्था और समाज की गतिशीलता को समझने की प्रक्रिया हैं। UPSC अभ्यर्थियों के लिए, समसामयिक विषयों से निरंतर जुड़ाव स्थिर ज्ञान को जीवंत अंतर्दृष्टि में बदल देता है, जिससे आप अवधारणाओं को जोड़ पाते हैं, गहराई से विश्लेषण कर पाते हैं और सार्थक रूप से अभिव्यक्त कर पाते हैं।

इस माह का अंक UPSC तैयारी के लिए आवश्यक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों का व्यापक और विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। हम शुरुआत करते हैं बिहार SIR विवाद और सबरीमाला स्वर्ण-लेपन विवाद से, जो शासन, जवाबदेही और सार्वजनिक संस्थानों पर उनके प्रभावों को उजागर करते हैं। वैश्विक स्तर पर, फ्रांस, बोलिविया और जापान में नए नेतृत्व का आगमन हुआ है, जो अंतरराष्ट्रीय संबंधों और नीतिगत प्राथमिकताओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन को दर्शाता है।

हमारा विशेष आलेख 2025 के नोबेल पुरस्कार विजेताओं पर केंद्रित है, जो विभिन्न क्षेत्रों में किए गए ऐतिहासिक योगदानों को रेखांकित करता है—नवाचार, विज्ञान और शांति के प्रयासों की समझ के लिए यह अत्यंत उपयोगी है। इसी प्रकार, सर क्रीक का महत्व और भारत में माओवादी आंदोलन का क्षरण जैसे विश्लेषणात्मक लेख भारत की सुरक्षा और क्षेत्रीय मुद्दों की गहराई को समझने के लिए अनिवार्य हैं।

हमने इस अंक में भारत के सांस्कृतिक और सामाजिक परिदृश्य को भी उजागर किया है—70वें फिल्मफेयर पुरस्कार और सरस्वती सम्मान के माध्यम से सृजनात्मकता और साहित्यिक उत्कृष्टता का उत्सव मनाया गया है। खेल जगत में, भारत की एशिया कप 2025 में विजय और अभिषेक शर्मा के उत्कृष्ट प्रदर्शन टीमवर्क और दृढ़ निश्चय की मिसाल हैं—ऐसे गुण जो हर अभ्यर्थी को अपनाने चाहिए। इसके अतिरिक्त, केंद्र द्वारा सोनम वांगचुक के एनजीओ का FCRA लाइसेंस रद्द करना और हेनली पासपोर्ट इंडेक्स 2025—जहाँ सिंगापुर शीर्ष स्थान पर और भारत 85वें स्थान पर है—नीति, नागरिक समाज और वैश्विक छवि से जुड़े उन विषयों को समझने में सहायक हैं, जो अक्सर UPSC परीक्षा में परिलक्षित होते हैं।

जब आप इस अंक के पन्ने पलटें, तो याद रखें—समसामयिक घटनाएँ केवल समाचार नहीं हैं; वे उस विश्व की कहानी हैं, जिसका संचालन आप शीघ्र ही करने वाले हैं।

प्रश्न पूछते रहें। सीखते रहें। आगे बढ़ते रहें।

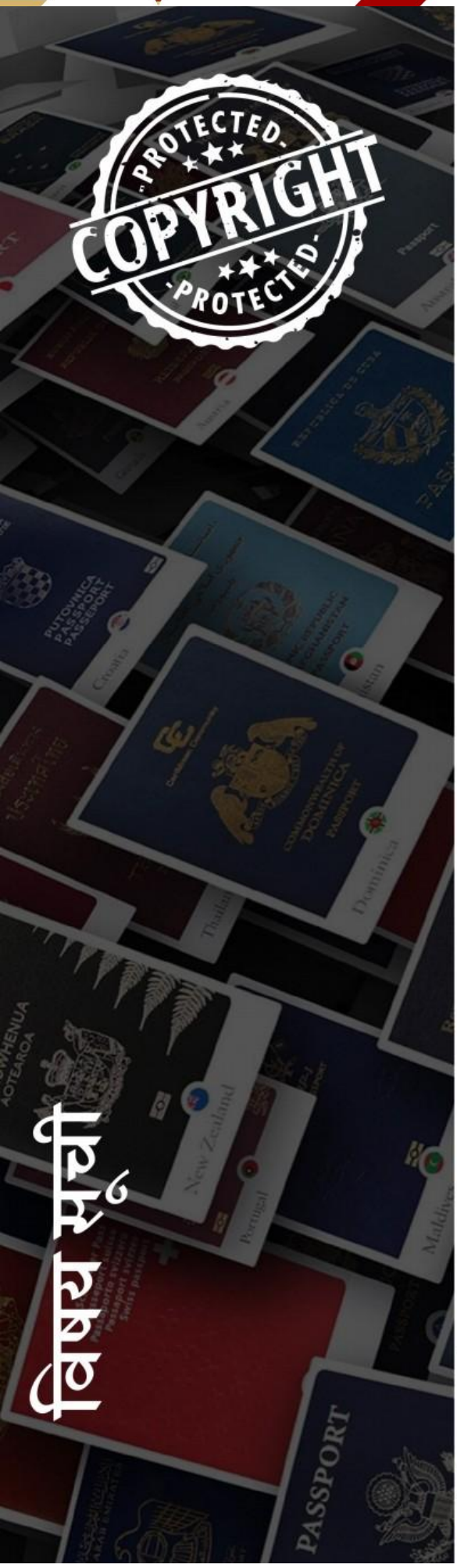

इस संस्करण में शामिल हैं

- नोबेल पुरस्कार विजेता 2025
- नियुक्तियाँ
- राजतन्त्र एवं शासन
- अंतर्राष्ट्रीय संबंध एवं घटनाएँ
- अर्थव्यवस्था एवं व्यापार
- रक्षा एवं सुरक्षा
- सामाजिक मुद्दे एवं योजनाएँ
- पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
- संस्कृति एवं इतिहास
- खेल-कूद
- निधन
- परीक्षाओं हेतु महत्वपूर्ण दिन
- पुस्तकें एवं लेखक

बिजनेस न्यूज, फाइनेंशियल न्यूज, इकोनॉमी न्यूज, पॉलिटिक्स न्यूज, इंडिया न्यूज, ब्रेकिंग न्यूज, इंडियन इकोनॉमी, इंटरनेशनल न्यूज, स्पोर्ट्स न्यूज एवं कई अन्य विषयों को कवर किया गया .....

समाचार साभार

बीबीसी, रॉयटर्स, अल जज़ीरा, पीआईबी, पीटीआई, बिजनेस स्टैंडर्ड, द हिन्दू, इंडियन एक्सप्रेस, टाइम्स ऑफ इंडिया, इकोनॉमिक टाइम्स, बिज़नेस लाइन, इंडिया टुडे, मनी कंट्रोल एवं अन्य सभी प्रमुख समाचार पत्र

नोबेल पुरस्कार विजेता 2025

भौतिकी में नोबेल पुरस्कार 2025

Ill. Niklas Elmehed © Nobel Prize Outreach
John Clarke
Prize share: 1/3

Ill. Niklas Elmehed © Nobel Prize Outreach
Michel H. Devoret
Prize share: 1/3

Ill. Niklas Elmehed © Nobel Prize Outreach
John M. Martinis
Prize share: 1/3

प्रति: जॉन क्लार्क, मिशेल एच. डेवोरेट और जॉन एम. मार्टिनिस के लिए: विद्युत परिपथ में स्थूल क्वांटम यांत्रिक सुरंग और ऊर्जा क्वांटीकरण की खोज
द्वारा: रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंसेज

जानें कि उन्हें किस लिए सम्मानित किया गया है:
इस वर्ष का भौतिकी का नोबेल पुरस्कार जॉन क्लार्क, मिशेल एच. डेवोरेट और जॉन एम. मार्टिनिस को हाथ से पकड़ने लायक बड़े परिपथ में क्वांटम प्रभाव दिखाने के लिए दिया गया है। एक पतले अवरोध (जोसेफसन जंक्शन) द्वारा पृथक अतिचालक पदार्थों का उपयोग करके, उन्होंने क्वांटम सुरंग—जहाँ धारा एक फँसी हुई अवस्था से बच निकलती है—का प्रदर्शन किया और ऊर्जा स्तरों का क्वांटीकरण किया, जिसका अर्थ है कि प्रणाली निश्चित मात्रा में ऊर्जा को अवशोषित या मुक्त करती है। उनके कार्य ने सिद्ध किया कि क्वांटम यांत्रिकी केवल सूक्ष्म कणों पर ही नहीं, बल्कि स्थूल प्रणालियों पर भी लागू हो सकती है, जिससे क्वांटम कंप्यूटर, क्रिप्टोग्राफी और क्वांटम सिद्धांतों पर आधारित सेंसर जैसी उन्नत तकनीकों का मार्ग प्रशस्त हुआ।

रसायन विज्ञान में नोबेल पुरस्कार 2025

Ill. Niklas Elmehed © Nobel Prize Outreach
Susumu Kitagawa
Prize share: 1/3

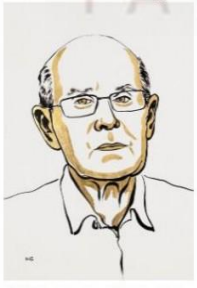
Ill. Niklas Elmehed © Nobel Prize Outreach
Richard Robson
Prize share: 1/3

Ill. Niklas Elmehed © Nobel Prize Outreach
Omar M. Yaghi
Prize share: 1/3

प्रति: सुसुमु कितागावा, रिचर्ड रॉबसन और उमर एम. याघी के लिए: धातु-कार्बनिक ढाँचों का विकास
द्वारा: रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंसेज

जानें कि उन्हें किस लिए सम्मानित किया गया है:
रसायन विज्ञान में 2025 का नोबेल पुरस्कार सुसुमु कितागावा, रिचर्ड रॉबसन और उमर याघी को धातु-कार्बनिक ढाँचे (MOF) बनाने के लिए दिया गया है - क्रिस्टल जैसी संरचनाएँ जिनमें सूक्ष्म गुहाएँ होती हैं जो गैसों को रोक सकती हैं या प्रवाहित होने दे सकती हैं। ये ढाँचे कार्बनिक अणुओं से जुड़े धातु आयनों से बने होते हैं, जो छिद्रयुक्त पदार्थ बनाते हैं जो गैसों को संग्रहित कर सकते हैं, कार्बन डाइऑक्साइड को ग्रहण कर सकते हैं, पानी को शुद्ध कर सकते हैं या रासायनिक प्रतिक्रियाओं को तेज कर सकते हैं। रॉबसन ने पहली बार 1989 में इस अवधारणा की खोज की थी, जबकि कितागावा और याघी ने बाद में MOF को स्थिर और लचीला बनाया। उनके नवाचार अब प्रमुख पर्यावरणीय और औद्योगिक अनुप्रयोगों के साथ कस्टम सामग्रियों के डिज़ाइन को सक्षम बनाते हैं।

फिजियोलॉजी या मेडिसिन में नोबेल पुरस्कार 2025

Ill. Niklas Elmehed © Nobel Prize Outreach
Mary E. Brunkow
Prize share: 1/3

Ill. Niklas Elmehed © Nobel Prize Outreach
Frederick J. Ramsdell
Prize share: 1/3

Ill. Niklas Elmehed © Nobel Prize Outreach
Shimon Sakaguchi
Prize share: 1/3

प्रति: मैरी ई. ब्रुनको, फ्रेडरिक जे. राम्सडेल और शिमोन सकागुची के लिए: परिधीय प्रतिरक्षा सहिष्णुता से संबंधित उनकी खोजों के लिए
द्वारा: कैरोलिंस्का संस्थान में नोबेल सभा

जानें कि उन्हें किस लिए सम्मानित किया गया है:
2025 का शरीरक्रिया विज्ञान या चिकित्सा का नोबेल पुरस्कार मैरी ई. ब्रुनको, फ्रेड राम्सडेल और शिमोन सकागुची को इस खोज के लिए दिया जाता है कि प्रतिरक्षा प्रणाली शरीर पर आक्रमण करने से कैसे बचती है। सकागुची ने 1995 में नियामक टी कोशिकाओं की पहचान की, जो स्वप्रतिरक्षी प्रतिक्रियाओं को रोकने के लिए "रक्षक" के रूप में कार्य करती हैं। बाद में, ब्रुनको और राम्सडेल ने पाया कि फॉक्सपी3 जीन में उत्परिवर्तन गंभीर स्वप्रतिरक्षी रोगों का कारण बनते हैं, और सकागुची ने इस जीन को नियामक टी कोशिकाओं से जोड़ा। उनकी खोजों ने बताया कि प्रतिरक्षा प्रणाली कैसे संतुलन बनाए रखती है, परिधीय प्रतिरक्षा सहिष्णुता के क्षेत्र की नींव रखी और स्वप्रतिरक्षी रोगों, कैंसर के इलाज और अंग प्रत्यारोपण में सुधार के लिए नए रास्ते खोले।

साहित्य में नोबेल पुरस्कार 2025

प्रति: लास्ज़लो क्रास्ज़नाहोरकाई
के लिए: उनके सम्मोहक और दूरदर्शी कृति के लिए, जो सर्वनाशकारी आतंक के बीच, कला की शक्ति की पुष्टि करती है
लेखक: रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंसेज

जानिए उन्हें किस बात के लिए सम्मानित किया गया है:
हंगेरियन लेखक लास्ज़लो क्रास्ज़नाहोरकाई, जिनका जन्म 1954 में हुआ था, अपने सघन, सर्वनाशकारी उपन्यासों के लिए जाने जाते हैं, जो अराजकता, आस्था और मानवीय मूर्खता की पड़ताल करते हैं। उनकी सफल कृतियाँ: सैटांटांगो (1985) और बाद की कृतियाँ: द मेलानचोली ऑफ़ रेजिस्टेंस, वॉर एंड वॉर, और बैरन वेंकहाइम की होमकमिंग, लंबे, घुमावदार गद्य के माध्यम से क्षयकारी समाजों और नैतिक पतन का चित्रण करती हैं। उनकी हालिया कृति हर्श्ट 07769 (2021) आधुनिक जर्मनी में हिंसा और सौंदर्य की पड़ताल करती है। काफ़्का और दोस्तोयेव्स्की से प्रभावित, उन्होंने सेइओबो देयर बिलो (2008) और ए माउंटेन टू द नॉर्थ... (2003) में पूर्वी दर्शन का भी सहारा लिया है, जहाँ उन्होंने कला, सौंदर्य और सृजन पर चिंतन किया है। क्राज़्नाहोरकाई की रचनाओं में बेतुकापन, आध्यात्मिकता और दूरदर्शी तीव्रता का मिश्रण है।

नोबेल शांति पुरस्कार 2025

प्रति: मारिया कोरिना मचाडो
के लिए: वेनेज़ुएला के लोगों के लिए लोकतांत्रिक अधिकारों को बढ़ावा देने में उनके अथक प्रयास और तानाशाही से लोकतंत्र में न्यायपूर्ण और शांतिपूर्ण संक्रमण के लिए उनके संघर्ष के लिए
द्वारा: नॉर्वेजियन नोबेल समिति

जानें कि उन्हें किस लिए सम्मानित किया गया है:
2025 का नोबेल शांति पुरस्कार मारिया कोरिना मचाडो को वेनेज़ुएला में लोकतंत्र और मानवाधिकारों के लिए उनके साहसी संघर्ष के लिए प्रदान किया गया है। देश के लोकतंत्र आंदोलन की नेता के रूप में, उन्होंने कभी विभाजित विपक्ष को एकजुट किया और कठोर दमन के बावजूद शांतिपूर्ण, निष्पक्ष चुनावों को बढ़ावा दिया। सुमाते की स्थापना से लेकर 2024 के विपक्षी अभियान का नेतृत्व करने तक, उनका दशकों लंबा कार्य "गोलियों की बजाय मतपत्रों" में उनके विश्वास को दर्शाता है। धमकियों और छिपकर रहते हुए, वह लाखों लोगों को प्रेरित करती रहती हैं। लोकतांत्रिक परिवर्तन के लिए मचाडो का शांतिपूर्ण संघर्ष स्वतंत्रता, साहस और आशा की भावना का प्रतीक है, जिसका सम्मान नोबेल शांति पुरस्कार करना चाहता है।

अल्फ्रेड नोबेल की स्मृति में आर्थिक विज्ञान में स्वेरिग्स रिक्सबैंक पुरस्कार 2025

प्रति: जोएल मोकिर
तकनीकी प्रगति के माध्यम से सतत विकास के लिए आवश्यक शर्तों की पहचान करने के लिए
प्रति: फिलिप अघियन और पीटर हॉविट
रचनात्मक विनाश के माध्यम से सतत विकास के सिद्धांत के लिए।
द्वारा: रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंसेज

जानें कि उन्हें किस लिए सम्मानित किया गया है:
आर्थिक विज्ञान का 2025 का नोबेल पुरस्कार जोएल मोकिर, फिलिप अघियन और पीटर हॉविट को यह समझाने के लिए दिया गया कि नवाचार दीर्घकालिक आर्थिक विकास को कैसे गति देता है। मोकिर ने दिखाया कि निरंतर प्रगति के लिए वैज्ञानिक समझ और नए विचारों के प्रति खुले समाज की आवश्यकता होती है, न कि पिछले ठहराव के युगों की। अघियन और हॉविट ने "रचनात्मक विनाश" की अवधारणा विकसित की, जहाँ नई तकनीकें पुरानी तकनीकों का स्थान लेती हैं, जिससे प्रगति को बढ़ावा मिलता है, लेकिन उद्योगों में भी व्यवधान उत्पन्न होता है। उनका कार्य इस बात पर प्रकाश डालता है कि नवाचार को अवरुद्ध होने से बचाने के लिए इन संघर्षों का रचनात्मक प्रबंधन कैसे आवश्यक है। साथ मिलकर, उन्होंने दिखाया कि विकास को बनाए रखने और आर्थिक ठहराव को रोकने के लिए निरंतर नवाचार महत्वपूर्ण है|

नियुक्तियाँ

बोलीविया ने मध्य-दक्षिणपंथी रोड्रिगो पाज़ को राष्ट्रपति चुना

बोलीवियावासियों ने मध्य-दक्षिणपंथी क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीसी) के रोड्रिगो पाज़ को अपना नया राष्ट्रपति चुना है, जिससे मूवमेंट फॉर सोशलिज्म (एमएएस) पार्टी का लगभग दो दशकों का शासन समाप्त हो गया है।

चुनावी परिणाम

दूसरे दौर के चुनाव में, पाज़ ने 54.5% वोट हासिल किए और पूर्व अंतरिम राष्ट्रपति जॉर्ज "टूटो" क्विरोगा को हराया, जिन्हें 45.4% वोट मिले थे।

राजनीतिक पृष्ठभूमि

58 वर्षीय पाज़, पूर्व वामपंथी राष्ट्रपति जैमे ज़मोरा के पुत्र हैं। उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका में अर्थशास्त्र का अध्ययन किया और बाद में नगर पार्षद, तारिजा के मेयर और 2020 से सीनेटर के रूप में कार्य किया।

नीतिगत एजेंडा

पाज़ ने "सभी के लिए पूंजीवाद" दृष्टिकोण का संकल्प लिया है, जिसमें कर कटौती, शुल्क में कमी और राष्ट्रीय सरकार के विकेंद्रीकरण पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

आर्थिक चुनौतियाँ

बोलीविया को लगभग 25% की वार्षिक मुद्रास्फीति, अमेरिकी डॉलर और ईंधन की गंभीर कमी, और बुनियादी वस्तुओं की ऊँची कीमतों और लंबी कतारों के कारण व्यापक विरोध प्रदर्शनों का सामना करना पड़ रहा है।

राजनीतिक परिदृश्य

एक समय बोलीविया की राजनीति में प्रमुख रही एमएएस पार्टी, आंतरिक मतभेदों और पूर्व राष्ट्रपति इवो मोरालेस की अनुपस्थिति के कारण, जिन्हें चुनाव लड़ने से रोक दिया गया था, दूसरे दौर के चुनाव में अपना उम्मीदवार नहीं उतार पाई।

सत्ता परिवर्तन

बोलीविया की संवैधानिक सीमाओं के अनुसार, निवर्तमान राष्ट्रपति लुइस आर्से एक कार्यकाल पूरा करने के बाद 8 नवंबर को पद छोड़ने वाले हैं।

बोलीविया

- राजधानी: सूक्रे
- मुद्रा: बोलिवियाई बोलिवियानो
- आधिकारिक भाषाएँ: स्पेनिश, पुक्विना, ट्रिनिटारियो भाषा, मूरे, आदि।

साने ताकाइची जापान की पहली महिला प्रधानमंत्री बनीं

साने ताकाइची ने जापान की पहली महिला प्रधानमंत्री बनकर इतिहास रच दिया है, जो देश के राजनीतिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। उन्हें जापानी संसद द्वारा चुना गया, उन्हें उच्च सदन में 125 वोट मिले—जो साधारण बहुमत से सिर्फ़ एक ज़्यादा है—और निचले सदन में 237 वोट मिले, जो आवश्यक 233 वोटों से ज़्यादा थे।

राजनीतिक पृष्ठभूमि

- राजनीति में प्रवेश: ताकाइची ने 1993 में अपनी राजनीतिक यात्रा शुरू की, एक स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में जापान के निचले सदन (प्रतिनिधि सभा) में एक सीट हासिल की।
- पार्टी संबद्धता: 1996 में लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी (LDP) में शामिल हुईं, जो जापान की लंबे समय से सत्तारूढ़ रूढ़िवादी राजनीतिक पार्टी है।
- कैबिनेट भूमिकाएँ: पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे के अधीन कार्य किया, जहाँ उन्होंने कई प्रमुख विभागों का कार्यभार संभाला, जिनमें शामिल हैं:
- ओकिनावा और उत्तरी क्षेत्र मामलों के राज्य मंत्री
- आर्थिक सुरक्षा मंत्री (2022–2024)

नई सरकार के लिए वर्तमान चुनौतियाँ

ताकाइची के प्रशासन को कई आर्थिक और भू-राजनीतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिनमें शामिल हैं:

- मंद आर्थिक विकास और कम घरेलू माँग।
- बढ़ती मुद्रास्फीति और वस्तुओं की कीमतें।
- जापानी येन का अवमूल्यन, आयात और घरेलू आय को प्रभावित कर रहा है।
- हिंद-प्रशांत क्षेत्र में बढ़ते क्षेत्रीय तनाव के बीच सुरक्षा संबंधी चिंताएँ।

जापान:

- राजधानी: टोक्यो
- मुद्रा: जापानी येन (JPY)

हुंडई मोटर इंडिया ने तरुण गर्ग को नया एमडी और सीईओ नियुक्त किया

हुंडई मोटर इंडिया लिमिटेड (HMIL) ने तरुण गर्ग को अपना प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी (MD और CEO) नियुक्त किया है। यह नियुक्ति 1 जनवरी, 2026 से प्रभावी होगी और शेयरधारकों की मंज़ूरी पर निर्भर करेगी। तरुण गर्ग HMIL के 29 साल के इतिहास में इसका नेतृत्व करने वाले पहले भारतीय नागरिक बन गए हैं। वर्तमान में, श्री गर्ग HMIL के पूर्णकालिक निदेशक और मुख्य परिचालन अधिकारी (COO) के रूप में कार्यरत हैं। निवर्तमान MD, उन्सू किम, दक्षिण कोरिया स्थित हुंडई मोटर कंपनी (HMC) में एक रणनीतिक भूमिका में वापसी करेंगे।

हुंडई मोटर इंडिया:

- स्थापना: 6 मई 1996
- मुख्यालय: गुड़गांव, हरियाणा, भारत (कॉर्पोरेट मुख्यालय)
- कांचीपुरम, तमिलनाडु, भारत (पंजीकृत कार्यालय)

RBI ने सोनाली सेन गुप्ता और संजय कुमार हंसदा को कार्यकारी निदेशक नियुक्त किया

भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) ने सोनाली सेन गुप्ता को कार्यकारी निदेशक (ED) नियुक्त किया है, जो 9 अक्टूबर, 2025 से प्रभावी होंगे। इससे पहले, संजय कुमार हंसदा को कार्यकारी निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया था, जो 3 मार्च, 2025 से प्रभावी होंगे। वे IMF के वरिष्ठ सलाहकार के रूप में अपनी प्रतिनियुक्ति पूरी करने के बाद 6 अक्टूबर, 2025 को बैंक में शामिल हुए थे।

सोनाली सेन गुप्ता - कार्यकारी निदेशक

- पूर्व भूमिका: क्षेत्रीय निदेशक, कर्नाटक, RBI बैंगलोर क्षेत्रीय कार्यालय।
- अनुभव: RBI में 30 से अधिक वर्षों का अनुभव, वित्तीय समावेशन, बैंकिंग विनियमन, पर्यवेक्षण और मानव संसाधन प्रबंधन में विशेषज्ञता।

संजय कुमार हंसदा - कार्यकारी निदेशक

- पूर्व भूमिका: RBI के आर्थिक एवं नीति अनुसंधान विभाग (DEPR) में सलाहकार।
- अंतर्राष्ट्रीय अनुभव: IMF में कार्यकारी निदेशक (भारत) के वरिष्ठ सलाहकार के रूप में कार्य किया; बैंक ऑफ इंग्लैंड में वित्तीय स्थिरता विश्लेषक के रूप में कार्य किया।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने अभिनेत्री दीपिका पादुकोण को पहली मानसिक स्वास्थ्य राजदूत नियुक्त किया

बॉलीवुड अभिनेत्री दीपिका पादुकोण को केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा भारत की पहली मानसिक स्वास्थ्य राजदूत नियुक्त किया गया है। यह मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने और कलंक को कम करने के देश के प्रयासों में एक महत्वपूर्ण कदम है।

समर्थन और पहल

पादुकोण मानसिक स्वास्थ्य की मुखर समर्थक रही हैं और दूसरों को प्रेरित करने के लिए अवसाद से अपने व्यक्तिगत संघर्षों को साझा करती रही हैं। 2015 में, उन्होंने मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों से प्रभावित लोगों को सहायता और संसाधन प्रदान करने के लिए द लिव लव लाफ फाउंडेशन की स्थापना की। अपने फाउंडेशन के माध्यम से, उन्होंने मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और मानसिक स्वास्थ्य के बारे में खुली बातचीत को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से विभिन्न अभियान और पहल शुरू की हैं।

फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने सेबेस्टियन लेकोर्नू को फिर से प्रधानमंत्री नियुक्त किया

फ्रांसीसी राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने अपने इस्तीफ़े के कुछ ही दिनों बाद सेबेस्टियन लेकोर्नू को फिर से प्रधानमंत्री नियुक्त किया है। मैक्रों ने उनसे नई सरकार बनाने और फ्रांस में राजनीतिक गतिरोध को समाप्त करने के उद्देश्य से एक राष्ट्रीय बजट पेश करने को कहा है।

इस्तीफ़े की पृष्ठभूमि

लेकोर्नू ने इस हफ़्ते की शुरुआत में अचानक इस्तीफ़ा दिया, जो उनके नवगठित मंत्रिमंडल में आंतरिक मतभेदों के बाद आया। उनके प्रस्तावित मंत्रिमंडल को एक प्रमुख गठबंधन सहयोगी ने तुरंत अस्वीकार कर दिया, जिससे सरकार का संकट और गहरा गया।

नए जनादेश की शर्तें

लेकोर्नू ने "कर्तव्य" के तहत पुनर्नियुक्ति स्वीकार की, और वर्ष के अंत से पहले बजट पेश करने और फ़्रांसीसी नागरिकों के सामने आने वाली रोज़मर्रा की चुनौतियों का समाधान करने की प्रतिबद्धता जताई। उन्होंने मंत्रियों को 2027 के राष्ट्रपति चुनाव में भाग न लेने का निर्देश दिया है, और नए मंत्रिमंडल में नवीनीकरण और विविध विशेषज्ञता पर ज़ोर दिया है।

फ्रांस

- राजधानी: पेरिस
- राष्ट्रपति: इमैनुएल मैक्रों
- प्रधानमंत्री: सेबेस्टियन लेकोर्नू
- आधिकारिक भाषा: फ्रेंच

शिरीष चंद्र मुर्मू ने तीन साल के लिए RBI के डिप्टी गवर्नर का पदभार संभाला

शिरीष चंद्र मुर्मू ने कार्यकारी निदेशक के रूप में अपनी पिछली भूमिका से पदोन्नति के बाद, तीन साल के कार्यकाल के लिए आधिकारिक तौर पर भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) के डिप्टी गवर्नर का पदभार ग्रहण किया।

उत्तराधिकार और पिछली भूमिका

मुर्मू, एम. राजेश्वर राव का स्थान लेंगे, जिनका डिप्टी गवर्नर के रूप में कार्यकाल समाप्त हो गया था। इस नियुक्ति से पहले, मुर्मू RBI में कार्यकारी निदेशक के रूप में कार्यरत थे।

उनके अधीन विभाग

डिप्टी गवर्नर के रूप में, मुर्मू कई प्रमुख विभागों का कार्यभार संभालेंगे:

- विनियमन
- संचार
- सरकार और बैंक खाते
- प्रवर्तन

RBI के अन्य उप निदेशक:

- डॉ. पूनम गुप्ता
- स्वामीनाथन जानकीरमन
- टी. रबी शंकर

चर्च ऑफ इंग्लैंड को पहली महिला प्रमुख मिलीं, सारा मुल्लाली कैंटरबरी की आर्कबिशप नियुक्त

सारा मुल्लाली को आधिकारिक तौर पर कैंटरबरी की आर्कबिशप के रूप में सेवा करने वाली पहली महिला के रूप में नियुक्त किया गया है, जो चर्च ऑफ इंग्लैंड के नेतृत्व में एक ऐतिहासिक बदलाव का प्रतीक है।

शीर्ष तक का लंबा सफर

मुल्लाली का चयन चर्च पदानुक्रम में एक लंबी खोज और अनुमोदन प्रक्रिया के बाद किया गया। उनकी नियुक्ति उस चर्च में सदियों से चली आ रही परंपरा को तोड़ती है जिसमें हमेशा से पुरुष आर्कबिशप रहे हैं।

उनकी पृष्ठभूमि और अनुभव

उन्होंने पहले लंदन के बिशप के रूप में कार्य किया था, जो चर्च ऑफ इंग्लैंड के सबसे वरिष्ठ पदों में से एक है। मुल्लाली की धार्मिक मंत्रालय और स्वास्थ्य सेवा, दोनों में पृष्ठभूमि रही है, जिससे वे इस भूमिका में पादरी और प्रशासनिक कौशल का मिश्रण लाती हैं।

राजेश अग्रवाल ने वाणिज्य सचिव का पदभार ग्रहण किया

राजेश अग्रवाल, आईएएस (1994 बैच), ने वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय में वाणिज्य सचिव का पदभार ग्रहण किया।

अनुभव एवं योगदान:

कौशल, मानव संसाधन विकास, प्रशिक्षुता, विद्युत, उर्वरक, कृषि और एमएसएमई जैसे क्षेत्रों में शासन, नीति निर्माण और कार्यान्वयन में तीन दशकों से अधिक का अनुभव। विश्व कौशल शासी परिषद में तीन वर्षों तक भारत का प्रतिनिधित्व किया। मणिपुर, झारखंड और बिहार सहित राज्यों में क्षेत्रीय सुधारों का नेतृत्व किया।

वाणिज्य सचिव:

- वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय में वरिष्ठतम सिविल सेवक।

- व्यापार नीति, अंतर्राष्ट्रीय वार्ता, निर्यात संवर्धन और औद्योगिक सुधारों के लिए उत्तरदायी।
- भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) संवर्ग से नियुक्त।

कांग्रेस नेता शशि थरूर ने लोकसभा की विदेश मामलों की समिति के अध्यक्ष पद पर अपना कब्ज़ा बरकरार रखा

एक महत्वपूर्ण संसदीय घटनाक्रम में, कांग्रेस नेता शशि थरूर ने लोकसभा की विदेश मामलों की समिति के अध्यक्ष पद पर अपना कब्ज़ा बरकरार रखा है। लोकसभा ने कई संसदीय स्थायी समितियों का पुनर्गठन भी किया और लोक न्यास (संशोधन) प्रावधान विधेयक और दिवाला एवं शोधन अक्षमता संहिता (संशोधन) विधेयक के लिए दो प्रवर समितियों का गठन किया।

अन्य पुनर्नियुक्तियाँ:

- कनिमोझी करुणानिधि (द्रमुक) - उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण समिति की अध्यक्ष।

स्थायी समितियों में प्रमुख कांग्रेस सदस्य:

- राहुल गांधी - रक्षा समिति
- प्रियंका गांधी वाड्रा - गृह समिति
- पी. चिदंबरम - वित्त समिति
- जयराम रमेश - विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन समिति

अन्य उल्लेखनीय समिति अध्यक्ष:

- पी.सी. मोहन - सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता
- अनुराग ठाकुर - कोयला, खनन एवं इस्पात
- सप्तगिरि शंकर - ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज
- कीर्ति आज़ाद झा - रसायन एवं उर्वरक
- राजीव प्रताप रूडी - जल संसाधन
- मगुंटा श्रीनिवासुलु रेड्डी - आवास एवं शहरी मामले
- सी.एम. रमेश - रेलवे
- सुनील तटकरे - पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस
- बसवराज बोम्मई - श्रम, वस्त्र एवं कौशल विकास
- भारतीभरी महताब - वित्त
- श्रीरंग अप्पा चंदू बार्ने - ऊर्जा
- राधा मोहन सिंह - रक्षा
- निशिकांत दुबे - संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी
- चरणजीत सिंह चन्नी - कृषि, पशुपालन एवं खाद्य प्रसंस्करण

संसदीय स्थायी समितियाँ:

- उद्देश्य: विधेयकों, बजटों और सरकारी नीतियों की विस्तार से जाँच करना; विशेषज्ञ सुझाव प्रदान करना।

दक्षिण कोरिया ने पूर्व विदेश मंत्री कांग को अमेरिका के लिए पहली महिला राजदूत नियुक्त किया

पूर्व विदेश मंत्री कांग क्यूंग-व्हा को आधिकारिक तौर पर वाशिंगटन में दक्षिण कोरिया की पहली महिला राजदूत नियुक्त किया गया है।

पृष्ठभूमि और अनुभव

कांग ने 2017-2021 तक दक्षिण कोरिया की विदेश मंत्री के रूप में काम किया और संयुक्त राष्ट्र में वरिष्ठ पदों पर भी रहीं, जिसमें मानवाधिकारों के लिए डिप्टी हाई कमिश्नर का पद भी शामिल है। उन्होंने मैसाचुसेट्स एमहर्स्ट विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की डिग्री प्राप्त की है।

भूमिका और उम्मीदें

वह अमेरिका के साथ राजनयिक समन्वय, आगामी शिखर सम्मेलनों, टैरिफ चर्चाओं और द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने जैसे मामलों को देखेंगे।

दक्षिण कोरिया

- राजधानी: सियोल
- मुद्रा: दक्षिण कोरियाई वॉन
- राष्ट्रपति: ली जे म्यूंग

प्रवीर रंजन ने CISF के DG का पदभार संभाला

प्रवीर रंजन ने सेंट्रल इंडस्ट्रियल सिक्योरिटी फोर्स (CISF) के डायरेक्टर जनरल (DG) का पदभार संभाल लिया है, जबकि प्रवीण कुमार को इंडो-तिब्बतन बॉर्डर पुलिस (ITBP) का नया DG नियुक्त किया गया है।

पृष्ठभूमि और नियुक्ति

उनकी नियुक्ति को कैबिनेट की नियुक्ति समिति (ACC) ने मंजूरी दी। वे 30 सितंबर 2025 को अपने पूर्ववर्तियों के रिटायर होने के बाद अपना पदभार संभालेंगे।

प्रवीर रंजन के बारे में

वे AGMUT कैडर से हैं। इससे पहले CISF में स्पेशल DG के पद पर रहे, जहां उन्होंने एयरपोर्ट सुरक्षा जैसे संवेदनशील क्षेत्रों की देखरेख की। 32 साल के अपने पुलिसिंग करियर में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाई हैं, जिसमें दिल्ली पुलिस, CBI और चंडीगढ़ में DGP के पद शामिल हैं।

प्रवीण कुमार के बारे में

वे पश्चिम बंगाल कैडर से हैं।

वर्तमान में इंटेलिजेंस ब्यूरो (IB) में स्पेशल डायरेक्टर के पद पर कार्यरत हैं। वे ITBP के DG का पद संभालेंगे, जो भारत के हिमालयी सीमा पर सीमा प्रबंधन के लिए महत्वपूर्ण है।

मिथुन मन्हास बीसीसीआई के 37वें अध्यक्ष बने

बीसीसीआई की वार्षिक आम बैठक (एजीएम) में, दिल्ली के पूर्व कप्तान मिथुन मन्हास को बीसीसीआई का 37वां अध्यक्ष चुना गया।

- पूर्ववर्ती: वे रोजर बिन्नी का स्थान लेंगे, जिन्होंने 70 वर्ष की आयु प्राप्त करने के बाद पद छोड़ दिया था। चयन: नई दिल्ली में बोर्ड के प्रमुख हितधारकों की एक अनौपचारिक बैठक के बाद मन्हास सर्वसम्मति से चुने गए।
- पृष्ठभूमि: मिथुन मन्हास एक पूर्व प्रथम श्रेणी ऑलराउंडर हैं, जिन्होंने घरेलू क्रिकेट में दिल्ली और जम्मू-कश्मीर का प्रतिनिधित्व किया है।

बीसीसीआई (भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड):

- स्थापना: 1928।
- मुख्यालय: मुंबई, महाराष्ट्र।
- भारत में क्रिकेट का संचालन करता है, जिसमें घरेलू टूर्नामेंट, आईपीएल और अंतर्राष्ट्रीय मैच शामिल हैं।
- कानूनी स्थिति: तमिलनाडु सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1975 के तहत पंजीकृत।
- वर्तमान सचिव: जय शाह।

सरकार ने यूनियन बैंक और सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के लिए नए प्रमुख नियुक्त किए

आशीष पांडेय को तीन साल के लिए यूनियन बैंक ऑफ इंडिया का मैनेजिंग डायरेक्टर और सीईओ नियुक्त किया गया है। एम. वी. राव के रिटायर होने के बाद कल्याण कुमार सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के एमडी और सीईओ का पद संभालेंगे।

अनुमोदन और सिफारिश प्रक्रिया

कैबिनेट की नियुक्ति समिति ने दोनों नियुक्तियों को शुरुआती तीन साल के कार्यकाल के लिए मंजूरी दी। फाइनेंशियल सर्विसेज इंस्टीट्यूशंस ब्यूरो (FSIB) ने 30 मई को पांडेय और कुमार को इन पदों के लिए सिफारिश की थी।

नियुक्त व्यक्तियों का बैकग्राउंड

आशीष पांडेय इससे पहले बैंक ऑफ महाराष्ट्र में एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर थे। कल्याण कुमार अभी पंजाब नेशनल बैंक (PNB) में एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर हैं।

यूनियन बैंक

- पहले का नाम: द यूनियन बैंक ऑफ इंडिया लिमिटेड (1919–1969)
- स्थापना: 11 नवंबर 1919
- संस्थापक: सरदार शशिशेखर सिंह भूमिहार सेठ सीताराम पोद्दार
- मुख्यालय: मुंबई, महाराष्ट्र, भारत
- नॉन-एग्जीक्यूटिव चेयरमैन: श्रीनिवासन वरदराजन

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया

- स्थापना: 21 दिसंबर 1911
- मुख्यालय: मुंबई, महाराष्ट्र, भारत
- नॉन-एग्जीक्यूटिव चेयरमैन: तपन रॉय

सुधांशु वत्स को ASCI का नया चेयरमैन नियुक्त किया गया

पिडिलाइट इंडस्ट्रीज के मैनेजिंग डायरेक्टर सुधांशु वत्स को एडवरटाइज़िंग स्टैंडर्ड्स काउंसिल ऑफ़ इंडिया (ASCI) का नया चेयरमैन नियुक्त किया गया है।

लीडरशिप टीम में बदलाव

वत्स के साथ, नई लीडरशिप टीम में ये लोग शामिल हैं:

- वाइस-चेयरमैन: एस. सुब्रमन्येस्वर
- ऑनरी ट्रेजरर: पारितोष जोशी

ASCI की 40वीं वर्षगांठ की पहलें

अपनी 40वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में, ASCI ने कई पहलें शुरू की हैं:

- एडवाइज प्रोग्राम: बच्चों के लिए एडवरटाइज़िंग और मीडिया लिटरेसी प्रोग्राम, जिसका मकसद एक मिलियन से ज़्यादा

स्कूल स्टूडेंट्स को एडवरटाइज़िंग मैसेज की सही-गलत परखने के लिए ट्रेनिंग देना है।

- जेन अल्फा पर रिसर्च: टेक्नोलॉजी के साथ बड़ी हो रही नई पीढ़ी के लिए एडवरटाइज़िंग गाइडलाइन बनाने के लिए एथनोग्राफिक रिसर्च।
- एक्सपेंशन प्लान: बेंगलुरु और दिल्ली में नए ऑफिस खोलना।
- लीगल रिसोर्स हब: लॉ फर्म खैतान एंड कंपनी के साथ पार्टनरशिप में एडवरटाइज़िंग कोड और कानूनों पर एक विस्तृत रिसोर्स लॉन्च करना।
- पॉडकास्ट सीरीज़: द लॉजिकल इंडियन और मार्केटिंग माइंड्स के साथ मिलकर एक पॉडकास्ट सीरीज़।
- मेंबर्स के लिए विजुअल एसेट: ASCI मेंबर्स के लिए एक नया विजुअल एसेट, जो रिस्पॉन्सिबल एडवरटाइज़िंग के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

संमार्ग के विवेक गुप्ता इंडियन न्यूज़पेपर सोसाइटी के अध्यक्ष चुने गए

इंडियन न्यूज़पेपर सोसाइटी (INS) ने दैनिक जागरण ग्रुप के मैनेजिंग डायरेक्टर विवेक गुप्ता को अपना नया अध्यक्ष चुना है। INS भारत भर के अखबार पब्लिशर्स के हितों का प्रतिनिधित्व करने वाली शीर्ष संस्था है।

विवेक गुप्ता के बारे में

विवेक गुप्ता एक जाने-माने मीडिया प्रोफेशनल हैं और भारत की सबसे बड़ी हिंदी अखबार चेन में से एक, दैनिक जागरण ग्रुप के प्रमुख हैं। वे अखबार उद्योग को मजबूत करने और जिम्मेदार पत्रकारिता को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय रूप से काम करते रहे हैं।

इंडियन न्यूज़पेपर सोसाइटी (INS) के बारे में

1939 में स्थापित INS, अखबार पब्लिशर्स को सहयोग करने, उद्योग की चुनौतियों पर चर्चा करने और सर्वोत्तम प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए एक मंच के रूप में काम करता है। यह नीतिगत मामलों में प्रिंट मीडिया क्षेत्र के हितों का प्रतिनिधित्व करने के लिए सरकारी निकायों के साथ भी काम करता है।

एलटीआईमाइंडट्री के पूर्णकालिक निदेशक और अध्यक्ष नचिकेत देशपांडे ने इस्तीफा दिया

एक प्रमुख आईटी सेवा कंपनी, एलटीआईमाइंडट्री ने घोषणा की है कि उसके पूर्णकालिक निदेशक और अध्यक्ष नचिकेत देशपांडे, संगठन के बाहर नए अवसरों की तलाश में 31 अक्टूबर, 2025 से अपने पद से इस्तीफा दे देंगे।

एलटीआईमाइंडट्री

- स्थापना: 23 दिसंबर 1996
- मुख्यालय: मुंबई, भारत
- गैर-कार्यकारी अध्यक्ष: एस. एन. सुब्रह्मण्यन
- सीईओ और प्रबंध निदेशक: वेणु लंबू

कैस्ट्रॉल इंडिया के एमडी ने इस्तीफा दिया, अंतरिम सीईओ नियुक्त

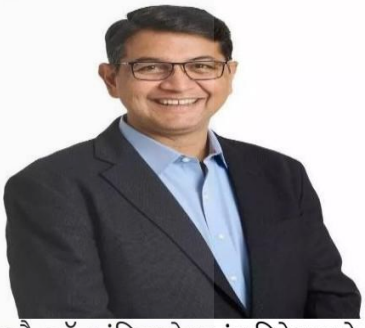

लुब्रिकेंट निर्माता कैस्ट्रॉल इंडिया के प्रबंध निदेशक केदार लेले ने कंपनी से इस्तीफा दे दिया है।

- कारण: कंपनी के बाहर अन्य पेशेवर अवसरों की तलाश में इस्तीफा दिया।
- प्रभावी तिथि: 31 दिसंबर, 2025 (कार्य समय समाप्त)।
- घोषणा का प्रकार: बीएसई और एनएसई में नियामक फाइलिंग के माध्यम से किया गया।

अंतरिम नियुक्ति:

- नए अंतरिम सीईओ: सौगत बसुरे।
- प्रभावी तिथि: 1 जनवरी, 2026।
- कार्यकाल: नए प्रबंध निदेशक की नियुक्ति तक अंतरिम सीईओ के रूप में कार्य करेंगे।

सौगत बसुरे की वर्तमान भूमिका:

- वर्तमान में कैस्ट्रॉल इंडिया में पूर्णकालिक निदेशक और बी2सी बिक्री प्रमुख के रूप में कार्यरत हैं।
- अंतरिम सीईओ के रूप में अपनी जिम्मेदारियों के साथ-साथ इस पद पर भी बने रहेंगे।

राजतन्त्र एवं शासन

सरकार ने खाद्य तेल नियमों को कड़ा करने के लिए VOPPA आदेश में संशोधन किया

खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग ने वनस्पति तेल उत्पाद, उत्पादन एवं उपलब्धता (विनियमन) आदेश, 2025 (VOPPA आदेश, 2025) अधिसूचित कर दिया है, जिसके तहत खाद्य तेल आपूर्ति श्रृंखला की सभी संस्थाओं को राष्ट्रीय एकल खिड़की प्रणाली (NSWS) पर पंजीकरण कराना होगा और निर्दिष्ट पोर्टल के माध्यम से उत्पादन एवं स्टॉक पर मासिक डेटा प्रस्तुत करना होगा।

इस कदम का उद्देश्य

इस कदम का उद्देश्य नियामक निगरानी को मजबूत करना और भारत के खाद्य तेल पारिस्थितिकी तंत्र के लिए एक पारदर्शी ढांचा तैयार करना है। खाद्य सुरक्षा नीति और आपूर्ति श्रृंखला के लचीलेपन के लिए वास्तविक समय डेटा संग्रह को महत्वपूर्ण माना जाता है।

उद्योग की प्रतिक्रिया और चेतावनियाँ

मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार, "बड़ी संख्या में" इकाइयाँ पहले ही पंजीकरण करा चुकी हैं और रिपोर्टिंग शुरू कर चुकी हैं। साथ ही, कंपनियों को चेतावनी दी गई है कि अनुपालन न करने पर VOPPA आदेश और सांख्यिकी संग्रहण अधिनियम, 2008 के तहत दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी।

प्रवर्तन एवं निरीक्षण

नई व्यवस्था को लागू करने के लिए, विभाग देशव्यापी निरीक्षण अभियान और अनुपालन न करने वाली इकाइयों का जमीनी स्तर पर सत्यापन करने की योजना बना रहा है। सटीक आँकड़े सुनिश्चित करने और आपूर्ति श्रृंखला के विखंडन को रोकने पर ज़ोर दिया जा रहा है।

उद्योग को क्या करना चाहिए

- उत्पादन, स्टॉक और उपलब्धता को कवर करते हुए मासिक रिटर्न जमा करें।
- दंड से बचने और खाद्य सुरक्षा प्रयासों को मज़बूत करने के लिए पारदर्शिता और अनुपालन सुनिश्चित करें।

इसकी आवश्यकता क्यों है?

- सरकार ने पारदर्शिता, सटीक आँकड़ों की रिपोर्टिंग और निष्पक्ष बाज़ार प्रथाओं को सुनिश्चित करने के लिए खाद्य तेल उद्योग के लिए नियमों को कड़ा कर दिया है।
- यह कदम इसलिए ज़रूरी था क्योंकि अनियमित रिपोर्टिंग, स्टॉक में हेराफेरी और रीयल-टाइम आँकड़ों की कमी मूल्य स्थिरता और उपभोक्ता संरक्षण को प्रभावित कर रही थी।
- कड़े अनुपालन और देशव्यापी निरीक्षणों को लागू करके, सरकार का लक्ष्य उत्पादन की निगरानी करना, जमाखोरी को रोकना और खाद्य सुरक्षा को मज़बूत करना है।

ओडिशा मंत्रिमंडल ने छोटे नियामक अपराधों को अपराधमुक्त करने के लिए जन विश्वास अध्यादेश 2025 को मंज़ूरी दी

ओडिशा मंत्रिमंडल ने व्यापार सुगमता बढ़ाने के लिए तीन अध्यादेशों को मंज़ूरी दी

1. ओडिशा जन विश्वास अध्यादेश, 2025

- उद्देश्य: आपराधिक दंडों के स्थान पर दीवानी दंड लागू करके छोटे अपराधों को अपराधमुक्त करना।
- कार्यक्षेत्र: नगरपालिका प्रशासन, सहकारी समितियाँ, श्रम कल्याण, उत्पाद शुल्क, अग्निशमन सेवाएँ और शहरी नियोजन सहित नौ विभागों के 16 राज्य विधानों पर लागू।
- मुख्य विशेषताएँ:
- प्रक्रियात्मक चूकों के लिए श्रेणीबद्ध दीवानी दंड लागू करता है।
- गैर-गंभीर उल्लंघनों के लिए कारावास की सज़ा को समाप्त करता है।
- नामित अधिकारियों को पूछताछ और अपीलों को संभालने का अधिकार देता है, जिससे मुकदमेबाजी की लागत और समाधान का समय कम होता है।
- प्रभाव: अनावश्यक अनुपालन बोझ को कम करने और विश्वास-आधारित शासन मॉडल को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखता है।

2. ओडिशा दुकानें और वाणिज्यिक प्रतिष्ठान (संशोधन) अध्यादेश, 2025

- उद्देश्य: छोटे व्यवसायों के लिए श्रम कानूनों के अनुपालन को सरल बनाना।
- **प्रमुख प्रावधान:**
- दैनिक कार्य घंटों को नौ से बढ़ाकर दस करना।
- महिलाओं को सभी प्रकार के कारखानों में रात्रि पाली में काम करने की अनुमति देना।
- प्रभाव: व्यवसायों के लिए परिचालन लचीलापन बढ़ाता है और कार्यबल में लैंगिक समावेशिता को बढ़ावा देता है।

3. ओडिशा कारखाना (संशोधन) अध्यादेश, 2025

- उद्देश्य: उद्योगों के लिए श्रम कानूनों के अनुपालन को आसान बनाना।

प्रमुख प्रावधान:

- महिलाओं को सभी प्रकार के कारखानों में रात्रि पाली में काम करने की अनुमति देना।
- प्रभाव: औद्योगिक संचालन का आधुनिकीकरण करना और कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी का समर्थन करना।

ओडिशा

- राजधानी: भुवनेश्वर
- मुख्यमंत्री: मोहन चरण माझी
- ज़िले: 30 (3 संभाग)

कर्नाटक मंत्रिमंडल ने कामकाजी महिलाओं के लिए प्रति माह एक मासिक धर्म अवकाश को मंज़ूरी दी

कर्नाटक मंत्रिमंडल ने राज्य की सभी कामकाजी महिलाओं को प्रति माह एक दिन का मासिक धर्म अवकाश देने की नीति को मंज़ूरी दे दी है। यह निर्णय समिति की वार्षिक छह दिनों की सिफ़ारिश के बजाय बारह दिनों (प्रति माह एक) का विकल्प चुनता है ताकि महिलाओं के स्वास्थ्य और कार्यस्थल में उनकी भागीदारी को बेहतर ढंग से बढ़ावा दिया जा सके।

नीति का औचित्य

इस नीति का उद्देश्य मासिक धर्म के दौरान महिलाओं के सामने आने वाली शारीरिक चुनौतियों को स्वीकार करना और उनका समाधान करना है, जिससे एक अधिक समावेशी और सहायक कार्य वातावरण को बढ़ावा मिले। समर्पित अवकाश प्रदान करके, सरकार महिला कर्मचारियों के बीच अनुपस्थिति को कम करने और समग्र उत्पादकता बढ़ाने का प्रयास करती है।

कार्यान्वयन विवरण

कर्नाटक के सरकारी और निजी क्षेत्रों में कार्यरत सभी महिलाओं को मासिक धर्म अवकाश उपलब्ध होगा। नियोक्ताओं को प्रोत्साहित किया जाता है कि वे कर्मचारियों को दंडित किए बिना इस अवकाश को शामिल करें, ताकि नई नीति का अनुपालन सुनिश्चित हो सके।

राज्यपाल ने अल्पसंख्यक शिक्षा विधेयक को मंज़ूरी दी

उत्तराखंड के राज्यपाल ने उत्तराखंड अल्पसंख्यक शिक्षा विधेयक को मंज़ूरी दे दी है, जो राज्य की शिक्षा व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण सुधार है। यह विधेयक मदरसा बोर्ड को समाप्त करने का मार्ग प्रशस्त करता है और अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थानों को राज्य की मुख्यधारा में शामिल करने का लक्ष्य रखता है।

राज्य शिक्षा व्यवस्था के साथ एकीकरण

नए प्रावधानों के तहत, उत्तराखंड में संचालित सभी मदरसों को नव स्थापित उत्तराखंड अल्पसंख्यक शिक्षा प्राधिकरण से मान्यता प्राप्त करनी होगी और उत्तराखंड विद्यालयी शिक्षा बोर्ड (UBSE) से संबद्ध होना होगा। इस कदम के साथ, उत्तराखंड भारत का पहला राज्य बन गया है जिसने अपने मदरसा बोर्ड को भंग कर अल्पसंख्यक स्कूलों को एक समान शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत लाया है।

जुलाई 2026 से कार्यान्वयन

यह सुधार जुलाई 2026 से शुरू होने वाले शैक्षणिक सत्र से प्रभावी होगा। उसके बाद, राज्य के सभी अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थान राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF) को अपनाएँगे और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 को लागू करेंगे, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि छात्रों को आधुनिक, समावेशी और मानकीकृत शिक्षा मिले।

इस कदम का महत्व

यह निर्णय शैक्षिक समावेशिता, आधुनिकीकरण और पारदर्शिता के प्रति उत्तराखंड की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। मदरसों को राज्य शिक्षा बोर्ड के साथ जोड़कर, सरकार का उद्देश्य सभी पृष्ठभूमि के छात्रों को एक समान शैक्षणिक ढाँचे के तहत गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल विकास और भविष्य में रोज़गार के अवसर प्रदान करना है।

उत्तराखंड:

- राजधानियाँ: देहरादून (शीतकालीन), भराड़ीसैंण (ग्रीष्मकालीन)
- मुख्यमंत्री: पुष्कर सिंह धामी
- राज्यपाल: गुरमीत सिंह
- स्थापना: 9 नवंबर 2000

महत्व: उत्तराखंड अपने मदरसा बोर्ड और मुख्यधारा के अल्पसंख्यक संस्थानों को भंग करने वाला पहला भारतीय राज्य है।

लेह में विरोध प्रदर्शन के बीच केंद्र ने सोनम वांगचुक के NGO का FCRA लाइसेंस रद्द किया

भारत सरकार ने जलवायु कार्यकर्ता सोनम वांगचुक द्वारा स्थापित स्टूडेंट्स एजुकेशनल एंड कल्चरल मूवमेंट ऑफ लद्दाख (SECMOL) नामक NGO का फॉरेन कंट्रीब्यूशन (रेगुलेशन) एक्ट (FCRA) लाइसेंस रद्द कर दिया है। गृह मंत्रालय ने SECMOL के वित्तीय खातों में गड़बड़ी का हवाला दिया, जिसमें स्वीडन से फंड ट्रांसफर भी शामिल था, जिसे 'राष्ट्रीय हित' के खिलाफ माना गया।

SECMOL पर आरोप

मंत्रालय ने कई अनियमितताओं का हवाला दिया:

- माइग्रेशन, जलवायु परिवर्तन, खाद्य सुरक्षा और संप्रभुता पर कार्यशालाओं के लिए स्वीडन से लगभग ₹493,205 का विदेशी योगदान। मंत्रालय ने कहा कि राष्ट्रीय संप्रभुता के अध्ययन के लिए फंड स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि यह राष्ट्रीय हितों के खिलाफ है।
- 2021-22 के दौरान वांगचुक द्वारा SECMOL के FCRA खाते में ₹350,000 जमा किए गए, जो मंत्रालय के अनुसार FCRA के सेक्शन 17 का उल्लंघन था। SECMOL ने बताया कि यह राशि 2015 में FCRA फंड से खरीदी गई पुरानी बस की बिक्री से प्राप्त हुई थी, जिसे दिशानिर्देशों के अनुसार FCRA खाते में वापस किया जाना चाहिए था।
- SECMOL द्वारा वांगचुक से प्राप्त विदेशी योगदान के रूप में ₹335,000 की राशि बताई गई, जो FCRA खाते में नहीं दिखाई दी, जो अधिनियम के सेक्शन 18 का उल्लंघन है।
- SECMOL ने ₹54,600 की स्थानीय राशि को FCRA खाते में ट्रांसफर करने को गलती बताया। मंत्रालय ने कहा कि FCRA खाते में इन फंडों का ट्रांसफर अधिनियम के सेक्शन 17 का उल्लंघन है।

वांगचुक का जवाब

सोनम वांगचुक ने कहा कि वह SECMOL को दान देते थे, इसके अलावा वहां पढ़ाते भी थे। उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें FCRA लाइसेंस रद्द होने की जानकारी नहीं थी।

चल रही जांच

इसके अलावा, वांगचुक के हिमालयन इंस्टीट्यूट ऑफ अल्टरनेटिव्स लद्दाख (HIAL) की FCRA नियमों के कथित उल्लंघन के लिए केंद्रीय जांच ब्यूरो (CBI) द्वारा जांच की जा रही है। यह घटना लेह में हाल के विरोध प्रदर्शनों के बीच हुई, जहां लद्दाख को राज्य का दर्जा देने की मांग कर रहे प्रदर्शनकारियों और सुरक्षा बलों के बीच झड़प में चार लोगों की मौत हो गई। अधिकारियों ने इस अशांति को वांगचुक की आंदोलन में भागीदारी से जोड़ा है।

क्षेत्र में अशांति क्यों?

लद्दाख को राज्य का दर्जा देने की मांग मुख्य रूप से राजनीतिक प्रतिनिधित्व, स्थानीय प्रशासन और सांस्कृतिक पहचान से जुड़े मुद्दों से जुड़ी है। आसान शब्दों में, इसका विस्तृत कारण इस प्रकार है:

केंद्र शासित प्रदेश का दर्जा:

2019 में, लद्दाख को जम्मू-कश्मीर से अलग कर एक केंद्र शासित प्रदेश (UT) बना दिया गया, जिसमें कोई विधानमंडल नहीं है। इसका मतलब है कि इस क्षेत्र की अपनी चुनी हुई विधानसभा नहीं है और यह फैसले लेने के लिए मुख्य रूप से केंद्र सरकार पर निर्भर है। स्थानीय लोगों का मानना है कि उनके पास पूर्ण राज्य की तुलना में राजनीतिक अधिकार और स्वायत्तता कम है।

विकास और संसाधन:

स्थानीय लोगों का तर्क है कि केंद्र शासित प्रदेश होने से शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी ढांचे जैसे क्षेत्रों में फंड कम मिलता है और विकास धीमा होता है। राज्य का दर्जा मिलने से लद्दाख को अपने संसाधनों और बजट आवंटन पर अधिक नियंत्रण मिलेगा।

संस्कृति और पर्यावरण का संरक्षण:

लद्दाख की एक अनोखी संस्कृति और नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र है।

स्थानीय स्तर पर विकास संबंधी फैसले लेते समय, राज्य का दर्जा स्थानीय परंपराओं, भूमि अधिकारों और पर्यावरण की रक्षा का एक तरीका माना जाता है।

स्थानीय असंतोष पर प्रतिक्रिया:

हाल के विरोध प्रदर्शन, जिनमें झड़पें और जान-माल का नुकसान हुआ, मौजूदा शासन व्यवस्था से स्थानीय असंतोष को दर्शाते हैं। संक्षेप में: लोग राजनीतिक स्वायत्तता, संसाधनों पर बेहतर नियंत्रण और संस्कृति व पर्यावरण की रक्षा के लिए लद्दाख को राज्य का दर्जा देने की मांग कर रहे हैं।

लघु लेख

"एक लाल सूर्यास्त?" - माओवादी आंदोलन का पतन

कभी भारत में एक शक्तिशाली उग्रवाद रहा माओवादी या नक्सल आंदोलन अब गंभीर झटकों का सामना कर रहा है। 2025 में, सरकार ने दर्जनों विद्रोहियों की मौत और गिरफ्तारी की सूचना दी, जबकि एक हज़ार से ज़्यादा ने आत्मसमर्पण कर दिया। आंदोलन के भीतर इस बात पर भी बहस बढ़ रही है कि क्या सशस्त्र संघर्ष जारी रह सकता है।

सुरक्षा बलों का भारी दबाव

- इस गिरावट का एक प्रमुख कारण सुरक्षा अभियानों का बढ़ता दबाव है। केंद्र और राज्य सरकारों ने माओवादी कार्यकर्ताओं के खिलाफ अभियान तेज कर दिए हैं। कई शीर्ष नेता मारे गए हैं या गिरफ्तार किए गए हैं, जिससे समूह का नेतृत्व ढांचा चरमरा गया है।
- शेष गढ़ अब बस्तर, दंडकारण्य और छत्तीसगढ़ तथा तेलंगाना की सीमा के कुछ हिस्सों जैसे सुनसान जंगली इलाकों तक सीमित हैं। ये क्षेत्र कटे हुए हैं, जहाँ आपूर्ति कम है और प्रभाव भी कम है।

भर्ती की समस्याएँ और सामाजिक परिवर्तन

- वर्षों तक, इस आंदोलन ने आदिवासी समुदायों और कम अवसरों वाले क्षेत्रों से भर्तियाँ कीं। लेकिन अब, वही समुदाय सरकारी कल्याण, मुफ्त शिक्षा और बुनियादी ढाँचे से अधिक लाभान्वित हो रहे हैं। इससे माओवादियों में शामिल होने का आकर्षण कम हो गया है।
- साथ ही, स्मार्टफोन, इंटरनेट, नौकरी और आधुनिक सुविधाओं को देखते हुए, युवा गुरिल्ला जीवन में जान जोखिम में डालने की संभावना कम रखते हैं। जीवनशैली और अपेक्षाओं में बदलाव के कारण हथियारों से संघर्ष का विचार कम आकर्षक लगता है।

आंतरिक विभाजन और वैचारिक संकट

- उच्चतम स्तर पर, आंदोलन की भविष्य की दिशा को लेकर मतभेद हैं। एक वरिष्ठ नेता ने सार्वजनिक रूप से सशस्त्र संघर्ष को समाप्त करने का आह्वान किया है, यह तर्क देते हुए कि इसे जारी रखने से पार्टी नष्ट हो सकती है। अन्य नेता सशस्त्र विद्रोह की मूल रणनीति पर टिके रहने पर ज़ोर देते हैं।
- यह वैचारिक विभाजन एक गहरे संकट को दर्शाता है: क्या माओवादी रणनीति तब भी टिक पाएगी जब ज़मीन (शाब्दिक और लाक्षणिक दोनों रूप से) इतनी बदल गई है? आंदोलन ने पहले की तुलना में कम विकल्पों को खारिज कर दिया है - शायद शांतिपूर्ण राजनीति या आत्मसमर्पण।

सरकार का बदलता दृष्टिकोण

- राज्य ने न केवल बल प्रयोग किया है, बल्कि हथियार छोड़ने को तैयार लोगों के लिए आत्मसमर्पण और पुनर्वास की शर्तें भी रखी हैं। वामपंथी उग्रवाद (LWE) से प्रभावित ज़िलों की संख्या में तेज़ी से गिरावट आई है।
- अधिकारी इस आंदोलन को पीछे हटता हुआ देख रहे हैं और इसे ख़त्म करने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन कई लोग सतर्क हैं। माओवादी समूहों के साथ पिछली शांति वार्ताएँ आपसी अविश्वास के कारण विफल रही हैं। सरकार अक्सर

मानती है कि शांति प्रस्ताव अस्थायी हथकंडे हैं; माओवादी नेताओं को संदेह है कि सरकारी प्रस्ताव वास्तविक नहीं हैं।

क्या इसका मतलब अंत है?

- भारी नुकसान के बावजूद, माओवादी अभी खत्म नहीं हुए हैं। कुछ वरिष्ठ कार्यकर्ताओं का मानना है कि रणनीति में बदलाव के साथ, भविष्य संभव है। लेकिन सशस्त्र संघर्ष छेड़ने की आंदोलन की क्षमता बहुत कम हो गई है।
- अधिकारियों को चिंता है कि नेताओं के औपचारिक आत्मसमर्पण से अलग-थलग समूह पीछे छूट सकते हैं, जो कम स्तर की हिंसा या अपराध जारी रख सकते हैं। आंदोलन की वैचारिक जड़ें, हालाँकि कमज़ोर हो गई हैं, फिर भी दूरदराज के इलाकों में उनके अनुयायी मौजूद हैं।

भारत के लिए यह क्यों मायने रखता है

- माओवादी आंदोलन का पतन भारत की आंतरिक सुरक्षा और विकास के लिए महत्वपूर्ण है। कभी नक्सली प्रभाव वाले क्षेत्रों में अब बेहतर कनेक्टिविटी, ज़्यादा स्कूल और स्वास्थ्य केंद्र मौजूद हैं; उग्रवाद में कमी का मतलब सुरक्षित जीवन और विकास पर ज़्यादा ध्यान केंद्रित हो सकता है।
- दूसरी ओर, राज्य आत्मसमर्पण, पुनर्वास, न्याय और स्थानीय शिकायतों से जिस तरह निपटता है, उससे यह तय होगा कि शांति बनी रहेगी या नहीं। अगर सरकार निष्पक्ष और विकास को समावेशी बनाए रखे, तो असंतोष और कम हो सकता है। लेकिन अगर पिछली उपेक्षा या दुर्व्यवहार दोहराए जाते हैं, तो फिर से उभार का खतरा बना रहेगा।

जैसे-जैसे भारत इस चरण में प्रवेश करेगा, आगे क्या होगा, यह राज्य की कार्रवाई और आंदोलन खुद कितना अनुकूलन कर सकता है, दोनों पर निर्भर करेगा। क्या यह वास्तव में माओवाद का "सूर्यास्त" है - या सिर्फ़ छाया में वापसी - यह कई कारकों - नेताओं, समुदायों और सरकार - के निर्णयों पर निर्भर करता है।

बिहार एसआईआर विवाद: मतदाता बहिष्कार के जोखिम से लेकर मतदाता समावेशन सुनिश्चित करने तक

बिहार एसआईआर विवाद क्या था?

जून 2025 में, चुनाव आयोग (ईसी) ने बिहार की मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) शुरू किया। इस आदेश के तहत, 2003 की मतदाता सूची में शामिल न होने वाले किसी भी व्यक्ति (अनुमानित 2.93 करोड़ लोग) को अपना मताधिकार साबित करने के लिए ग्यारह निर्धारित दस्तावेजों में से एक प्रस्तुत करना आवश्यक था। इस नियम की तीखी आलोचना हुई क्योंकि कई लोगों ने इसे छद्म नागरिकता परीक्षण के रूप में देखा।

कई पारंपरिक दस्तावेज़ - जैसे आधार, ईपीआईसी (मतदाता पहचान पत्र), या राशन कार्ड - शुरू में स्वीकार नहीं किए गए थे, जिससे यह आशंका पैदा हो गई थी कि बड़ी संख्या में पात्र मतदाता इससे वंचित रह सकते हैं।

कानूनी प्रतिरोध और अदालती हस्तक्षेप

नए नियमों की घोषणा के तुरंत बाद, उन्हें सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी गई। आलोचकों ने तर्क दिया कि एसआईआर की शर्तों से आम मतदाताओं के मताधिकार से वंचित होने का खतरा है, जिन्हें ये दस्तावेज़ दिखाने में कठिनाई हो सकती है। चुनाव आयोग ने अपना बचाव करते हुए कहा कि आधार नागरिकता का प्रमाण नहीं है, और जाली या फर्जी राशन कार्डों को लेकर चिंता जताई। सुप्रीम कोर्ट ने हस्तक्षेप करते हुए चुनाव आयोग को अपने मानदंडों में ढील देने के लिए प्रेरित किया। एक बड़ा बदलाव: पात्रता साबित करने के लिए आधार को 12वें वैध दस्तावेज़ के रूप में स्वीकार करना। यह बदलाव बहिष्करण के जोखिम को कम करने और प्रक्रिया को प्रतिबंध के बजाय समावेशन के साथ संरेखित करने के लिए महत्वपूर्ण था।

बहिष्करण से समावेशन की ओर: सुधार

कानूनी दबाव और ज़मीनी स्तर से मिली प्रतिक्रिया का सामना करते हुए, चुनाव आयोग ने अपना दृष्टिकोण बदल दिया। सभी गैर-सूचीबद्ध व्यक्तियों को दस्तावेज़ प्रस्तुत करने के लिए बाध्य करने के बजाय, इसका उद्देश्य अधिक से अधिक मतदाताओं को 2003 की मतदाता सूची से जोड़ना था।

चुनाव आयोग ने मौजूदा सरकारी रिकॉर्ड और सामुदायिक रजिस्टरों (उदाहरण के लिए, पारिवारिक रजिस्टर, जाति सर्वेक्षण डेटा) के माध्यम से उन लोगों के रिश्तेदारों या वंशजों की पहचान की जो पहले से ही मतदाता सूची में शामिल थे। अधिकारियों से कहा गया कि वे मतदाताओं पर दस्तावेज़ प्रस्तुत करने के लिए दबाव न डालें, बल्कि उन्हें शामिल करने के प्रशासनिक तरीके खोजें।

प्रक्रिया के अंत तक, बिहार के लगभग 77% मतदाता 2003 की सूची से जुड़ चुके थे - जिनमें से 52% सीधे 2003 की सूची में शामिल थे, और अन्य 25% अप्रत्यक्ष रूप से संबंधों या अन्य डेटाबेस के माध्यम से जुड़े हुए थे।

परिणाम: विलोपन, परिवर्धन और एक नवीनीकृत मतदाता सूची

एसआईआर के निष्कर्ष के अनुसार:

- लगभग 68.6 लाख नाम मतदाता सूची से हटा दिए गए - ज़्यादातर मृत्यु, प्रवास या दोहराव के कारण।
- लगभग 21.5 लाख नए नाम जोड़े गए।
- बिहार की अंतिम मतदाता गणना में 7.42 करोड़ मतदाता थे।
- चुनाव आयोग ने दावा किया कि ज़्यादातर नाम हटाना सामान्य और उचित था। साथ ही, नए नाम जोड़ने से चूकों को सुधारने के प्रयासों का पता चलता है।

यह क्यों मायने रखता है

बिहार में एसआईआर प्रकरण चुनावी ईमानदारी और मतदाता समावेशन के बीच एक नाज़ुक संतुलन को दर्शाता है। शुरुआत में, चुनाव आयोग के इस कदम को कठोर और जोखिम भरा माना गया, जिससे वैध मतदाताओं के बहिष्करण का ख़तरा पैदा हो

गया। कानूनी हस्तक्षेप और प्रतिक्रिया ने एक अधिक समावेशी दृष्टिकोण अपनाने के लिए मजबूर किया।

यह मामला इस बात पर ज़ोर देता है कि चुनाव अधिकारियों को कितनी सावधानी से कदम उठाने चाहिए: धोखाधड़ी के ख़िलाफ़ सुरक्षा उपायों की ज़रूरत है, लेकिन आम नागरिकों को मताधिकार से वंचित करने की कीमत पर नहीं। यह यह भी दर्शाता है कि प्रक्रियाएँ विकसित होती हैं - अदालतें, जनता की प्रतिक्रिया और ज़मीनी हक़ीक़तें नीतिगत अतिक्रमण पर अंकुश लगाने का काम करती हैं।

बिहार में, चुनाव आयोग द्वारा कठोर नियमों से लचीले समावेशन की ओर बदलाव ने कई लोगों को अनुचित रूप से बहिष्कृत होने से बचाया। फिर भी, इससे कुछ सवाल भी उठते हैं: क्या सुरक्षा उपाय पर्याप्त मज़बूत हैं? क्या अन्यत्र भी इसी तरह की गतिविधियाँ समावेशी सिद्धांतों का सम्मान करेंगी? बिहार एसआईआर बहस इस बात का एक संदर्भ बिंदु बन सकती है कि लोकतांत्रिक देश मतदाता सत्यापन और मतदाता अधिकारों के बीच तनाव को कैसे प्रबंधित करते हैं।

सर्वोच्च न्यायालय ने दीपावली 2025 के दौरान हरित पटाखों के उपयोग की अनुमति दी

भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने दिल्ली-एनसीआर में पटाखों की बिक्री और उपयोग पर एक साल से लगे पूर्ण प्रतिबंध में ढील दी है। इस निर्णय से दीपावली 2025 के दौरान राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (नीरी) और पेट्रोलियम एवं विस्फोटक सुरक्षा संगठन (पेसो) द्वारा अनुमोदित "हरित पटाखों" की बिक्री और उपयोग की अनुमति मिल गई है।

प्रतिबंध की पृष्ठभूमि

हाल के वर्षों में, दिल्ली-एनसीआर में त्योहारों के मौसम के दौरान और उसके बाद वायु प्रदूषण का स्तर गंभीर रहा है। प्रदूषण पर अंकुश लगाने के लिए, सर्वोच्च न्यायालय ने बिगड़ती वायु गुणवत्ता, जन स्वास्थ्य और संविधान के अनुच्छेद 21 (जीवन के अधिकार) के अनुपालन संबंधी चिंताओं का हवाला देते हुए पारंपरिक पटाखों के उपयोग और बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया था।

हरित पटाखे क्या हैं?

- परिभाषा: हरित पटाखे पारंपरिक पटाखों के पर्यावरण के अनुकूल विकल्प हैं। ये पार्टिकुलेट मैटर (PM), सल्फर डाइऑक्साइड (SO_2), और नाइट्रोजन ऑक्साइड (NOx) जैसे 30-40% कम प्रदूषक उत्सर्जित करते हैं।
- विकास: NEERI (CSIR के अंतर्गत) द्वारा डिज़ाइन और अनुमोदित तथा PESO द्वारा प्रमाणित, ये पटाखे कम हानिकारक रासायनिक संरचना का उपयोग करते हैं और पहचान के लिए एक विशिष्ट हरे रंग के लोगो से चिह्नित होते हैं।
- उदाहरण: SWAS (सेफ वाटर रिलीज़र), STAR (सेफ थर्माइट क्रैकर), और SAFAL (सेफ मिनिमल एल्युमीनियम)।

सुप्रीम कोर्ट के फैसले की मुख्य विशेषताएँ

- केवल NEERI और PESO द्वारा अनुमोदित हरित पटाखों की बिक्री और उपयोग की अनुमति थी।
- पटाखों को लाइसेंस प्राप्त विक्रेताओं के माध्यम से बेचा जाना आवश्यक था, न कि ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से।
- स्थानीय अधिकारियों द्वारा पटाखे फोड़ने के समय और निर्दिष्ट क्षेत्रों को सख्ती से नियंत्रित किया गया था।

आदेश का उल्लंघन करने पर पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 के तहत कड़ी कानूनी कार्रवाई की जा सकती है।

संबंधित संस्थान

नीरी (राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान): पर्यावरण अनुसंधान एवं विकास में संलग्न एक सीएसआईआर संस्थान, जिसका मुख्यालय नागपुर में है।

पेट्रोलियम एवं विस्फोटक सुरक्षा संगठन (पीईएसओ): विस्फोटकों और पेट्रोलियम उत्पादों के निर्माण, भंडारण और उपयोग को नियंत्रित करता है; वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अधीन कार्य करता है।

पर्यावरणीय और कानूनी महत्व

इस निर्णय का उद्देश्य सांस्कृतिक परंपराओं और पर्यावरणीय स्थिरता के बीच संतुलन बनाना है। यह "स्थायी उत्सव" के सिद्धांत को कायम रखता है और यह सुनिश्चित करता है कि दीपावली जैसे उत्सव जन स्वास्थ्य से समझौता किए बिना जिम्मेदारी से मनाए जाएँ।

अतिरिक्त तथ्य:

- अनुच्छेद 48ए: राज्य को पर्यावरण की रक्षा और सुधार करने का निर्देश देने वाला नीति निर्देशक सिद्धांत।
- अनुच्छेद 51ए(जी): पर्यावरण की रक्षा करना प्रत्येक नागरिक का मौलिक कर्तव्य।
- पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986: यह सरकार को प्रदूषण फैलाने वाली गतिविधियों को विनियमित करने का अधिकार देता है।
- वायु गुणवत्ता सूचकांक (AQI): दिवाली के बाद दिल्ली में अक्सर "गंभीर" श्रेणी का AQI दर्ज किया जाता है, जो 400+ को पार कर जाता है।

"मैदान में हारा हुआ इंसान फिर भी जीत सकता है !
लेकिन मन से हारा हुआ इंसान कभी नहीं जीत सकता !!

"ज़िन्दगी में तकलीफ कितनी भी हो कभी हताश मत होना
क्योंकि धूप कितनी भी तेज़ क्यों न हो समंदर कभी
सुखा नहीं होता !!

अंतर्राष्ट्रीय संबंध एवं घटनाएँ

भारत 2026-28 के कार्यकाल के लिए संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद में निर्विरोध निर्वाचित

भारत को जनवरी 2026 से शुरू होने वाले तीन वर्षीय कार्यकाल (2026-2028) के लिए संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद (यूएनएचआरसी) में निर्विरोध निर्वाचित किया गया है। यह परिषद में भारत का सातवाँ कार्यकाल है, जो मानवाधिकारों और मौलिक स्वतंत्रताओं के प्रति उसकी मज़बूत वैश्विक प्रतिष्ठा और प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है। यह चुनाव संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) में हुआ, जहाँ भारत के स्थायी प्रतिनिधि पी. हरीश ने सभी सदस्य देशों के प्रति उनके समर्थन के लिए आभार व्यक्त किया।

संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद (यूएनएचआरसी) के बारे में:

- स्थापना: 2006, पूर्व संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग का स्थान लिया।
- मुख्यालय: जिनेवा, स्विट्ज़रलैंड।
- सदस्यता: 47 देश, संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा क्षेत्रीय समूह के आधार पर चुने जाते हैं।
- कार्यकाल: 3 वर्ष, सदस्य लगातार दो कार्यकाल पूरा करने के बाद तत्काल पुनर्निर्वाचन के लिए पात्र नहीं होते हैं।
- अधिदेश: मानवाधिकारों को बढ़ावा देना और उनकी रक्षा करना, मानवाधिकार उल्लंघनों का समाधान करना और संयुक्त राष्ट्र महासभा को सिफारिशें प्रस्तुत करना।

संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद में भारत के पिछले कार्यकाल:

भारत इससे पहले छह कार्यकाल - 2006-2007, 2007-2010, 2011-2014, 2014-2017, 2018-2021 और 2022-2024 - तक सदस्य रह चुका है।

मालदीव हेपेटाइटिस बी, एचआईवी और सिफलिस के माँ से बच्चे में संचरण को समाप्त करने वाला पहला देश बना

एक ऐतिहासिक वैश्विक स्वास्थ्य उपलब्धि के रूप में, विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने मालदीव को आधिकारिक तौर पर दुनिया का पहला देश घोषित किया है जिसने "ट्रिपल एलिमिनेशन" हासिल किया है - हेपेटाइटिस बी, एचआईवी और सिफलिस के माँ से बच्चे में संचरण (MTCT) का उन्मूलन। यह मान्यता मालदीव को मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य के क्षेत्र में वैश्विक अग्रणी बनाती है, जो इसके मजबूत स्वास्थ्य सेवा बुनियादी ढांचे, सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज और सार्वजनिक स्वास्थ्य में निरंतर निवेश को रेखांकित करती है।

मुख्य विशेषताएँ

उपलब्धि: हेपेटाइटिस बी के माँ से बच्चे में संचरण का उन्मूलन, जबकि एचआईवी और सिफलिस के लिए पहले उन्मूलन की स्थिति को बनाए रखा।

- त्रिगुण उन्मूलन (हेपेटाइटिस बी, एचआईवी, सिफलिस) प्राप्त करने वाला पहला देश
- मान्यता प्राधिकारी: विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ)
- वैश्विक महत्व: दुनिया भर में रोग उन्मूलन और मातृ-शिशु स्वास्थ्य सफलता के लिए एक नया मानक स्थापित करता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की "ट्रिपल एलिमिनेशन" पहल के बारे में

WHO माँ से बच्चे में संक्रमण (MTCT) को रोकने के लिए एचआईवी, सिफलिस और हेपेटाइटिस बी के लिए एकीकृत परीक्षण और उपचार को बढ़ावा देता है। ट्रिपल एलिमिनेशन पहल शून्य संक्रमण दर प्राप्त करने, शिशु मृत्यु दर को कम करने और मातृ स्वास्थ्य परिणामों में सुधार लाने में देशों का समर्थन करती है।

फिजी ने बाल सुरक्षा बढ़ाने के लिए पहली राष्ट्रीय बाल सुरक्षा नीति शुरू की

फिजी सरकार ने अपनी पहली राष्ट्रीय बाल सुरक्षा नीति शुरू की है, जो समाज के सभी क्षेत्रों में बाल संरक्षण और सुरक्षा मानकों को मज़बूत करने की दिशा में एक बड़ा कदम है। इस नीति का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि बच्चों से जुड़ी सभी सेवाएँ सुरक्षित, सम्मानजनक और बाल-केंद्रित तरीके से प्रदान की जाएँ, जिससे संस्थागत स्तर पर जवाबदेही और जागरूकता बढ़े। इस नीति में अनिवार्य बाल संरक्षण आचार संहिता, बाल-सुरक्षित भर्ती और पृष्ठभूमि जाँच, और संगठनों और संस्थानों के लिए जोखिम न्यूनीकरण ढाँचे जैसे प्रमुख उपाय शामिल हैं। यह पहल प्रशांत क्षेत्र में बाल दुर्व्यवहार और उपेक्षा को लेकर बढ़ती क्षेत्रीय चिंताओं के बीच शुरू की गई है, जहाँ सांस्कृतिक वर्जनाएँ, संसाधनों की कमी और कम रिपोर्टिंग जैसे मुद्दे बच्चों के अधिकारों के प्रभावी संरक्षण में बाधा बन रहे हैं। यह नया ढाँचा संयुक्त राष्ट्र बाल अधिकार सम्मेलन (UNCRC) जैसे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के प्रति फिजी की प्रतिबद्धता के अनुरूप है, और इसका उद्देश्य सुरक्षा और रोकथाम की एक राष्ट्रव्यापी संस्कृति स्थापित करना है।

राष्ट्रीय बाल सुरक्षा नीति (फ़िजी) के बारे में:

- प्रवर्तक: फ़िजी सरकार
- उद्देश्य: स्कूलों, स्वास्थ्य संस्थानों और सामुदायिक संगठनों में बच्चों के लिए एक सुरक्षित वातावरण तैयार करना।

फिजी के बारे में:

- राजधानी: सुवा
- मुद्रा: फिजी डॉलर (FJD)
- राष्ट्रपति: रातू विलियम काटोनिवेरे
- प्रधानमंत्री: सिटिवेनी राबुका
- सदस्य: संयुक्त राष्ट्र, प्रशांत द्वीप समूह मंच और राष्ट्रमंडल राष्ट्र

अंतर्राष्ट्रीय बाल संरक्षण ढाँचा:

- बाल अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UNCRC): 1989 में अपनाया गया, 1993 में फिजी द्वारा अनुसमर्थित।
- लक्ष्य: प्रत्येक बच्चे के अस्तित्व, सुरक्षा, विकास और भागीदारी के अधिकार को सुनिश्चित करना।

अमेरिकी सरकार क्यों बंद हुई और अब क्या होगा

रिपब्लिकन और डेमोक्रेट्स के बजट पर सहमत न होने के कारण अमेरिकी सरकार आंशिक रूप से बंद हो रही है। लगभग 40% संघीय कर्मचारी (लगभग 7,50,000 लोग) अवैतनिक अवकाश पर हैं। आवश्यक सेवाएँ जारी हैं, लेकिन कई सरकारी कार्य अस्थायी रूप से स्थगित हैं।

बंद का कारण

यह बंद इसलिए हुआ क्योंकि कांग्रेस सितंबर के बाद सरकारी कार्यों के लिए धन जुटाने हेतु एक व्यय विधेयक पारित नहीं कर सकी। रिपब्लिकन दोनों सदनों पर नियंत्रण रखते हैं, लेकिन उनके पास अनुमोदन के लिए आवश्यक 60 सीनेट वोट नहीं हैं। डेमोक्रेट्स स्वास्थ्य सेवा कर क्रेडिट की अवधि बढ़ाने और मेडिकेड कटौती को वापस लेने की मांग कर रहे हैं। एक अस्थायी वित्त पोषण विधेयक सदन में पारित हो गया, लेकिन सीनेट में विफल रहा।

सरकारी सेवाओं पर प्रभाव

सेवाएँ जारी:

- सीमा सुरक्षा और कानून प्रवर्तन
- आईसीई एजेंट, हवाई यातायात नियंत्रक, अस्पताल में चिकित्सा देखभाल
- सामाजिक सुरक्षा और मेडिकेयर भुगतान

प्रभावित या रुकी हुई सेवाएँ:

- अवैतनिक अवकाश पर संघीय कर्मचारी
- संघीय वित्त पोषित प्री-स्कूल और खाद्य सहायता कार्यक्रम
- सीडीसी और एनआईएच जैसी अनुसंधान एजेंसियाँ कर्मचारियों की छंटनी कर सकती हैं
- राष्ट्रीय उद्यान और संग्रहालय न्यूनतम कर्मचारियों के साथ संचालित हो सकते हैं, जिससे तोड़फोड़ का खतरा हो सकता है

अन्य प्रभाव:

- डाक वितरण जारी रहेगा (यूएसपीएस कांग्रेस से स्वतंत्र)
- पासपोर्ट प्रक्रिया में देरी हो सकती है
- संघीय छात्र ऋण और अनुदान अस्थायी रूप से बाधित हो सकते हैं

शटडाउन कैसे समाप्त हो सकता है

- रिपब्लिकन डेमोक्रेट्स द्वारा मांगी गई स्वास्थ्य सेवा सब्सिडी पर बातचीत कर सकते हैं।
- डेमोक्रेट्स सरकारी धन को बहाल करने के लिए पीछे हट सकते हैं।
- मेडिकेड और एजेंसी बजट पर समझौता हो सकता है।
- अन्यथा, शटडाउन जारी रह सकता है, जिससे लंबे समय तक व्यवधान हो सकता है।

आर्थिक प्रभाव

- अल्पकालिक प्रभाव: प्रति सप्ताह सकल घरेलू उत्पाद में 0.1-0.2% की कमी हो सकती है।
- लंबे समय तक छंटनी और ट्रंप के टैरिफ आर्थिक अनिश्चितता को और बढ़ा सकते हैं।

ऐतिहासिक संदर्भ

- शटडाउन अमेरिकी राजनीति में विशिष्ट होते हैं, आमतौर पर बजट विवादों के कारण।
- सबसे लंबा शटडाउन: 2018 में 35 दिन (ट्रंप) मेक्सिको सीमा की दीवार को लेकर।
- अन्य उल्लेखनीय शटडाउन: 1995 में 21 दिन (क्लिंटन), 16 दिन (ओबामा), और रीगन के कार्यकाल में कई छोटे शटडाउन।

ट्रंप क्यों चाहते हैं कि बग्राम एयर बेस अफगानिस्तान से वापस अमेरिका को दे दिया जाए?

यूके दौरे के दौरान, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि अमेरिका अफगानिस्तान में बग्राम एयर बेस पर अपना नियंत्रण वापस पाना चाहता है, जिसे 2021 में अमेरिकी सैनिकों की वापसी के दौरान छोड़ दिया गया था। उन्होंने जोर देकर कहा कि यह बेस पहले "बिना किसी कीमत के" दे दिया गया था और उन्होंने इसे वापस पाने की इच्छा जताई।

बग्राम का रणनीतिक महत्व

- स्थान: बग्राम काबुल से लगभग 60 किमी उत्तर में स्थित है।
- क्षमता: यह अफगानिस्तान में सबसे बड़ा अमेरिकी सैन्य बेस था, जो आतंकवाद विरोधी अभियानों के लिए एक केंद्र के रूप में काम करता था। इसका 11,800 फीट लंबा रनवे बमवर्षक और भारी कार्गो विमानों को संभाल सकता है।
- चीन की निकटता: यह बेस चीनी परमाणु सुविधाओं के करीब रणनीतिक रूप से स्थित है, जो क्षेत्रीय सैन्य गतिविधियों पर नज़र रखने के लिए महत्वपूर्ण है।

आतंकवाद विरोधी महत्व

ऐतिहासिक भूमिका: बग्राम ने ISIS-K, अल-कायदा और तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान के खिलाफ अमेरिकी अभियानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वर्तमान खतरे: ISIS-K अफगानिस्तान, ईरान और रूस में सक्रिय है। अल-कायदा अफगानिस्तान में प्रशिक्षण शिविर चला रहा है, जबकि तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान ने 2024 के दूसरे छमाही में अफगानिस्तान की धरती से 600 से अधिक हमले किए।

तालिबान का विरोध

तालिबान ने अमेरिका के प्रस्ताव को खारिज कर दिया। सशस्त्र बलों के चीफ ऑफ स्टाफ फसीहुद्दीन फिटरत ने कहा कि अफगानिस्तान पूरी तरह से स्वतंत्र है, यह अपने लोगों द्वारा शासित है और किसी विदेशी शक्ति पर निर्भर नहीं है। उन्होंने जोर देकर कहा कि देश किसी बाहरी हमलावर से नहीं डरता।

यूरोपीय संघ जनवरी 2028 से सभी रूसी ऊर्जा आयातों पर प्रतिबंध लगाएगा

यूरोपीय संघ (ईयू) ने जनवरी 2028 से सभी रूसी ऊर्जा आयातों पर प्रतिबंध लगाने का फैसला किया है—जिसमें पाइपलाइन तेल और तरलीकृत प्राकृतिक गैस (एलएनजी) दोनों शामिल हैं।

लक्ज़मबर्ग में आयोजित एक बैठक के दौरान यूरोपीय संघ के ऊर्जा मंत्रियों ने इस फैसले को मंजूरी दी।

यह कदम ऊर्जा स्वतंत्रता हासिल करने और रूसी जीवाश्म ईंधन पर यूरोपीय संघ की निर्भरता को कम करने के उद्देश्य से एक बड़ा नीतिगत बदलाव है, जो 2022 में रूस-यूक्रेन युद्ध शुरू होने के बाद से एक प्रमुख भू-राजनीतिक कमजोरी रही है।

पृष्ठभूमि: रूसी ऊर्जा पर निर्भरता कम करना

फरवरी 2022 में रूस द्वारा यूक्रेन पर आक्रमण के बाद, यूरोपीय संघ ने वर्साय घोषणा (2022) के तहत रूसी जीवाश्म ईंधन पर अपनी निर्भरता समाप्त करने का संकल्प लिया।

यूरोपीय परिषद ने पुष्टि की है कि यह प्रतिबंध REPowerEU योजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसका उद्देश्य सभी सदस्य देशों के लिए सस्ती और सुरक्षित ऊर्जा सुनिश्चित करते हुए रूस पर यूरोपीय संघ की ऊर्जा निर्भरता को समाप्त करना है।

उद्देश्य:

- 2030 से पहले ही रूसी जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता समाप्त करना।
- यूरोपीय संघ के देशों में नवीकरणीय ऊर्जा और ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देना।
- ऊर्जा सुरक्षा, बुनियादी ढाँचे और सीमा पार ऊर्जा संपर्कों को मज़बूत करना।

यूरोपीय संघ (ईयू) के बारे में

- स्थापना: 1993 (मास्ट्रिच संधि)
- मुख्यालय: ब्रुसेल्स, बेल्जियम
- सदस्य: 27 देश
- आधिकारिक मुद्रा: यूरो (€) - 20 सदस्य देशों द्वारा उपयोग किया जाता है
- मुख्य संस्थान: यूरोपीय परिषद, यूरोपीय संसद, यूरोपीय आयोग
- यूरोपीय आयोग की वर्तमान अध्यक्ष: उर्सुला वॉन डेर लेयेन
- आवर्ती अध्यक्षता (2025): डेनमार्क

फीफा रैंकिंग में भारत 136वें स्थान पर खिसका - लगभग एक दशक में सबसे खराब: स्पेन शीर्ष पर बरकरार

भारत की पुरुष राष्ट्रीय फुटबॉल टीम नवीनतम फीफा विश्व रैंकिंग में 136वें स्थान पर खिसक गई है, जो नवंबर 2016 के बाद से उसका सबसे निचला स्थान है। पिछले 134वें स्थान से यह गिरावट टीम के अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शन में एक चिंताजनक रुझान को दर्शाती है।

हाल के मैचों का प्रभाव

रैंकिंग में यह गिरावट हाल के मैचों में भारत के निराशाजनक परिणामों के बाद आई है, जिसमें एएफसी एशियन कप क्वालीफायर में सिंगापुर से 1-1 से ड्रॉ और 1-2 से हार शामिल है। इन परिणामों ने वैश्विक मंच पर टीम की स्थिति को काफी प्रभावित किया है।

प्रमुख टूर्नामेंटों के लिए छूटे अवसर

इन असफलताओं के परिणामस्वरूप, भारत 2026 फीफा विश्व कप और 2027 एएफसी एशियन कप दोनों की दौड़ से बाहर हो गया है। यह टीम की आकांक्षाओं के लिए एक बड़ा झटका है और रणनीतिक सुधारों की आवश्यकता को उजागर करता है।

भविष्य की ओर

वर्तमान स्थिति भारतीय फुटबॉल के भीतर आत्मनिरीक्षण और पुनर्गठन की मांग करती है ताकि चुनौतियों का समाधान किया जा सके और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धात्मकता हासिल करने की दिशा में काम किया जा सके। विकास और रणनीतिक योजना पर ध्यान केंद्रित करने से भविष्य में सकारात्मक बदलाव की उम्मीद है।

सूची में शीर्ष 5 देश

1. स्पेन
2. अर्जेंटीना
3. फ्रांस
4. इंग्लैंड
5. पुर्तगाल

फीफा

- स्थापना: 21 मई, 1904
- संस्थापक: रॉबर्ट गुएरिन
- मुख्यालय: ज्यूरिख, स्विट्जरलैंड
- अध्यक्ष: जियानी इन्फेंटिनो
- महासचिव: मैटियास ग्राफस्ट्रॉम

हेनले पासपोर्ट इंडेक्स 2025: सिंगापुर शीर्ष पर, भारत 85वें स्थान पर

हेनले पासपोर्ट इंडेक्स 2025, विदेशी देशों में वीज़ा-मुक्त पहुँच के आधार पर दुनिया के सबसे शक्तिशाली पासपोर्टों की रैंकिंग करता है। सिंगापुर ने फिर से पहला स्थान हासिल किया है, जहाँ उसके नागरिकों को 193 गंतव्यों तक वीज़ा-मुक्त पहुँच प्राप्त है।

- दक्षिण कोरिया और जापान क्रमशः 190 और 189 वीज़ा-मुक्त गंतव्यों के साथ दूसरे और तीसरे स्थान पर हैं।
- शेष शीर्ष 10 में यूरोपीय देशों का दबदबा है, जिनमें जर्मनी, इटली, लक्ज़मबर्ग, स्पेन, स्विट्ज़रलैंड, ऑस्ट्रिया, बेल्जियम, डेनमार्क, फ़िनलैंड, फ्रांस, आयरलैंड, नीदरलैंड, ग्रीस, हंगरी, न्यूज़ीलैंड, नॉर्वे, पुर्तगाल और स्वीडन शामिल हैं।
- संयुक्त अरब अमीरात 184 गंतव्यों तक पहुँच के साथ 10वें स्थान से 8वें स्थान पर पहुँच गया है।
- चीन 2015 में 94वें स्थान से चढ़कर 2025 में 64वें स्थान पर पहुँच गया, और एक दशक में 37 वीज़ा-मुक्त गंतव्यों की यात्रा की।
- संयुक्त राज्य अमेरिका 180 देशों में वीज़ा-मुक्त पहुँच प्रदान करते हुए मलेशिया के साथ संयुक्त रूप से 12वें स्थान पर आ गया।
- यूनाइटेड किंगडम 2015 में सूची में शीर्ष पर रहने के बावजूद, अब तक के अपने सबसे निचले स्थान, 8वें स्थान पर आ गया।

भारत की रैंकिंग:

- भारत का पासपोर्ट 2025 में 85वें स्थान पर होगा, जो 2024 (80वें स्थान) से पाँच स्थान नीचे है।

- ऐतिहासिक सीमा: निम्नतम रैंक: 90 (2021), उच्चतम रैंक: 71 (2006)।
- उतार-चढ़ाव वैश्विक यात्रा नीतियों और भारत के राजनयिक संबंधों में बदलाव को दर्शाते हैं।

शीर्ष 10 सबसे मज़बूत पासपोर्ट (2025):

1. सिंगापुर – 193
2. दक्षिण कोरिया – 190
3. जापान – 189
4. जर्मनी, इटली, लक्ज़मबर्ग, स्पेन, स्विट्ज़रलैंड – 188
5. ऑस्ट्रिया, बेल्जियम, डेनमार्क, फ़िनलैंड, फ़्रांस, आयरलैंड, नीदरलैंड – 187
6. ग्रीस, हंगरी, न्यूज़ीलैंड, नॉर्वे, पुर्तगाल, स्वीडन – 186
7. ऑस्ट्रेलिया, चेकिया, माल्टा, पोलैंड – 185
8. क्रोएशिया, एस्टोनिया, स्लोवाकिया, स्लोवेनिया, यूएई, यूके – 184
9. कनाडा – 183
10. लातविया – 182

लघु लेख

ट्रम्प की गाजा शांति योजना: क्षेत्रीय तनाव के बीच एक साहसिक प्रस्ताव

सितंबर 2025 में, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने गाजा में चल रहे संघर्ष को समाप्त करने के उद्देश्य से एक व्यापक 20-सूत्रीय योजना का अनावरण किया। आठ महीनों में तैयार की गई इस योजना की घोषणा इज़राइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के व्हाइट हाउस दौरे के बाद की गई। इस प्रस्ताव ने वैश्विक ध्यान आकर्षित किया है, हालाँकि हमास ने अभी तक इसे स्वीकार नहीं किया है। इस योजना के मध्य पूर्व, अमेरिका और भारत व पाकिस्तान जैसे देशों पर प्रभाव पड़ेंगे।

शांति योजना के मुख्य लक्ष्य

यह योजना निरस्त्रीकरण, शासन सुधारों, अंतर्राष्ट्रीय निगरानी और मानवीय सहायता के संयोजन के माध्यम से गाजा को स्थिर करने का प्रयास करती है। इसका उद्देश्य हिंसा को कम करना, बुनियादी ढाँचे का पुनर्निर्माण करना और इज़राइल की सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए गाजा के पुनर्निर्माण के लिए एक सुव्यवस्थित मार्ग प्रदान करना है।

विस्तृत शांति योजना बिंदुओं में

हमास का निरस्त्रीकरण:

- हमास के सदस्यों को अपने हथियार सौंपने होंगे।
- जो लोग शांति के लिए प्रतिबद्ध होंगे उन्हें क्षमादान मिलेगा।
- सदस्य गाजा से जॉर्डन, मिस्र, कतर या ईरान जैसे देशों में सुरक्षित रूप से जा सकते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय स्थिरीकरण बल (आईएसएफ):

- एक अस्थायी अंतर्राष्ट्रीय बल फ़िलिस्तीनी पुलिस का समर्थन करेगा और सुरक्षा बनाए रखेगा।
- आईएसएफ हथियारों की तस्करी को रोकेगा और पुनर्निर्माण के लिए सामानों की सुरक्षित डिलीवरी सुनिश्चित करेगा।
- इज़राइली रक्षा बल (आईडीएफ) विसैन्यीकरण के लक्ष्यों के आधार पर धीरे-धीरे वापस लौटेंगे।

संक्रमणकालीन शासन - "डे आफ्टर प्लान":

- गाजा का प्रबंधन एक अस्थायी, गैर-राजनीतिक फ़िलिस्तीनी समिति द्वारा किया जाएगा जिसमें योग्य स्थानीय लोग और अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ शामिल होंगे।
- ट्रम्प की अध्यक्षता में "शांति बोर्ड" नामक एक अंतर्राष्ट्रीय संक्रमणकालीन निकाय द्वारा निगरानी की जाएगी, जिसमें टोनी ब्लेयर भी शामिल होंगे।
- यह समिति पानी, बिजली, स्वास्थ्य सेवा और नगरपालिका प्रबंधन जैसी आवश्यक सेवाओं को संभालेगी।

मानवीय सहायता और बुनियादी ढाँचा:

- सहायता का मुक्त प्रवाह, अस्पतालों, बेकरी, सड़कों और उपयोगिताओं का पुनर्वास।
- सहायता वितरण का प्रबंधन संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों और रेड क्रिसेंट द्वारा किया जाएगा।

बंधक और कैदियों की अदला-बदली:

- इज़राइल द्वारा योजना को स्वीकार करने के 72 घंटों के भीतर, सभी बंधकों को वापस कर दिया जाएगा।
- इज़राइल अक्टूबर 2023 के बाद हिरासत में लिए गए 1,700 गाजावासियों सहित कैदियों को रिहा करेगा।
- मृतक इज़राइली बंधकों के अवशेष प्रत्येक इज़राइली के लिए 15 मृत गाजावासियों के बदले में लौटाए जाएँगे।

क्षेत्रीय गारंटी:

- क्षेत्रीय साझेदार यह सुनिश्चित करेंगे कि हमास और अन्य समूह इसका पालन करें।
- एक सुरक्षित और आतंक-मुक्त गाजा दीर्घकालिक लक्ष्य होगा।

बफर ज़ोन और सुरक्षा:

- इज़राइल गाजा के पूरी तरह से स्थिर होने तक एक सीमित "सुरक्षा परिधि" बनाए रखेगा।
- आईएसएफ आंतरिक सुरक्षा का प्रबंधन करेगा और हिंसा के फिर से उभरने को रोकेगा।

वैश्विक प्रतिक्रियाएँ और निहितार्थ

इस योजना को मिली-जुली प्रतिक्रियाएँ मिली हैं। हमास ने अभी तक इसे स्वीकार नहीं किया है, जबकि फ़िलिस्तीनी प्राधिकरण ने इसका स्वागत किया है। अरब देश सतर्क समर्थन दिखा रहे हैं। भारत पुनर्निर्माण में योगदान देने के संभावित लाभ देखता है,

लेकिन मध्य पूर्व में पाकिस्तान के बढ़ते प्रभाव को लेकर चिंतित है। इस योजना की सफलता सभी पक्षों के सहयोग और इसके प्रावधानों के प्रभावी क्रियान्वयन पर निर्भर करती है।

रूस ने नई स्टार्ट संधि के विस्तार के लिए अमेरिकी समर्थन का स्वागत किया

रूस ने अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा नई स्टार्ट संधि के अनुपालन को एक और वर्ष के लिए बढ़ाने के मास्को के प्रस्ताव का समर्थन करने पर सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की। यह रूस द्वारा 2023 तक इस संधि में अपनी भागीदारी स्थगित करने के बाद आया है - एक ऐसा कदम जिसने वैश्विक परमाणु हथियार नियंत्रण के भविष्य को लेकर चिंताएँ पैदा कर दी थीं।
नई स्टार्ट संधि दो प्रमुख परमाणु शक्तियों, संयुक्त राज्य अमेरिका और रूस के बीच अंतिम शेष हथियार सीमा समझौता है।

रणनीतिक हथियार न्यूनीकरण ढाँचों का विकास

स्टार्ट शब्द का तात्पर्य सामरिक हथियार न्यूनीकरण संधि से है, जिसे महाशक्तियों के बीच परमाणु हथियारों को सीमित और कम करने के लिए डिज़ाइन किया गया था।

- **ऐतिहासिक समयरेखा**
- START-I: 1991 में अमेरिका और सोवियत संघ के बीच हस्ताक्षरित, 1994 में लागू हुआ, जिसका उद्देश्य सत्यापन योग्य परमाणु हथियारों में कमी लाना था।
- SORT (रणनीतिक आक्रामक न्यूनीकरण संधि): इसने अस्थायी रूप से START-I का स्थान लिया, जिसमें विस्तृत सत्यापन तंत्र के बिना संख्यात्मक सीमाओं पर ज़ोर दिया गया।
- नई START संधि: 2010 में हस्ताक्षरित, 2011 में लागू, और शुरुआत में 2021 तक वैध, बाद में 2026 तक बढ़ा दी गई।
- INF संधि (1987) जैसे पूर्ववर्ती ढाँचों के पतन के बाद, यह संधि परमाणु हथियार विनियमन की आधारशिला बन गई।

संधि के मुख्य उद्देश्य और दायरा

नई START संधि का उद्देश्य लंबी दूरी के सामरिक परमाणु हथियारों - जिनमें ICBM (अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल), SLBM (पनडुब्बी से प्रक्षेपित बैलिस्टिक मिसाइल) और सामरिक बमवर्षक शामिल हैं - की तैनाती और विकास को सीमित करना था, जो दुश्मन के कमांड सेंटरों और प्रमुख शहरों पर हमला करने में सक्षम थे।

मात्रात्मक प्रतिबंध

रूस और अमेरिका दोनों निम्नलिखित सीमाओं पर सहमत हुए:

- 700 तैनात ICBM, SLBM और भारी बमवर्षक।
- 1,550 तैनात परमाणु हथियार।
- 800 तैनात और गैर-तैनात लांचर और बमवर्षक संयुक्त।
- ये कटौती सत्यापन योग्य और पारदर्शी थीं, जिससे रणनीतिक स्थिरता को बढ़ावा मिला और संकट के दौरान गलत अनुमानों को कम किया गया।

सत्यापन और निगरानी उपाय

संधि का अनुपालन तंत्र एक मजबूत निरीक्षण और अधिसूचना प्रणाली पर निर्भर था, जिसमें शामिल हैं:

- अमेरिकी और रूसी सत्यापन टीमों द्वारा स्थल पर निरीक्षण।
- हथियारों की संख्या और लांचर स्थानों पर डेटा का आदान-प्रदान।
- मिसाइल परीक्षण प्रक्षेपणों की अग्रिम सूचनाएँ।
- द्विपक्षीय परामर्शदात्री आयोग (बीसीसी): विवादों को सुलझाने और पारदर्शिता बनाए रखने के लिए स्थापित एक संयुक्त निकाय।
- इस संरचना ने आपसी विश्वास और वास्तविक समय की जवाबदेही सुनिश्चित की - जो वैश्विक सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।

सीमाएँ और रणनीतिक अंतराल

अपने महत्व के बावजूद, नई START संधि में उल्लेखनीय कमियाँ थीं:

- इसमें गैर-तैनात और सामरिक (कम दूरी के) परमाणु हथियारों को शामिल नहीं किया गया था, जो दोनों देशों के शस्त्रागार का एक बड़ा हिस्सा हैं।
- रूस ने अंतरिक्ष-आधारित गोल्डन डोम परियोजना जैसी अमेरिकी मिसाइल रक्षा प्रणालियों पर चिंता जताई।
- बदले में, अमेरिका ने रूस के हाइपरसोनिक ग्लाइड वाहनों (एवांगार्ड) और किंजल मिसाइलों पर आशंकाएँ व्यक्त कीं, जो संधि के प्रावधानों के अंतर्गत नहीं आते थे।

इन तकनीकी प्रगति और आपसी संदेहों ने हथियार नियंत्रण की स्थिरता को जटिल बना दिया।

परमाणु हथियार विनियमन पर वैश्विक ढाँचे

1. परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी), 1968

- उद्देश्य: परमाणु हथियारों के प्रसार को रोकना, निरस्त्रीकरण को बढ़ावा देना और परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग को सुनिश्चित करना।
- मान्यता प्राप्त परमाणु हथियार राज्य (एनडब्ल्यूएस): अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस और यूके।
- भारत भेदभावपूर्ण धाराओं का हवाला देते हुए हस्ताक्षरकर्ता नहीं है।

2. व्यापक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि (सीटीबीटी), 1996

- सभी प्रकार के परमाणु परीक्षणों पर प्रतिबंध लगाती है।

- अमेरिका और चीन सहित प्रमुख शक्तियों द्वारा इसकी पुष्टि न किए जाने के कारण यह अभी तक लागू नहीं हुआ है।

3. परमाणु हथियारों के निषेध पर संधि (टीपीएनडब्ल्यू), 2017

- परमाणु हथियारों के उपयोग, परीक्षण, उत्पादन, कब्जे और हस्तांतरण पर प्रतिबंध लगाती है।
- मुख्य रूप से गैर-परमाणु राष्ट्रों और पूर्ण निरस्त्रीकरण के समर्थकों द्वारा समर्थित।

विस्तार प्रस्ताव के रणनीतिक निहितार्थ

- न्यू स्टार्ट का संभावित विस्तार, महाशक्तियों के बीच नई प्रतिद्वंद्विता के युग में एक महत्वपूर्ण स्थिरता उपाय का प्रतिनिधित्व करता है।
- इसने यूक्रेन, नाटो विस्तार और बदलते गठबंधनों से जुड़े व्यापक भू-राजनीतिक तनावों के बीच भी, हथियार नियंत्रण वार्ता की आवश्यकता की पुष्टि की।
- रूस और अमेरिका के पास वैश्विक परमाणु भंडार का लगभग 87% हिस्सा (रूस: लगभग 5,459; अमेरिका: लगभग 5,177 हथियार) होने के कारण, इस संधि के ढांचे को बनाए रखना वैश्विक सुरक्षा और निवारक स्थिरता के लिए आवश्यक था।

भारत के लिए व्यापक प्रासंगिकता

- भारत, जो न्यू स्टार्ट का सदस्य नहीं है, के लिए वैश्विक हथियार नियंत्रण में विकास के अप्रत्यक्ष लेकिन महत्वपूर्ण परिणाम हैं:
- वे वैश्विक रणनीतिक संतुलन को आकार देते हैं और भारत के परमाणु सिद्धांत को प्रभावित करते हैं।
- वे निरस्त्रीकरण सम्मेलन (सीडी) और संयुक्त राष्ट्र ढाँचों के तहत सार्वभौमिक, गैर-भेदभावपूर्ण निरस्त्रीकरण की वकालत करने में भारत की भूमिका को प्रभावित करते हैं।

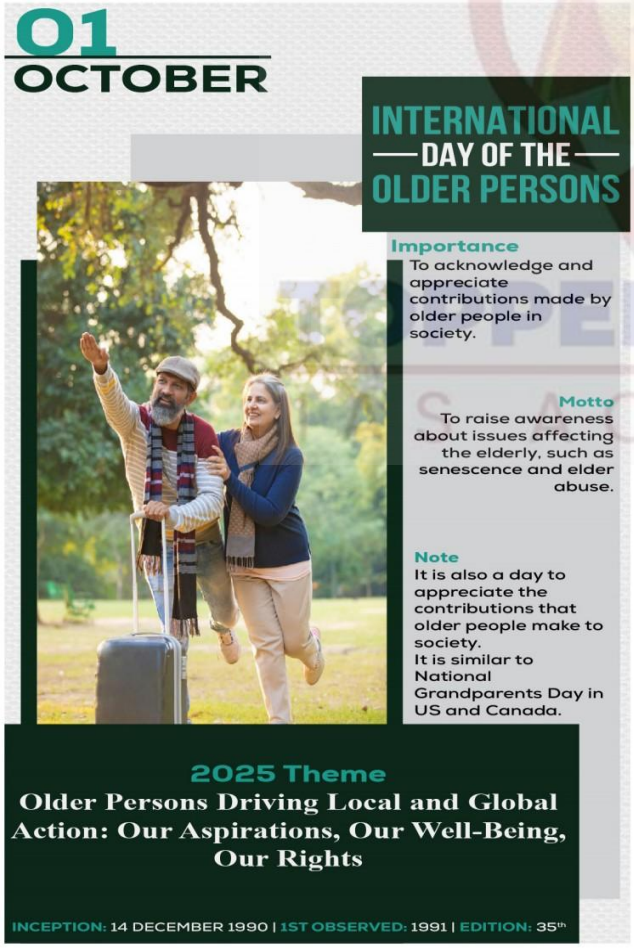

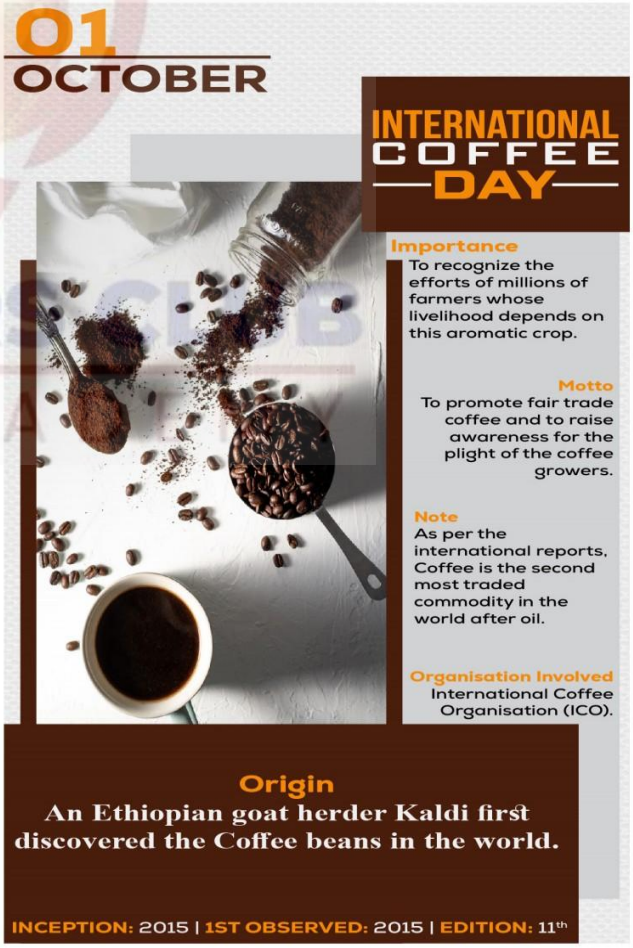

अर्थव्यवस्था एवं व्यापार

ग्लोबल फ़ाइनेंस पत्रिका द्वारा भारतीय स्टेट बैंक को 'विश्व का सर्वश्रेष्ठ उपभोक्ता बैंक 2025' और 'भारत का सर्वश्रेष्ठ बैंक' चुना गया

देश के सबसे बड़े सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) ने न्यूयॉर्क में विश्व बैंक और आईएमएफ की वार्षिक बैठकों के साथ आयोजित ग्लोबल फ़ाइनेंस बेस्ट बैंक अवार्ड्स 2025 में दो प्रमुख वैश्विक सम्मान अर्जित किए हैं। एसबीआई को डिजिटल नवाचार, ग्राहक सेवा और वित्तीय समावेशन में उत्कृष्टता के लिए 'विश्व का सर्वश्रेष्ठ उपभोक्ता बैंक 2025' और 'भारत का सर्वश्रेष्ठ बैंक 2025' के खिताब से सम्मानित किया गया।

पुरस्कारों के बारे में:

ये पुरस्कार न्यूयॉर्क स्थित एक प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय वित्तीय पत्रिका, ग्लोबल फ़ाइनेंस द्वारा प्रदान किए गए, जो दुनिया भर के उत्कृष्ट बैंकिंग संस्थानों को प्रतिवर्ष सम्मानित करती है।

एसबीआई की यह मान्यता निम्नलिखित क्षेत्रों में उसकी सफलता को दर्शाती है:

- विश्व स्तरीय उपभोक्ता बैंकिंग अनुभव प्रदान करना
- डिजिटल बैंकिंग और नवाचार को बढ़ावा देना
- भारत के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में वित्तीय समावेशन को आगे बढ़ाना

एसबीआई की उपलब्धियाँ और डिजिटल परिवर्तन:

- ग्राहक आधार: 52 करोड़ ग्राहक
- प्रतिदिन नए ग्राहक: लगभग 65,000
- प्रमुख ऐप उपयोगकर्ता: एसबीआई के मोबाइल बैंकिंग ऐप पर 10 करोड़ से ज़्यादा उपयोगकर्ता, जिनमें से 1 करोड़ दैनिक सक्रिय उपयोगकर्ता हैं
- डिजिटल रणनीति: "डिजिटल पहले, उपभोक्ता पहले" के आदर्श वाक्य के तहत संचालित
- एसबीआई समाज के हर वर्ग की सेवा के उद्देश्य से एआई-संचालित बैंकिंग, यूपीआई सेवाओं और वित्तीय समावेशन कार्यक्रमों के एकीकरण में अग्रणी बना हुआ है।

ग्लोबल फाइनेंस पत्रिका के बारे में:

- स्थापना: 1987
- मुख्यालय: न्यूयॉर्क, अमेरिका
- फ़ोकस: वैश्विक बैंकिंग, वित्त और निवेश संबंधी अंतर्दृष्टि
- पुरस्कारों का उद्देश्य: दुनिया भर में वित्तीय सेवाओं, नवाचार और प्रदर्शन में उत्कृष्टता को मान्यता देना

भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) के बारे में:

स्थापना: 1 जुलाई 1955 (इंपीरियल बैंक ऑफ इंडिया के राष्ट्रीयकरण के बाद, एसबीआई के रूप में)
मुख्यालय: मुंबई, महाराष्ट्र
अध्यक्ष (2025): सी. एस. सेट्टी
प्रमुख सहायक कंपनियाँ: एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस, एसबीआई म्यूचुअल फंड, एसबीआई कार्ड्स, एसबीआई कैपिटल मार्केट्स

भारत टैक्सी: भारत की पहली सहकारी कैब सेवा शुरू

ओला और उबर जैसे निजी कैब ऑपरेटरों के खिलाफ बढ़ती शिकायतों को दूर करने के लिए, भारत सरकार ने देश की पहली सहकारी-आधारित टैक्सी सेवा, भारत टैक्सी शुरू की है। इस पहल का उद्देश्य पारदर्शिता, ड्राइवरों के लिए उचित आय और यात्रियों के लिए विश्वसनीय सेवा सुनिश्चित करना है।

भारत टैक्सी की मुख्य विशेषताएँ:

- सहकारी मॉडल: ड्राइवर कर्मचारी नहीं, बल्कि सह-मालिक होते हैं और सहकार टैक्सी कोऑपरेटिव लिमिटेड के तहत काम करते हैं।
- ड्राइवरों के लाभ: निजी ऑपरेटरों द्वारा लिए जाने वाले उच्च कमीशन को समाप्त करता है; ड्राइवरों को मामूली सदस्यता शुल्क के बाद 100% आय प्राप्त होती है।
- सरकारी समर्थन: राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस प्रभाग (NeGD) के सहयोग से सहकारिता मंत्रालय द्वारा विकसित।

पायलट लॉन्च और विस्तार:

- पायलट चरण: नवंबर 2025 में दिल्ली में 650 ड्राइवरों के साथ।
- राष्ट्रीय स्तर पर रोलआउट: दिसंबर 2025, मुंबई, पुणे, भोपाल, लखनऊ और जयपुर सहित विभिन्न शहरों में 5,000 ड्राइवरों को लक्षित करते हुए।

परिचालन संरचना:

अमूल के प्रबंध निदेशक जयेन मेहता की अध्यक्षता वाली एक परिषद द्वारा प्रबंधित, जिसमें आठ सहकारी नेता भी शामिल हैं।
लाभ-संचालित इकाई के बजाय एक सामूहिक स्वामित्व मॉडल के रूप में कार्य करता है।

ऐप और तकनीकी विशेषताएँ:

- एंड्रॉइड और आईओएस प्लेटफ़ॉर्म पर उपलब्ध मोबाइल एप्लिकेशन।
- हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती और मराठी में बहुभाषी समर्थन।
- पारदर्शी सदस्यता और बुकिंग प्रणाली के साथ उपयोगकर्ता के अनुकूल इंटरफ़ेस।

महत्व:

- भारत में निजी कैब एग्रीगेटर्स के एकाधिकार को चुनौती देता है।
- चालक कल्याण को बढ़ावा देता है और यात्री विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है।
- सहकारिता मंत्रालय के तहत सहकारी-आधारित आर्थिक मॉडल के लिए सरकार के व्यापक प्रयास के अनुरूप है।

ईपीएफओ ने आंशिक निकासी नियमों को आसान बनाया; सदस्य अब ईपीएफ शेष राशि का 100% तक निकाल सकते हैं

वेतनभोगी कर्मचारियों के जीवन को सुगम बनाने के लिए एक बड़े सुधार के तहत, कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने कर्मचारी भविष्य निधि (ईपीएफ) योजना के तहत आंशिक निकासी के नियमों को सरल और उदार बनाया है। इस निर्णय से अब ईपीएफ सदस्य निर्दिष्ट शर्तों के तहत अपने ईपीएफ शेष राशि का 100% तक निकाल सकते हैं।

निर्णय की मुख्य विशेषताएँ

- पूर्ण निकासी की अनुमति: सदस्य अब अपनी ईपीएफ बचत का 100% तक निकाल सकते हैं, जिससे वित्तीय लचीलापन और सेवानिवृत्ति सुरक्षा बढ़ेगी।
- सरलीकृत प्रक्रिया: तेज़ और अधिक पारदर्शी दावा निपटान सुनिश्चित करने के लिए निकासी प्रक्रिया को डिजिटल रूप से सरल बनाया गया है।
- जीवन को आसान बनाने का उद्देश्य: इस कदम का उद्देश्य आपात स्थितियों में वित्तीय राहत प्रदान करना और प्रक्रियागत देरी को कम करना है।

RBI ने थोक CBDC का उपयोग करके वित्तीय परिसंपत्तियों को टोकनाइज़ करने के लिए एकीकृत बाज़ार इंटरफ़ेस (UMI) लॉन्च किया

भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) ने एकीकृत बाज़ार इंटरफ़ेस (UMI) पेश किया है, जो एक अगली पीढ़ी का वित्तीय बाज़ार ढाँचा है जिसे थोक केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्रा (CBDC) के माध्यम से परिसंपत्तियों के टोकनाइज़ेशन और निपटान को सक्षम करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह घोषणा RBI के गवर्नर संजय मल्होत्रा ने ग्लोबल फिनटेक फेस्ट (GFF) 2025 में की।

मुख्य विशेषताएँ:

- उद्देश्य: UMI का उद्देश्य वास्तविक दुनिया की वित्तीय परिसंपत्तियों को ब्लॉकचेन पर डिजिटल टोकन में परिवर्तित करना है, जिससे आंशिक स्वामित्व, पारदर्शी व्यापार और स्मार्ट अनुबंध-आधारित निपटान संभव हो सके।
- परिणाम: प्रारंभिक पायलट परिणामों ने बेहतर बाज़ार दक्षता और पारदर्शिता दिखाई।

खाता एग्रीगेटर (AA) ढाँचा:

RBI ने खाता एग्रीगेटर (AA) पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने पर भी ज़ोर दिया, जो एक गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी (NBFC) ढाँचा है जो व्यक्तियों को विनियमित संस्थाओं के साथ वित्तीय डेटा को सुरक्षित रूप से साझा करने में सक्षम बनाता है।

चार नए डिजिटल उत्पाद लॉन्च:

1. UPI HELP - एक AI-आधारित लघु भाषा मॉडल (SLM) जिसे उपयोगकर्ताओं को लेनदेन की जाँच करने, शिकायत दर्ज करने और जनादेश प्रबंधित करने में मदद करने के लिए आंतरिक रूप से विकसित किया गया है।
2. UPI के साथ IoT भुगतान - UPI का उपयोग करके निर्बाध मशीन-टू-मशीन (IoT) भुगतान सक्षम करता है।
3. बैंकिंग कनेक्ट - एक एकीकृत इंटरऑपरेबल नेट बैंकिंग प्लेटफ़ॉर्म जो व्यापारी ऑनबोर्डिंग, निपटान और विवाद समाधान को सरल बनाता है।
4. UPI रिज़र्व पे - उपयोगकर्ताओं को ई-कॉमर्स, फ़ूड डिलीवरी और कैब जैसे प्लेटफ़ॉर्म पर आवर्ती भुगतानों के लिए क्रेडिट लाइन या कार्ड सीमा के कुछ हिस्से को ब्लॉक करने की अनुमति देता है।

महत्व:

- भारत के डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढाँचे (DPI) को मज़बूत करता है।
- अकाउंट एग्रीगेटर्स के माध्यम से वित्तीय समावेशन और डेटा-संचालित ऋण को बढ़ावा देता है।
- AI और IoT एकीकरण के साथ डिजिटल भुगतान सुरक्षा और उपयोगकर्ता अनुभव को बेहतर बनाता है।

RBI ने डिजिटल रुपया परीक्षण के लिए रिटेल सैंडबॉक्स लॉन्च किया

भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) ने रिटेल सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी (CBDC) सैंडबॉक्स लॉन्च किया है, जिससे फिनटेक कंपनियाँ ई-रुपी के लिए नवीन समाधान विकसित और परीक्षण कर सकेंगी। RBI के मुख्य महाप्रबंधक सुवेंदु पति द्वारा घोषित इस पहल का उद्देश्य नियंत्रित वातावरण में डिजिटल मुद्रा अनुप्रयोगों के लिए परीक्षण वातावरण का विस्तार करना है। भारत का पहला रिटेल ई-रुपी पायलट प्रोजेक्ट 1 दिसंबर, 2022 को लॉन्च किया गया, जो देश में सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी (CBDC) को अपनाने की दिशा में एक कदम है। अब तक, ई-रुपी के देश भर में लगभग 70 लाख उपयोगकर्ता हो चुके हैं।

खुदरा सैंडबॉक्स का उद्देश्य:

- डिजिटल भुगतान में नवाचार को प्रोत्साहित करना।
- सुरक्षित, कुशल और समावेशी डिजिटल लेनदेन सुनिश्चित करना।
- CBDC पारिस्थितिकी तंत्र के साथ फिनटेक नवाचारों के एकीकरण को सुगम बनाना।
- इसका एक भाग: RBI का व्यापक फिनटेक नवाचार और नियामक सैंडबॉक्स ढाँचा।

केंद्र ने ऑन-डिवाइस बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण और नई UPI सुविधाएँ पेश कीं

भारत सरकार ने ग्लोबल फिनटेक फेस्टिवल (GFF) 2025 में कई नई डिजिटल भुगतान सुविधाओं की घोषणा की है, जिनका उद्देश्य UPI लेनदेन को तेज़, अधिक सुरक्षित और उपयोगकर्ता-अनुकूल बनाना है। प्रमुख घोषणाओं में शामिल हैं:

- ऑन-डिवाइस बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण के साथ UPI
- UPI में आधार-आधारित चेहरा प्रमाणीकरण
- UPI कैश पॉइंट्स पर UPI का उपयोग करके माइक्रो एटीएम के माध्यम से नकद निकासी

- इस लॉन्च की घोषणा वित्त मंत्रालय के वित्तीय सेवा विभाग (DFS) के सचिव, IAS श्री एम. नागराजू ने की।

ऑन-डिवाइस बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण के साथ UPI

- कार्य: उपयोगकर्ताओं को अपने स्मार्टफ़ोन पर फ़िंगरप्रिंट या फेस अनलॉक का उपयोग करके UPI भुगतानों को प्रमाणित करने की अनुमति देता है, जिससे मैन्युअल रूप से UPI पिन दर्ज करने की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।
- वैकल्पिक सुविधा: उपयोगकर्ता प्रमाणीकरण प्राथमिकताओं पर नियंत्रण बनाए रखते हुए इस मोड को चुन सकते हैं।
- सुरक्षा: जारीकर्ता बैंकों द्वारा क्रिप्टोग्राफ़िक जाँच के माध्यम से लेनदेन का स्वतंत्र रूप से सत्यापन किया जाता है, जिससे उच्च सुरक्षा सुनिश्चित होती है।
- लाभ: लेनदेन को तेज़, सहज और सुरक्षित बनाता है, जिससे बार-बार पिन डालने की आवश्यकता कम हो जाती है।

UPI पिन सेटअप के लिए आधार-आधारित चेहरा प्रमाणीकरण

- उद्देश्य: यह उपयोगकर्ताओं को UIDAI के FaceRD ऐप के माध्यम से आधार-लिंक्ड चेहरे की पहचान का उपयोग करके UPI पिन सेट या रीसेट करने में सक्षम बनाता है।
- लाभ: डेबिट कार्ड विवरण या OTP सत्यापन की आवश्यकता को समाप्त करता है, जिससे ऑनबोर्डिंग तेज़ और अधिक समावेशी हो जाती है।
- लक्षित उपयोगकर्ता: पहली बार उपयोगकर्ता, वरिष्ठ नागरिक और वे लोग जिनके पास कार्ड तक आसान पहुँच नहीं है।
- भविष्य का दायरा: आधार-आधारित चेहरा प्रमाणीकरण को बाद में लेनदेन को सीधे प्रमाणित करने के लिए विस्तारित किया जाएगा।

माइक्रो एटीएम पर UPI के माध्यम से नकद निकासी

- विशेषता: उपयोगकर्ता UPI का उपयोग करके UPI कैश पॉइंट्स (माइक्रो एटीएम/बिजनेस कॉरेस्पोंडेंट टचपॉइंट्स) पर नकद निकाल सकते हैं।
- महत्व: वित्तीय समावेशन को बढ़ाता है और पारंपरिक एटीएम निकासी का एक उपयोगकर्ता-अनुकूल विकल्प प्रदान करता है।
- एकीकरण: ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में नकद निकासी को आसान बनाने के लिए UPI पारिस्थितिकी तंत्र की बहुमुखी प्रतिभा का लाभ उठाता है।

RBI ने ग्लोबल फिनटेक फेस्ट 2025 में अगली पीढ़ी के डिजिटल भुगतान फ़ीचर का अनावरण किया

ग्लोबल फिनटेक फेस्ट (GFF) 2025 में, भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) और वित्तीय सेवा विभाग (DFS) ने भारत के वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र में सुरक्षा, पहुँच और उपयोगकर्ता सुविधा को बढ़ाने के उद्देश्य से कई अग्रणी डिजिटल भुगतान नवाचारों की घोषणा की।

इन घोषणाओं में शामिल हैं:

- संयुक्त खातों के लिए UPI मल्टी-सिग्नेटरी
- स्मार्ट ग्लास के माध्यम से UPI लाइट (हैंड्स-फ़्री भुगतान)
- ऑन-डिवाइस बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण
- UPI पिन सेटअप के लिए आधार-आधारित फेस वेरिफिकेशन
- माइक्रो एटीएम (UPI कैश पॉइंट्स) के माध्यम से UPI-सक्षम नकद निकासी
- भारत कनेक्ट के साथ FX रिटेल प्लेटफ़ॉर्म का एकीकरण
- ये पहल भारत की नकदी रहित और समावेशी डिजिटल अर्थव्यवस्था की ओर एक और बड़ी छलांग हैं।

UPI मल्टी-सिग्नेटरी फ़ीचर

- आरबीआई के डिप्टी गवर्नर टी. रबी शंकर द्वारा लॉन्च किया गया
- उद्देश्य: संयुक्त खातों से भुगतान को सक्षम बनाता है जिसके लिए कई अनुमोदनों की आवश्यकता होती है।
- मुख्य लाभ: सभी हस्ताक्षरकर्ता लेनदेन को मंज़ूरी देने के लिए किसी भी UPI-सक्षम ऐप का उपयोग कर सकते हैं, जिससे सभी प्लेटफ़ॉर्म पर अंतर-संचालन सुनिश्चित होता है।
- लाभ: साझा खातों का प्रबंधन करने वाले परिवारों, साझेदारियों और छोटे व्यवसायों के लिए उपयोगी।

स्मार्ट ग्लास के माध्यम से UPI

- विशेषता: पहनने योग्य स्मार्ट ग्लास के माध्यम से हाथों से मुक्त UPI लाइट लेनदेन।
- यह कैसे काम करता है: उपयोगकर्ता भुगतान करने के लिए QR कोड स्कैन कर सकते हैं और वॉइस कमांड का उपयोग कर सकते हैं - फ़ोन या पिन की आवश्यकता नहीं।
- महत्व: पहनने योग्य उपकरणों के साथ पहली बार UPI एकीकरण को चिह्नित करता है, जो परिवेशी भुगतान को बढ़ावा देता है।
- तकनीकी नोट: CBS (कोर बैंकिंग सिस्टम) के बाहर संचालित होता है, जिससे सिस्टम लोड कम होता है और दक्षता में सुधार होता है।

ऑन-डिवाइस बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण

- घोषणाकर्ता: DFS सचिव एम. नागराजू
- कार्य: उपयोगकर्ता UPI पिन के बजाय फ़िंगरप्रिंट सेंसर या फ़ेस अनलॉक का उपयोग करके भुगतान प्रमाणित कर सकते हैं।
- सुरक्षा: धोखाधड़ी से सुरक्षा के लिए बैंक की ओर से क्रिप्टोग्राफ़िक सत्यापन का उपयोग करता है।
- उद्देश्य: उपयोगकर्ता की सुविधा और लेनदेन सुरक्षा दोनों को बढ़ाता है।

UPI पिन सेटअप के लिए आधार-आधारित चेहरा सत्यापन

- प्रौद्योगिकी भागीदार: UIDAI का FaceRD ऐप
- विशेषता: उपयोगकर्ता डेबिट कार्ड विवरण या OTP के बिना, चेहरे की पहचान का उपयोग करके UPI पिन सेट/रीसेट कर सकते हैं।
- लक्षित उपयोगकर्ता: वरिष्ठ नागरिक, पहली बार उपयोग करने वाले और कार्ड तक आसान पहुँच न रखने वाले लोग।

- भविष्य में उपयोग: UPI लेनदेन को प्रमाणित करने के लिए भी इसका विस्तार किया जाएगा।

UPI कैश पॉइंट - UPI के माध्यम से नकद निकासी

- उद्देश्य: UPI का उपयोग करके माइक्रो एटीएम के माध्यम से नकद निकासी की सुविधा।
- प्रणाली: उपयोगकर्ता नकद निकालने के लिए एक बिज़नेस कॉरेस्पोंडेंट (BC) द्वारा दिखाए गए डायनामिक QR कोड को स्कैन करते हैं।
- महत्व: ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में वित्तीय समावेशन का विस्तार।
- पूरक प्रणालियाँ: आधार-आधारित AePS और कार्ड-आधारित ATM लेनदेन के साथ काम करती हैं।
- लाभ: UPI पारिस्थितिकी तंत्र के माध्यम से एक सरल, कार्ड-मुक्त नकद निकासी विकल्प प्रदान करता है।

भारत कनेक्ट के साथ विदेशी मुद्रा खुदरा प्लेटफ़ॉर्म का एकीकरण

- उद्देश्य: खुदरा ग्राहकों को बीबीपीएस (भारत बिल भुगतान प्रणाली) से जुड़े बैंकिंग या भुगतान ऐप्स के माध्यम से सीधे अमेरिकी डॉलर तक पहुँचने और खरीदने की सुविधा प्रदान करना।
- प्रभाव: खुदरा उपयोगकर्ताओं के लिए विदेशी मुद्रा लेनदेन को सरल बनाना, डिजिटल वित्तीय पहुँच को बढ़ावा देना।

भारत-कतर डिजिटल साझेदारी को मज़बूत करने के लिए केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल द्वारा कतर में UPI का शुभारंभ

केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कतर के दोहा में भारत के एकीकृत भुगतान इंटरफ़ेस (UPI) का शुभारंभ किया, जो दोनों देशों के बीच डिजिटल और वित्तीय सहयोग को गहरा करने की दिशा में एक बड़ा कदम है। यह पहल भारतीय नागरिकों और कतर में कार्यरत व्यवसायों के लिए वास्तविक समय में, कम लागत वाले डिजिटल भुगतान को सक्षम बनाएगी, जिससे व्यापार और लोगों के बीच संपर्क को बढ़ावा मिलेगा।

UPI के बारे में:

- भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) के अंतर्गत भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (NPCI) द्वारा विकसित
- 2016 में लॉन्च (2025 तक 9 वर्ष पूर्व)
- वर्तमान में भारत के 85% डिजिटल भुगतान और वैश्विक डिजिटल लेनदेन का लगभग 50% हिस्सा UPI के माध्यम से होता है
- सालाना 640 अरब से ज़्यादा लेनदेन संसाधित करता है

UPI के हालिया अंतर्राष्ट्रीय विस्तार:

- सिंगापुर (PayNow के साथ)
- UAE
- फ़्रांस
- श्रीलंका
- नेपाल

अब कतर एक और अंतर्राष्ट्रीय भागीदार के रूप में शामिल हो रहा है

- कतर का सहयोगी मॉल: लुलु मॉल - भारतीय मूल के उद्यमी यूसुफ अली द्वारा स्थापित एक प्रमुख खुदरा श्रृंखला
- महत्व: डिजिटल इंडिया पहल के तहत भारत के डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (DPI) की पहुँच को मज़बूत करता है और सीमा पार वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देता है

आरबीआई ने रेपो रेट को 5.5% पर अपरिवर्तित रखा, मौद्रिक नीति का रुख 'न्यूट्रल'

भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने रेपो रेट को 5.5% पर स्थिर रखा है और न्यूट्रल नीतिगत रुख बनाए रखा है। यह लगातार दूसरी बैठक है जब दरों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। यह निर्णय वैश्विक अनिश्चितताओं, जिसमें अमेरिका के टैरिफ का असर भी शामिल है, के बीच लिया गया है।

नीतिगत दरें एक नज़र में

- रेपो रेट: 5.50%
- स्टैंडिंग डिपॉजिट सुविधा दर: 5.25%
- मार्जिनल स्टैंडिंग सुविधा दर: 5.75%
- बैंक दर: 5.75%
- फिक्स्ड रिवर्स रेपो रेट: 3.35%
- CRR: 3.75%
- SLR: 18.00%

महंगाई दर का अनुमान घटाया

RBI को उम्मीद है कि इस वित्त वर्ष में CPI महंगाई दर 2.6% रहेगी, जो पहले के अनुमान से कम है। इसका कारण GST सुधार है, जिससे रोजमर्रा की वस्तुओं पर टैक्स कम हो गया है।

GDP वृद्धि दर का अनुमान बढ़ाया

भारत की GDP वृद्धि दर FY26 में 6.8% रहने का अनुमान है, जो पहले के अनुमान से अधिक है। मजबूत निजी खपत, अच्छा मानसून और GST सुधार अर्थव्यवस्था की वृद्धि में मदद कर रहे हैं।

आरबीआई ने इंडियन ओवरसीज बैंक पर लगभग 32 लाख रुपये का जुर्माना लगाया

भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने इंडियन ओवरसीज बैंक (IOB) पर प्रायोरिटी सेक्टर लेंडिंग (PSL) से संबंधित कुछ नियमों का पालन न करने के लिए 31.80 लाख रुपये का जुर्माना लगाया है - खासकर लक्ष्य और वर्गीकरण के मामले में।

जुर्माने का कारण

निगरानी के दौरान, RBI को पता चला कि IOB ने PSL खातों में लोन से संबंधित शुल्क वसूला था, जबकि स्वीकृत लोन राशि 25,000 रुपये से कम थी। बैंक को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया। IOB के जवाब, अतिरिक्त विवरण और व्यक्तिगत सुनवाई के दौरान दिए गए मौखिक स्पष्टीकरण की समीक्षा के बाद, RBI ने आरोप को सही माना और जुर्माना लगाने का फैसला किया।

कानूनी अधिकार और स्पष्टीकरण

यह जुर्माना बैंकिंग रेगुलेशन एक्ट, 1949 के सेक्शन 47A(1)(c) और सेक्शन 46(4)(i) व 51(1) के तहत दिए गए अधिकारों के आधार पर लगाया गया है। RBI ने स्पष्ट किया कि यह कार्रवाई नियामक अनुपालन में कमियों के लिए है और IOB और उसके ग्राहकों के बीच किसी भी लेनदेन या समझौते की वैधता को चुनौती नहीं देती है।

इंडियन ओवरसीज बैंक

- स्थापना: 10 फरवरी 1937
- संस्थापक: एम. चिदंबरम चेटीयर
- मुख्यालय: चेन्नई, तमिलनाडु, भारत
- MD & CEO: अजय कुमार श्रीवास्तव

नियमों का पालन न करने पर आरबीआई ने कई सहकारी बैंकों पर जुर्माना लगाया

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने देश भर के पांच सहकारी बैंकों पर नियमों के उल्लंघन के लिए वित्तीय जुर्माना लगाया है। आरबीआई ने इन बैंकों का निरीक्षण किया था, जिसमें हाउसिंग फाइनेंस, केवाईसी नियमों, साइबर सुरक्षा और प्रोडक्ट पारदर्शिता जैसे क्षेत्रों में नियमों का पालन न करने की बात सामने आई।

जुर्माने की जानकारी:

गैत्री कोऑपरेटिव अर्बन बैंक लिमिटेड, जगतीयाल (तेलंगाना):

- जुर्माना: 10 लाख रुपये
- उल्लंघन: उचित जानकारी दिए बिना बीमा उत्पाद बेचना, वित्तीय साधनों के विपणन और वितरण से संबंधित आरबीआई नियमों का उल्लंघन करना।

मकरापुरा इंडस्ट्रियल एस्टेट कोऑपरेटिव बैंक लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात):

- जुर्माना: 2 लाख रुपये
- उल्लंघन: केवाईसी नियमों का पालन न करना और शहरी सहकारी बैंकों के लिए अनिवार्य साइबर सुरक्षा उपायों को लागू न करना।

साउथ कैनरा डिस्ट्रिक्ट सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंक लिमिटेड, कर्नाटक:

- जुर्माना: 1.5 लाख रुपये
- उल्लंघन: हाउसिंग फाइनेंस एक्सपोजर में निर्धारित सीमा से अधिक राशि देना और दूसरी सहकारी संस्था में अवैध रूप से शेयर रखना, जो बैंकिंग विनियमन अधिनियम का उल्लंघन है।

गुंटूर डिस्ट्रिक्ट कोऑपरेटिव सेंट्रल बैंक लिमिटेड, आंध्र प्रदेश:

- जुर्माना: 50,000 रुपये
- उल्लंघन: निर्धारित समय के भीतर केवाईसी विवरण को सेंट्रल केवाईसी रिकॉर्ड रजिस्ट्री (CKYCR) पर अपलोड न करना।

तमिलनाडु सर्किल पोस्टल कोऑपरेटिव बैंक लिमिटेड:

- जुर्माना: 50,000 रुपये
- उल्लंघन: पर्यवेक्षी कार्रवाई ढांचे के तहत निर्धारित सीमा से अधिक जमा ब्याज दरें देना।

आरबीआई का स्पष्टीकरण:

आरबीआई ने स्पष्ट किया है कि ये जुर्माना केवल नियमों के पालन में कमियों से संबंधित हैं और बैंकों और उनके ग्राहकों के बीच किसी भी लेन-देन या समझौते की वैधता पर सवाल नहीं उठाते हैं। केंद्रीय बैंक ने आगे कहा कि ये कार्रवाई भविष्य में किसी भी अतिरिक्त कार्रवाई के लिए बाध्य नहीं है।

भारत-मंगोलिया रणनीतिक साझेदारी को मज़बूत करते हुए: प्रमुख क्षेत्रों में 10 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर

मंगोलियाई राष्ट्रपति खुरेलसुख उखना की नई दिल्ली यात्रा के दौरान भारत और मंगोलिया ने 10 समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। ये समझौता ज्ञापन मानवीय सहायता, विरासत पुनरुद्धार, आव्रजन, भूविज्ञान और खनिज संसाधन, सहकारिता और डिजिटल समाधान जैसे क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा देते हैं। दोनों नेताओं - प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति खुरेलसुख उखना - ने भारत-मंगोलिया राजनयिक संबंधों (1955-2025) की 70वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में स्मारक डाक टिकट भी जारी किए।

प्रमुख घोषणाएँ:

- प्रधानमंत्री मोदी ने मंगोलियाई नागरिकों के लिए निःशुल्क ई-वीज़ा की घोषणा की।
- भारत में मंगोलियाई सांस्कृतिक राजदूतों की वार्षिक यात्रा भारत सरकार द्वारा प्रायोजित की जाएगी।
- नालंदा-गंडन मठ संपर्क के माध्यम से सांस्कृतिक संबंधों को मज़बूत किया गया, जिससे साझा बौद्ध विरासत पर प्रकाश डाला गया।
- दोनों देशों ने एक स्वतंत्र, खुले, समावेशी और नियम-आधारित हिंद-प्रशांत क्षेत्र और वैश्विक दक्षिण की आवाज़ को बुलंद करने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

आर्थिक और सामरिक सहयोग:

- भारत ने मंगोलिया के एक विश्वसनीय विकास भागीदार के रूप में अपनी भूमिका की पुष्टि की।
- मंगोलिया में तेल रिफाइनरी परियोजना, जो भारत की 1.7 बिलियन डॉलर की ऋण सहायता से निर्मित है, मंगोलिया की ऊर्जा सुरक्षा को बढ़ाएगी।
- एक मंगोलियाई एयरलाइन जल्द ही अमृतसर और नई दिल्ली के लिए चार्टर उड़ानें शुरू करेगी, जिससे पर्यटन और व्यावसायिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिलेगा।
- दोनों देशों ने रणनीतिक साझेदारी को मज़बूत करने पर एक संयुक्त वक्तव्य को अपनाया, जिसमें लचीली आपूर्ति श्रृंखलाओं, महत्वपूर्ण खनिजों और डिजिटल सहयोग पर ध्यान केंद्रित किया गया।

यात्रा के बारे में:

- यह यात्रा राष्ट्रपति खुरेलसुख उखना की राष्ट्रपति के रूप में पहली भारत यात्रा है।
- उन्होंने राजघाट पर श्रद्धांजलि अर्पित की और राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात की, जिन्होंने उनके सम्मान में एक राजकीय भोज का आयोजन किया।

- मंगोलियाई प्रतिनिधिमंडल में कैबिनेट मंत्री, सांसद, वरिष्ठ अधिकारी, व्यापारिक नेता और सांस्कृतिक प्रतिनिधि शामिल थे।

पृष्ठभूमि और कूटनीतिक संदर्भ:

- भारत और मंगोलिया ने 1955 में राजनयिक संबंध स्थापित किए।
- मंगोलिया भारत के साथ गहरे सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संबंध साझा करता है, विशेष रूप से बौद्ध धर्म और नालंदा विश्वविद्यालय के प्रभाव के माध्यम से।
- मंगोलिया भारत की "एक्ट ईस्ट पॉलिसी" और हिंद-प्रशांत रणनीति में एक प्रमुख साझेदार है।
- प्रधानमंत्री मोदी की उलानबटार यात्रा के दौरान 2015 में इस संबंध को रणनीतिक साझेदारी में उन्नत किया गया।

मंगोलिया:

- राजधानी: उलानबटार।
- मुद्रा: तोग्रोग (MNT)।
- मंगोलिया के राष्ट्रपति: खुरेलसुख उखना।
- मंगोलिया में भारत के राजदूत: अतुल मल्हारी गोत्सुर्वे।
- मंगोलिया में नालंदा से जुड़ा पहला बौद्ध मठ: गंडन तेगचेनलिंग मठ।

सूडान और दक्षिण सूडान ने तेल, सुरक्षा और व्यापार सहयोग को मज़बूत किया

सूडान और दक्षिण सूडान ने महत्वपूर्ण तेल अवसंरचना की संयुक्त रूप से सुरक्षा के लिए एक रणनीतिक समझौता किया है, जिसमें तेल क्षेत्र और दक्षिण सूडानी कच्चे तेल को पोर्ट सूडान तक पहुँचाने वाले केंद्रीय पाइपलाइन स्टेशन शामिल हैं। इस समझौते का उद्देश्य तकनीकी क्षमता को बढ़ाना, तेल उत्पादन में वृद्धि करना और निर्यात मार्ग पर सुरक्षा सुनिश्चित करना है।

आर्थिक महत्व:

- दक्षिण सूडान अपनी अर्थव्यवस्था के लिए तेल निर्यात पर बहुत अधिक निर्भर है।
- सूडान को अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में तेल परिवहन के लिए पारगमन शुल्क मिलता है।

पोर्ट सूडान में प्रस्तावित मुक्त व्यापार क्षेत्र का उद्देश्य है:

- सीमा पार व्यापार को बढ़ावा देना
- दक्षिण सूडान में माल की आवाजाही को सुगम बनाना
- तेल आपूर्ति श्रृंखला को सहयोग प्रदान करना

संदर्भ और महत्व

- सूडान सेना और अर्धसैनिक रैपिड सपोर्ट फ़ोर्स के बीच गृहयुद्ध का सामना कर रहा है।
- दक्षिण सूडान व्यापक बाढ़ का सामना कर रहा है, जिससे 6,39,000 से ज़्यादा लोग प्रभावित हुए हैं और 19 लोगों की मौत हुई है (संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट)।
- इन समझौतों का उद्देश्य मौजूदा संकटों के बावजूद ऊर्जा, सुरक्षा और व्यापार क्षेत्रों को स्थिर करना है।

सूडान:

- राजधानी: खार्तूम
- प्रधानमंत्री: कामिल इदरीस
- मुद्रा: सूडानी पाउंड

दक्षिण सूडान:

- राजधानी: जुबा
- राष्ट्रपति: साल्वा कीर मयार्दित
- मुद्रा: दक्षिण सूडानी पाउंड

चीन को इस गठबंधन का लाभ उठाकर सऊदी अरब और पाकिस्तान में अपना प्रभाव बढ़ाने में मदद मिल सकती है।

रणनीतिक अस्पष्टताएँ

इस समझौते में "आक्रामकता" को अनिर्धारित छोड़ दिया गया है—इसमें पारंपरिक हमले, आतंकवाद या साइबर हमले शामिल हो सकते हैं। यह गलत धारणा और गलत आकलन के जोखिम को बढ़ाता है, जबकि रियाद को कूटनीति में लचीलापन प्रदान करता है।

व्यापक संदर्भ

इस्लामिक नाटो का विचार क्षेत्रीय अस्थिरता के बीच, विशेष रूप से सितंबर 2025 में कतर की राजधानी दोहा पर इज़राइल के हमले के बाद उत्पन्न हुआ है। यह गठबंधन मुस्लिम देशों के लिए एकजुटता और पारस्परिक रक्षा का प्रदर्शन करने के लिए एक प्रतीकात्मक मंच के रूप में काम कर सकता है।

भारत और भूटान ने पहली सीमा पार रेलवे संपर्क के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

भारत और भूटान ने दोनों देशों के बीच पहली सीमा पार रेलवे संपर्क की स्थापना के लिए एक अंतर-सरकारी समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस समझौता ज्ञापन पर भूटानी विदेश सचिव ओम पेमा चोडेन की नई दिल्ली यात्रा के दौरान हस्ताक्षर किए गए, जहाँ उन्होंने भारतीय विदेश सचिव विक्रम मिस्री के साथ विचार-विमर्श किया।

रेलवे संपर्क परियोजनाएँ

₹4,033 करोड़ के कुल परिव्यय वाली दो सीमा पार रेलवे परियोजनाओं को अंतिम रूप दिया गया है।

कोकराझार (असम) - गेलेफू (भूटान):

- लंबाई: 69 किमी
- लागत: ₹3,456 करोड़

बानरहाट (पश्चिम बंगाल) - समत्से (भूटान):

- लंबाई: 20 किमी
- लागत: ₹577 करोड़
- इन परियोजनाओं में संपूर्ण निवेश भारत द्वारा किया जाएगा।
- ये परियोजनाएँ संपर्क, व्यापार और लोगों के बीच संपर्क को बढ़ाएँगी।

सरकार ने IAF के लिए 97 LCA Mk1A फाइटर जेट खरीदने के लिए HAL के साथ 62,370 करोड़ रुपये का समझौता किया

भारतीय रक्षा मंत्रालय ने हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (HAL) के साथ 97 तेजस Mk1A फाइटर जेट के लिए 62,370 करोड़ रुपये के बड़े कॉन्ट्रैक्ट को मंजूरी दे दी है। इस ऑर्डर में भारतीय वायु सेना (IAF) के लिए 68 सिंगल-सीट वाले लड़ाकू विमान और 29 दो-सीट वाले ट्रेनर विमान शामिल हैं, साथ ही आवश्यक उपकरण भी।

डिलीवरी शेड्यूल

जेट विमान 2027-28 वित्तीय वर्ष में IAF को मिलने लगेंगे, और छह साल में पूरी डिलीवरी की योजना है। इससे पहले 2021 में 83 तेजस Mk1A जेट के लिए 48,000 करोड़ रुपये का ऑर्डर दिया गया था, जो इंजन और रडार इंटीग्रेशन की दिक्कतों की वजह से कुछ देरी से डिलीवर हुआ।

देशी तकनीक को बढ़ावा

तेजस Mk1A में 64% से अधिक देशी सामग्री होगी, जो पहले के मॉडलों की तुलना में 67 अतिरिक्त स्थानीय रूप से बने कंपोनेंट होंगे। उत्तम AESA रडार, स्वयम् रक्षा कवच और आधुनिक कंट्रोल सरफेस एक्चुएटर जैसे उन्नत सिस्टम इन विमानों का हिस्सा होंगे।

HAL

- स्थापना: 22 दिसंबर 1940 (हिंदुस्तान एयरक्राफ्ट के रूप में); 1964 (हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स)
- मुख्यालय: बेंगलुरु, कर्नाटक
- संस्थापक: वालचंद हीराचंद
- अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक: डी.के. सुनील

लघु लेख

सरकार ने बुनियादी ढाँचे के विकास को बढ़ावा देने के लिए निजी क्षेत्र के लिए पीएम गतिशक्ति पोर्टल खोला

पीएम गतिशक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान (एनएमपी) के चार वर्ष पूरे होने पर, भारत सरकार ने पीएम गतिशक्ति डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म को निजी क्षेत्र के लिए खोल दिया। इस कदम का उद्देश्य अंतिम छोर तक पहुँच, बुनियादी ढाँचे के एकीकरण और सभी क्षेत्रों में डेटा-संचालित योजना को मज़बूत करना है। यह पोर्टल इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) के तहत भास्कराचार्य राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुप्रयोग और भू-सूचना विज्ञान संस्थान (BISAG-N) द्वारा विकसित किया गया था।

पीएम गतिशक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान को समझना

अक्टूबर 2021 में शुरू की गई, पीएम गतिशक्ति एनएमपी पाँच वर्षों के भीतर पूरे भारत में मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी और बुनियादी ढाँचे के विकास को बढ़ावा देने के लिए ₹100 लाख करोड़ की एक राष्ट्रीय पहल थी।

प्रमुख उद्देश्य

- विभिन्न परिवहन साधनों के बीच निर्बाध समन्वय सुनिश्चित करके रसद लागत को कम करना।
- वृहद-स्तरीय योजना को सूक्ष्म-स्तरीय कार्यान्वयन से जोड़ने वाली एक डिजिटल रीढ़ के रूप में कार्य करना।
- भारतमाला, सागरमाला और उड़ान जैसी प्रमुख बुनियादी ढाँचा योजनाओं को एकीकृत करना और औद्योगिक एवं आर्थिक क्षेत्रों को कुशलतापूर्वक जोड़ना।

पहल के मुख्य घटक

योजना सात प्रमुख क्षेत्रों - रेलवे, सड़क, बंदरगाह, जलमार्ग, हवाई अड्डे, जन परिवहन और रसद - पर केंद्रित थी, जिन्हें ऊर्जा, सूचना प्रौद्योगिकी, जल और सामाजिक बुनियादी ढाँचे द्वारा समर्थित किया गया था।

तकनीकी और संरचनात्मक विशेषताएँ

- एकीकृत भू-स्थानिक प्लेटफ़ॉर्म: मौजूदा और प्रस्तावित बुनियादी ढाँचे के वास्तविक समय दृश्य के लिए स्थानिक डेटा की 200 से अधिक परतों को एक एकल इंटरफ़ेस में एकीकृत किया गया।
- लक्षित आर्थिक क्षेत्र: क्षेत्रीय उत्पादकता को बढ़ावा देने के लिए कपड़ा समूहों, फार्मा केंद्रों, रक्षा गलियारों और कृषि क्षेत्रों पर केंद्रित।
- तकनीक-आधारित प्रबंधन: सटीक, डेटा-समर्थित योजना के लिए इसरो उपग्रह इमेजरी और BISAG-N द्वारा विकसित उन्नत GIS उपकरणों का उपयोग किया गया।

मिशन के अंतर्गत राष्ट्रीय लक्ष्य

- विमानन: कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए 200 नए हवाई अड्डों, हेलीपोर्ट और जल हवाई अड्डों का विकास।
- नवीकरणीय ऊर्जा: वित्त वर्ष 2025 तक नवीकरणीय क्षमता का 225 गीगावाट तक विस्तार और 17,000 किलोमीटर गैस पाइपलाइन बिछाना।
- विद्युत अवसंरचना: विद्युत पारेषण लाइनों का 454,200 सर्किट किलोमीटर तक विस्तार।
- राजमार्ग: राष्ट्रीय राजमार्ग नेटवर्क का 200,000 किलोमीटर तक विस्तार।
- रेल क्षेत्र: वित्त वर्ष 2025 तक रेल माल ढुलाई क्षमता में 1600 मिलियन टन की वृद्धि।

प्रमुख परिणाम और उपलब्धियाँ

- एकीकृत शासन मंच: समेकित परियोजना निष्पादन के लिए 1,600 से अधिक डेटा परतों के साथ 44 केंद्रीय मंत्रालयों और 36 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों को एकीकृत किया गया।
- कुशल परियोजना स्क्रीनिंग: नेटवर्क योजना समूह (एनपीजी) ने गतिशक्ति के बहु-मॉडल नियोजन सिद्धांतों का उपयोग करके 200 से अधिक बड़े पैमाने की परियोजनाओं का मूल्यांकन किया।
- सामाजिक अवसंरचना मानचित्रण: शिक्षा, स्वास्थ्य और कल्याणकारी परियोजनाओं के लिए प्लेटफ़ॉर्म का विस्तार किया, जिससे वंचित क्षेत्रों में स्कूलों, अस्पतालों और आँगनवाड़ियों की बेहतर व्यवस्था सुनिश्चित हुई।
- व्यापार और रसद को बढ़ावा: राष्ट्रीय रसद नीति (2022) का समर्थन किया और भारत को विश्व बैंक रसद प्रदर्शन सूचकांक

रैंकिंग में 44वें (2018) से 38वें (2023) तक सुधार करने में मदद की।

गतिशक्ति के सामने चुनौतियाँ (स्मृतिसूचक: ब्लॉक)

- नौकरशाही की खामियाँ: विभागों में प्रतिरोध और समन्वय की कमी ने डेटा एकीकरण को धीमा कर दिया।
- भूमि और कानूनी बाधाएँ: भूमि अधिग्रहण और कई मंज़ूरी प्रक्रियाओं ने परियोजनाओं में देरी की।
- परिचालन डेटा अंतराल: राज्यों में गैर-समान डेटा प्रारूपों के कारण असंगति हुई।
- क्षमता की कमी: कई क्षेत्रीय निकायों के पास जीआईएस प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित कर्मियों की कमी थी।
- गतिज विलंब: वास्तविक समय की जानकारी अक्सर तत्काल ज़मीनी कार्रवाई में तब्दील नहीं हो पाती थी।

सुझाए गए उपाय (स्मरक: SCALE)

- डेटा प्रणालियों का मानकीकरण: एक समान डेटा प्रोटोकॉल स्थापित करें और समय-समय पर अद्यतन सुनिश्चित करें।
- प्रोत्साहन बनाएँ: एकीकृत परियोजना वितरण के लिए अंतर-विभागीय सहयोग को पुरस्कृत करें।
- तकनीकी कौशल में वृद्धि: अधिकारियों के लिए राष्ट्रव्यापी क्षमता निर्माण कार्यक्रम शुरू करें।
- अनुमोदन प्रक्रियाओं को लिंक करें: तेज़ मंज़ूरियों के लिए PARIVESH और इसी तरह के प्लेटफ़ॉर्म के साथ एकीकृत करें।
- निगरानी लागू करें: नेटवर्क प्लानिंग ग्रुप (NPG) को परियोजना में देरी की सक्रिय निगरानी और समाधान के लिए सशक्त बनाएँ।

भारत के विकास के लिए महत्व

निजी क्षेत्र के लिए गतिशक्ति पोर्टल का खुलना राष्ट्रीय बुनियादी ढाँचे के निर्माण में सार्वजनिक-निजी तालमेल की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। पारदर्शिता बढ़ाकर, परियोजना निगरानी में सुधार करके और डेटा-संचालित योजना को बढ़ावा देकर, इस पहल ने रसद दक्षता, आर्थिक प्रतिस्पर्धात्मकता और सतत बुनियादी ढाँचे के विकास की दिशा में भारत के मार्ग को सुदृढ़ किया।

बैंकिंग को मज़बूत करने और रुपये के अंतर्राष्ट्रीयकरण को बढ़ावा देने के लिए RBI ने प्रमुख ऋण बाज़ार सुधारों की शुरुआत की

भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) ने हाल ही में ऋण बाज़ार सुधारों का एक व्यापक सेट पेश किया है जिसका उद्देश्य वित्तीय गहराई को व्यापक बनाना, कॉर्पोरेट वित्तपोषण में बैंकों की भूमिका को बढ़ाना और भारतीय रुपये के अंतर्राष्ट्रीय उपयोग को बढ़ावा देना है। ये उपाय बढ़ते वैश्विक व्यापार विवादों, विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ, और व्यापार निपटान के लिए अमेरिकी डॉलर के विकल्प बनाने पर ब्रिक्स देशों की नए सिरे से चर्चा के बीच पेश किए गए हैं।

RBI द्वारा घोषित प्रमुख नीतिगत उपाय

1. विलय और अधिग्रहण के लिए बैंक वित्तपोषण

- पहली बार, भारतीय बैंकों को कॉर्पोरेट विलय और अधिग्रहण (M&A) के लिए ऋण देने की अनुमति दी गई - एक ऐसा क्षेत्र जिस पर पहले गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (NBFC) और निजी इक्विटी फंडों का प्रभुत्व था।
- यह कदम कॉर्पोरेट पुनर्गठन और समेकन को समर्थन देने के लिए डिज़ाइन किया गया था, विशेष रूप से बुनियादी ढाँचे और ऊर्जा जैसे पूंजी-गहन क्षेत्रों में।
- इससे पहले, प्रमोटरों द्वारा दुरुपयोग, ऋण संकेंद्रण और गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (एनपीए) के बढ़ने के जोखिमों के कारण इस तरह के प्रत्यक्ष बैंक ऋण प्रतिबंधित थे।

2. रुपया-आधारित सीमा-पार ऋण

आरबीआई ने भारतीय बैंकों को नेपाल, भूटान और श्रीलंका जैसे पड़ोसी देशों को भारतीय रुपये में ऋण देने की अनुमति दी।

इस नीति का उद्देश्य था:

- अमेरिकी डॉलर पर क्षेत्रीय निर्भरता कम करना,
- दक्षिण एशिया में रुपये की तरलता को मज़बूत करना, और
- व्यापार समझौतों और ऋण माध्यमों के माध्यम से रुपये के अंतर्राष्ट्रीयकरण को बढ़ावा देना।
- इसने भारत को क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में एक वित्तीय आधार के रूप में स्थापित किया।

3. पूंजी बाजार ऋण सीमा का विस्तार

वित्तीय बाजारों तक पहुँच में सुधार के लिए, आरबीआई ने ऋण सीमा बढ़ा दी:

- शेयरों पर ऋण: ₹20 लाख से ₹1 करोड़ तक।
- आईपीओ वित्तपोषण: ₹10 लाख से ₹25 लाख तक।
- इस उपाय का उद्देश्य खुदरा भागीदारी को प्रोत्साहित करना, प्राथमिक पूंजी बाजार को सक्रिय करना और निवेशक समावेशन को व्यापक बनाना था।

4. विशेष रुपया वास्ट्रो खातों (SRVA) के माध्यम से निवेश में लचीलापन

- विदेशी संस्थाओं द्वारा SRVA में रखे गए धन को अब सरकारी प्रतिभूतियों के अलावा कॉर्पोरेट बॉन्ड और वाणिज्यिक पत्रों में भी निवेश किया जा सकता है।
- इस सुधार ने भारत के कॉर्पोरेट बॉन्ड बाजार को और मज़बूत किया, विदेशों में रुपये की तरलता में वृद्धि की और रुपये में मूल्यवर्गित परिसंपत्तियों में विश्वास को मज़बूत किया।

5. मुद्रा बेंचमार्क का विविधीकरण

फाइनेंशियल बेंचमार्क्स इंडिया लिमिटेड (FBIL) ने अपनी बेंचमार्क प्रणाली का विस्तार करके अमेरिकी डॉलर, यूरो, पाउंड और येन के अलावा अन्य व्यापारिक साझेदार मुद्राओं को भी इसमें शामिल किया। इससे विभिन्न देशों के साथ सीधे विदेशी मुद्रा उद्धरण संभव हो पाए, जिससे डॉलर पर लेन-देन संबंधी निर्भरता कम हुई और बहु-मुद्रा व्यापार संबंधों को बल मिला।

6. संशोधित बेसल III मानदंडों का कार्यान्वयन (अप्रैल 2027 से)

RBI ने घोषणा की कि अप्रैल 2027 से, वाणिज्यिक बैंकों के लिए संशोधित बेसल III पूंजी पर्याप्तता मानक लागू होंगे।

ये उपाय:

- एमएसएमई और आवास ऋणों के लिए कम जोखिम भार लागू करेंगे,
- पूंजी पर्याप्तता अनुपात में सुधार करेंगे, और
- वित्तीय लचीलापन बनाए रखते हुए सतत ऋण वृद्धि को बढ़ावा देंगे।

भारत के वित्तीय बाजार ढांचे का अवलोकन

वित्तीय बाजारों की संरचना

भारत के वित्तीय बाजारों में पाँच प्रमुख खंड शामिल हैं:

- मुद्रा बाजार - अल्पकालिक उधार साधनों (परिपक्वता <1 वर्ष) से संबंधित है।
- पूँजी बाजार - शेयरों और बॉन्ड के माध्यम से दीर्घकालिक धन उगाहने की सुविधा प्रदान करता है।
- विदेशी मुद्रा बाजार - व्यापार और निवेश के लिए मुद्रा विनिमय को सक्षम बनाता है।
- बॉन्ड बाजार - सरकारी और कॉर्पोरेट ऋण वित्तपोषण का समर्थन करता है।
- डेरिवेटिव बाजार - वित्तीय जोखिम प्रबंधन के लिए विकल्प और वायदा जैसे अनुबंधों में व्यापार करता है।

आर्थिक विकास में भूमिका

- वित्तीय बाजार कुशल पूंजी आवंटन, जोखिम प्रबंधन और आर्थिक स्थिरता को बढ़ावा देते हैं।
- एक सुचारू रूप से कार्य करने वाला बाजार तरलता, ऋण प्रवाह और निवेश वृद्धि सुनिश्चित करता है, जबकि इन प्रणालियों में विफलता मंदी के प्रभाव और बेरोजगारी को जन्म दे सकती है।

आरबीआई के ऋण सुधारों के आर्थिक निहितार्थ

संरचित वित्त तक बेहतर पहुँच

बैंकों को कॉर्पोरेट अधिग्रहणों के लिए धन मुहैया कराने की अनुमति देने से किफायती पूँजी की उपलब्धता बढ़ी और रणनीतिक व्यावसायिक विस्तार को बढ़ावा मिला।

हालाँकि, इसके लिए मज़बूत जोखिम मूल्यांकन, शासन निगरानी और दुरुपयोग को रोकने के लिए विवेकपूर्ण जाँच की भी आवश्यकता थी।

कॉर्पोरेट पारिस्थितिकी तंत्र को मज़बूत करना

- इन सुधारों ने क्षेत्रीय समेकन और विनिर्माण, रसद और बुनियादी ढाँचे जैसे प्रतिस्पर्धी उद्योगों की ओर पूँजी पुनर्आवंटन को प्रोत्साहित किया।
- इससे उत्पादकता बढ़ने, मेक इन इंडिया पहलों को समर्थन मिलने और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि होने की उम्मीद है।

रुपये के अंतर्राष्ट्रीयकरण को बढ़ावा

रुपये-आधारित ऋण और एसआरवीए निवेश को सक्षम करके, भारत ने रुपये को एक क्षेत्रीय निपटान मुद्रा बनाने के अपने लक्ष्य को आगे बढ़ाया।

इस कदम ने डॉलर के प्रभुत्व के लिए एक रणनीतिक प्रतिसंतुलन के रूप में कार्य किया और दक्षिण एशिया में एक मौद्रिक स्थिरताकर्ता के रूप में भारत की भूमिका को सुदृढ़ किया।

व्यापक महत्व

ऋण सुधारों ने आरबीआई के दोहरे उद्देश्यों को प्रतिबिंबित किया - वित्तीय सुदृढ़ीकरण और रणनीतिक स्वायत्तता।

उन्होंने बैंक-केंद्रित विनियमन से बाजार-उन्मुख सुविधा में परिवर्तन को चिह्नित किया, जिससे भारत एक उभरती हुई वित्तीय शक्ति के रूप में स्थापित हुआ।

"जीवन में ऊँचे उठते समय लोगो से अच्छा व्यवहार करें ! क्योंकि यदि आप फिर निचे आये तो सामना इन्हीं लोगो से करना होगा !!"

"जीतने का असली मज़ा तो तब है ! जब सब आपके हारने का इंतज़ार कर रहे हो !!"

रक्षा एवं सुरक्षा

सऊदी अरब-पाकिस्तान सामरिक पारस्परिक रक्षा समझौता: क्या यह "अरब नाटो" की ओर बढ़ रहा है?

सितंबर 2025 में, सऊदी अरब और पाकिस्तान ने एक सामरिक पारस्परिक रक्षा समझौते की घोषणा की, जिसने इस सिद्धांत को औपचारिक रूप दिया कि किसी भी देश के विरुद्ध आक्रमण को दोनों के विरुद्ध आक्रमण माना जाएगा। महत्व: यह समझौता नाटो के अनुच्छेद 5 की याद दिलाता है, जो सदस्य देशों के बीच सामूहिक रक्षा को अनिवार्य बनाता है। विश्लेषक इस बात पर बहस कर रहे हैं कि क्या यह "अरब नाटो" जैसे इस्लामी सैन्य गठबंधन की शुरुआत है।

सऊदी-पाकिस्तान संबंधों की पृष्ठभूमि

ऐतिहासिक संबंध:

- दशकों से, सऊदी अरब पाकिस्तान को ऋण, तेल सब्सिडी और आर्थिक सहायता प्रदान करता रहा है।
- पाकिस्तान ने अपने सैनिक तैनात किए हैं, सऊदी सेना को प्रशिक्षित किया है, और संभवतः राज्य के लिए परमाणु सुरक्षा जाल के रूप में कार्य किया है।
- धार्मिक और वैचारिक एकजुटता मौजूद है: सऊदी अरब इस्लामी पवित्र स्थलों का संरक्षक है, और पाकिस्तान स्वयंभू "इस्लाम का किला" है।
- वर्तमान तैनाती: सऊदी अरब में 1,500-2,000 पाकिस्तानी कर्मी तैनात हैं।

सामरिक महत्व:

यह समझौता दीर्घकालिक अनौपचारिक संबंधों को औपचारिक रूप देता है और उन्हें एक स्पष्ट संधि में परिवर्तित करता है। यह सऊदी अरब को रणनीतिक आश्वासन देते हुए प्रतीकात्मक रूप से पाकिस्तान की स्थिति और आत्मसम्मान को पुनर्स्थापित करता है।

क्षेत्रीय और वैश्विक प्रतिक्रियाएँ

अरब जगत:

मिस्र ने इस समझौते की आलोचना करते हुए दावा किया कि यह उसके 2015 के अखिल अरब "अरब नाटो" के प्रस्ताव को कमज़ोर करता है। मिस्र के टिप्पणीकारों ने सवाल उठाया कि सऊदी अरब ने मिस्र की बजाय पाकिस्तान को क्यों चुना।

भारत:

विदेश मंत्रालय ने सावधानीपूर्वक प्रतिक्रिया व्यक्त की और इसके निहितार्थों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करने का वादा किया। पूर्व राजनयिकों ने चेतावनी दी कि इससे पाकिस्तान का हौसला बढ़ सकता है और भारत के राजनयिक और सुरक्षा हित जटिल हो सकते हैं।

इज़राइल और ईरान:

इज़राइल इस समझौते को सऊदी अरब के साथ क्षेत्रीय संतुलन और सामान्यीकरण की संभावनाओं को प्रभावित करने वाला मानता है। ईरान इसे सुन्नी एकजुटता के रूप में देख सकता है, जो उसके क्षेत्रीय प्रभाव को चुनौती दे रही है।

अमेरिका और चीन:

अमेरिका को अब एक ऐसे सहयोगी (सऊदी अरब) के साथ तालमेल बिठाना होगा जो स्वतंत्र सैन्य गारंटी दे रहा हो।

अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया ने खनिज और रक्षा क्षेत्र में 8.5 अरब डॉलर के समझौतों पर हस्ताक्षर किए

संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएस) और ऑस्ट्रेलिया ने महत्वपूर्ण खनिजों और रक्षा क्षेत्रों में सहयोग को मज़बूत करने के लिए 8.5 अरब डॉलर के ऐतिहासिक समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री एंथनी अल्बानीज़ के बीच व्हाइट हाउस में एक उच्च-स्तरीय बैठक के दौरान इन समझौतों को औपचारिक रूप दिया गया।

इन समझौतों का उद्देश्य रणनीतिक संसाधनों के लिए बढ़ती वैश्विक प्रतिस्पर्धा के बीच, दोनों देशों के बीच आपूर्ति श्रृंखला सुरक्षा, ऊर्जा स्वतंत्रता और सैन्य सहयोग को बढ़ाना है।

महत्वपूर्ण खनिज समझौता

- महत्वपूर्ण खनिज ढाँचे के तहत अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया के बीच महत्वपूर्ण खनिज परियोजनाओं में 3 अरब डॉलर से अधिक का संयुक्त निवेश होगा।
- इन परियोजनाओं का अनुमानित वसूली योग्य मूल्य: 53 अरब डॉलर।
- इस समझौते को आपूर्ति-श्रृंखला सहयोग के लिए एक वैश्विक मॉडल माना जाता है।
- उद्देश्य: चीन पर निर्भरता कम करना, जिसने हाल ही में दुर्लभ पृथ्वी चुम्बकों के निर्यात पर प्रतिबंध लगाए हैं।
- तत्काल निवेश: शुरू होने के लिए तैयार पहलों के लिए अगले छह महीनों में संयुक्त परियोजनाओं में 1 अरब डॉलर की प्रतिबद्धता है।

महत्वपूर्ण खनिजों का महत्व:

लिथियम, कोबाल्ट, निकल और दुर्लभ मृदा तत्व जैसे महत्वपूर्ण खनिज इलेक्ट्रिक वाहनों, नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकियों, रक्षा उपकरणों और उच्च तकनीक वाले इलेक्ट्रॉनिक्स के लिए आवश्यक हैं। ये खनिज आर्थिक सुरक्षा और राष्ट्रीय रक्षा दोनों के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हैं।

रक्षा सहयोग

यह समझौता अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया के बीच सैन्य सहयोग को भी मजबूत करता है। इसके प्रमुख क्षेत्रों में संयुक्त रक्षा परियोजनाएँ, प्रौद्योगिकी साझाकरण और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में रणनीतिक संरेखण शामिल हैं। इस साझेदारी का उद्देश्य उभरते क्षेत्रीय खतरों का मुकाबला करना और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में स्थिरता बनाए रखना है।

भारत ने रूसी हमलों को रोकने के लिए यूक्रेन को आपूर्ति की जाने वाली मिसाइलों की खरीद हेतु ब्रिटेन के साथ 4,136 करोड़ रुपये का समझौता किया

भारत ने संभावित खतरों से निपटने के लिए अपनी वायु रक्षा क्षमताओं को मज़बूत करने हेतु यूक्रेन को पहले आपूर्ति की जा चुकी उन्नत मिसाइलों की खरीद हेतु यूनाइटेड किंगडम के साथ ₹4,136 करोड़ का समझौता किया है।

बेलफ़ास्ट स्थित थेल्स संयंत्र में उत्पादन

इन मिसाइलों का निर्माण उत्तरी आयरलैंड के बेलफ़ास्ट स्थित थेल्स समूह के संयंत्र में किया जाएगा। पेरिस स्थित मुख्यालय वाले थेल्स के यूरोप भर में कई विनिर्माण केंद्र हैं, जो यह सुनिश्चित करते हैं कि उत्पादन उच्च गुणवत्ता मानकों पर खरा उतरे।

क्षेत्रीय तनाव के बीच रणनीतिक कदम

यह अधिग्रहण बढ़ते क्षेत्रीय तनावों के मद्देनजर अपनी रक्षा तैयारियों को बढ़ाने और अत्याधुनिक तकनीक के साथ अपनी सैन्य संपत्तियों का आधुनिकीकरण करने की भारत की रणनीति का हिस्सा है।

थेल्स समूह

- पूर्ववर्ती: थॉमसन-सीएसएफ
- स्थापना: 6 दिसंबर 2000
- मुख्यालय: पेरिस, फ्रांस
- अध्यक्ष एवं सीईओ: पैट्रिस केन

तुर्की ने अमेरिका के साथ रणनीतिक परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर किए

राष्ट्रपति रेचेप तैयप एर्दोआन की व्हाइट हाउस यात्रा के दौरान तुर्की ने अमेरिका के साथ रणनीतिक असैन्य परमाणु सहयोग पर एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए।

संदर्भ और अतिरिक्त ऊर्जा सौदे

यह समझौता ज्ञापन अमेरिकी यात्रा के दौरान बड़े पैमाने पर एलएनजी आयात समझौते के बाद हुआ है, जिसमें तुर्की की सरकारी कंपनी बीओटीएएस ने मर्कुरिया (स्विट्जरलैंड) और वुडसाइड एनर्जी (ऑस्ट्रेलिया) के साथ 75.8 बिलियन क्यूबिक मीटर एलएनजी के लिए अनुबंध पर हस्ताक्षर किए थे।

यह समझौता ऊर्जा आपूर्ति में विविधता लाने, आयातित प्राकृतिक गैस पर निर्भरता कम करने और बढ़ती बिजली मांग को पूरा करने के तुर्की के निरंतर प्रयासों को दर्शाता है।

परमाणु सहयोग का दायरा

तुर्किये और अमेरिका के बीच बातचीत का केंद्र बिंदु:

- बड़े पैमाने पर परमाणु ऊर्जा संयंत्रों का निर्माण
- छोटे मॉड्यूलर रिएक्टरों (एसएमआर) का विकास
- एसएमआर को लचीला, स्केलेबल और तेज़ी से स्थापित होने वाला परमाणु सिस्टम माना जाता है, जो औद्योगिक क्षेत्रों या नवीकरणीय ऊर्जा प्रणालियों के साथ एकीकरण के लिए उपयुक्त हो सकता है।
- तुर्की ऊर्जा मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों ने तुर्किये के परमाणु विस्तार में अमेरिका की रुचि पर प्रकाश डाला है।

तुर्किये की परमाणु ऊर्जा महत्वाकांक्षाएँ

तुर्किये की पहली परमाणु परियोजना, मर्सिन प्रांत में अक्कुयु परमाणु ऊर्जा संयंत्र, रूस की रोसाटॉम द्वारा 20 अरब डॉलर की लागत से बनाई जा रही है, जिसकी कुल क्षमता 4,800 मेगावाट है। पहला रिएक्टर 2026 तक चालू होने की उम्मीद है।

तुर्किये:

- राजधानी: अंकारा
- राष्ट्रपति: रेसेप तैयप एर्दोआन
- मुद्रा: तुर्की लीरा

माह के रक्षा/सैन्य अभ्यास

ऑस्ट्राहिंड 2025

भारत-ऑस्ट्रेलिया संयुक्त सैन्य अभ्यास 'ऑस्ट्राहिंड 2025' का चौथा संस्करण 14 अक्टूबर से 26 अक्टूबर, 2025 तक पर्थ, ऑस्ट्रेलिया में शुरू होगा। गोरखा राइफल्स की एक बटालियन के नेतृत्व में और अन्य सैन्य बलों एवं सेवाओं के सैनिकों के सहयोग से, 120 कर्मियों की एक भारतीय सेना की टुकड़ी इस वार्षिक द्विपक्षीय अभ्यास में भाग लेने के लिए रवाना हुई है।

उद्देश्य और फोकस क्षेत्र

इस अभ्यास का मुख्य उद्देश्य भारतीय और ऑस्ट्रेलियाई सेनाओं के बीच रक्षा सहयोग और अंतर-संचालन क्षमता को बढ़ाना है। यह उप-पारंपरिक युद्ध, विशेष रूप से शहरी और अर्ध-शहरी इलाकों में, रणनीति, तकनीकों और प्रक्रियाओं के आदान-प्रदान के लिए एक मंच के रूप में कार्य करेगा। यह प्रशिक्षण खुले और अर्ध-रेगिस्तानी इलाकों में संयुक्त कंपनी-स्तरीय अभियानों पर केंद्रित होगा, जिसमें निम्नलिखित पहलू शामिल होंगे:

- संयुक्त मिशन योजना और क्रियान्वयन
- रणनीतिक अभ्यास और समन्वय
- विशेष हथियारों और उभरती प्रौद्योगिकियों का उपयोग

महत्व

अभ्यास ऑस्ट्राहिंड निम्नलिखित का अवसर प्रदान करता है:

- सैन्य संबंधों को मज़बूत करना
- संचालन तत्परता और युद्ध क्षमता में सुधार
- दोनों सेनाओं के बीच सांस्कृतिक और व्यावसायिक सौहार्द को बढ़ावा देना

अतिरिक्त मुख्य तथ्य:

पहला संस्करण: 2022 (राजस्थान, भारत में आयोजित)

भारत-ऑस्ट्रेलिया के अन्य रक्षा अभ्यास:

ऑस्ट्राहिंडेक्स - नौसेना अभ्यास

- पिच ब्लैक - बहुराष्ट्रीय वायु सेना अभ्यास (ऑस्ट्रेलिया मेज़बान)
- व्यापक संदर्भ: दोनों देश क्वाड समूह (भारत, ऑस्ट्रेलिया, जापान, अमेरिका) के सदस्य हैं, जो हिंद-प्रशांत सुरक्षा पर केंद्रित है।

अभ्यास (NATPOLREX-X)

भारतीय तटरक्षक बल (ICG) तमिलनाडु के चेन्नई तट पर 10वां राष्ट्रीय स्तर का प्रदूषण प्रतिक्रिया अभ्यास (NATPOLREX-X) आयोजित करेगा। 27वीं राष्ट्रीय तेल रिसाव आपदा आकस्मिक योजना (NOSDCP) और तैयारी बैठक के साथ आयोजित। उद्देश्य: समुद्री तेल रिसाव की घटनाओं से निपटने के लिए भारत की तैयारियों का मूल्यांकन और उसे बढ़ाना।

मुख्य विशेषताएँ:

- हितधारकों की भागीदारी: केंद्रीय मंत्रालय, तटीय राज्य सरकारें, प्रमुख बंदरगाह, तेल प्रबंधन एजेंसियाँ, समुद्री संगठन।
- अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी: 32 देशों के 40 से अधिक विदेशी पर्यवेक्षक + 100 से अधिक राष्ट्रीय प्रतिनिधि।
- तैनात संसाधन: प्रदूषण प्रतिक्रिया जहाज, तेल रिसाव नियंत्रण के लिए तैयार विमान, और अन्य उन्नत उपकरण।

फोकस क्षेत्र:

- समुद्री तेल रिसाव नियंत्रण और पुनर्प्राप्ति।
- बहु-एजेंसी समन्वय और सर्वोत्तम प्रथाएँ।
- समुद्री प्रदूषण से निपटने के लिए तकनीकी एकीकरण।
- पर्यावरण संरक्षण में वैश्विक सहयोग को मज़बूत करना।

भारतीय तटरक्षक बल (ICG):

- स्थापना: 1978।
- मुख्यालय: नई दिल्ली।
- आदर्श वाक्य: "वयं रक्षामः" (हम रक्षा करते हैं)।
- कार्य: समुद्री सुरक्षा, प्रदूषण नियंत्रण, खोज और बचाव।
- वर्तमान महानिदेशक (2025): राकेश पाल (जुलाई 2023 से)।

NATPOLREX (राष्ट्रीय स्तर का प्रदूषण प्रतिक्रिया अभ्यास):

- ICG का द्विवार्षिक प्रमुख अभ्यास।
- NOSDCP - राष्ट्रीय तेल रिसाव आपदा आकस्मिक योजना का परीक्षण करने के लिए आयोजित किया गया।
- NOSDCP को पहली बार 1993 में प्रख्यापित किया गया था, बाद में इसे वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं के अनुरूप संशोधित किया गया।

वैश्विक संदर्भ:

- भारत MARPOL (जहाजों से प्रदूषण की रोकथाम के लिए अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, 1973/78) का एक हस्ताक्षरकर्ता है।
- ICG भारत में समुद्री तेल रिसाव प्रतिक्रिया के लिए केंद्रीय समन्वय प्राधिकरण (CCA) है।
- भारत क्षेत्रीय समुद्री प्रदूषण प्रबंधन के लिए दक्षिण एशिया सहकारी पर्यावरण कार्यक्रम (SACEP) का हिस्सा है।

अभ्यास कोंकण-2025

भारतीय नौसेना और रॉयल नेवी (यूके) के बीच द्विपक्षीय नौसैनिक अभ्यास "कोंकण-2025" भारत के पश्चिमी तट पर शुरू हुआ।

उद्देश्य: भारत-ब्रिटेन विज़न 2035 के अंतर्गत भारत-ब्रिटेन व्यापक रणनीतिक साझेदारी को मज़बूत करना और मुक्त, खुले और सुरक्षित समुद्र सुनिश्चित करना।

अभ्यास के चरण:

बंदरगाह चरण (5-7 अक्टूबर):

- पेशेवर बातचीत, संयुक्त कार्य समूह की बैठकें।
- डेक पार दौरे, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और खेल कार्यक्रम।
- विषय विशेषज्ञ (एसएमई) आदान-प्रदान।

समुद्री चरण (8-12 अक्टूबर):

- उन्नत समुद्री अभियान: वायु-रोधी, सतह-रोधी, पनडुब्बी-रोधी युद्ध।
- उड़ान अभियान, नौसैन्य कौशल विकास।
- अग्रिम पंक्ति की नौसैनिक संपत्तियों की तैनाती: विमानवाहक पोत, विध्वंसक, फ्रिगेट, पनडुब्बी और वायु संपत्तियाँ।

भाग लेने वाली सेनाएँ:

- भारतीय नौसेना: स्वदेशी विमानवाहक पोत आईएनएस विक्रांत के नेतृत्व में वाहक युद्ध समूह, सतह, उप-सतह और वायु लड़ाकू विमानों द्वारा समर्थित।
- रॉयल नेवी: एचएमएस प्रिंस ऑफ वेल्स के नेतृत्व में यूके कैरियर स्ट्राइक ग्रुप 25 (यूके सीएसजी-25)।
- इसमें सहयोगी देशों की भागीदारी शामिल है: नॉर्वे और जापान।

अन्य भारत-यूके द्विपक्षीय सैन्य अभ्यास

अभ्यास अजय वारियर - सेना

- भारत और यूके के बीच द्विपक्षीय सेना-स्तरीय अभ्यास।
- दोनों देशों में बारी-बारी से आयोजित।
- फोकस: शहरी और अर्ध-शहरी वातावरण में आतंकवाद-रोधी अभियान।

अभ्यास इंद्रधनुष - वायु सेना

- भारतीय वायु सेना (आईएएफ) और रॉयल एयर फोर्स (आरएएफ) के बीच द्विपक्षीय वायु सेना अभ्यास।
- इसमें हवाई युद्ध मिशन, हवा से हवा में ईंधन भरना और संयुक्त परिचालन रणनीति शामिल हैं।

ड्रोन कवच

ड्रोन युद्ध के लिए अपनी तैयारियों को मजबूत करने के लिए भारतीय सेना अरुणाचल प्रदेश में 'ड्रोन कवच' नाम का एक बड़ा अभ्यास कर रही है।

अभ्यास का उद्देश्य क्या है?

इसका उद्देश्य दुश्मन के ड्रोन का पता लगाने, उन्हें निष्क्रिय करने और उनसे बचाव के तरीकों को परखना और बेहतर बनाना है। यह अभ्यास पहाड़ी और सीमावर्ती इलाकों में ऑपरेशनल तैयारियों को बेहतर बनाने के लिए है, जो खास चुनौतियों वाले क्षेत्र हैं।

मुख्य ध्यान के क्षेत्र

- निगरानी और ट्रैकिंग: जासूसी और निगरानी के लिए ड्रोन का इस्तेमाल।
- ड्रोन से बचाव के उपाय: इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर, जैमिंग और भौतिक अवरोधक तरीकों का इस्तेमाल।
- सैनिकों के साथ समन्वय: त्वरित कार्रवाई के लिए जमीनी बलों के साथ ड्रोन संचालन का समन्वय।

रणनीतिक महत्व

अरुणाचल प्रदेश संवेदनशील इलाकों की सीमा पर है, इसलिए यह सीमा सुरक्षा और निगरानी के लिए महत्वपूर्ण है।
यह अभ्यास भारत की आधुनिक खतरों, खासकर हवाई युद्ध और मानव रहित सिस्टम के क्षेत्र में, से निपटने की क्षमता को दर्शाता है।

वायु समन्वय

भारतीय सेना ने पश्चिमी कमान के तत्वावधान में नारायणगढ़ फील्ड फायरिंग रेंज, अंबाला में "वायु समन्वय" नामक एक दोतरफा संयुक्त अभ्यास किया। इस अभ्यास का उद्देश्य स्वदेशी ड्रोनों की परिचालन दक्षता और एक विवादित इलेक्ट्रॉनिक युद्ध (ईडब्ल्यू) वातावरण में उनकी तैनाती का सत्यापन करना था।

मुख्य अंश

- इस अभ्यास ने भारतीय सैनिकों की परिचालन तैयारियों और युद्धक्षेत्र की उभरती चुनौतियों के बीच समाधान खोजने और रणनीति में बदलाव करने की उनकी क्षमता का प्रदर्शन किया।
- भविष्य के युद्ध में ड्रोन की भूमिका और दुश्मन के हवाई प्लेटफार्मों को प्रभावी ढंग से बेअसर करने के लिए ड्रोन-रोधी प्रणालियों की आवश्यकता पर जोर दिया गया।
- सेना ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान ड्रोन-रोधी प्रणालियों की सफलता पर प्रकाश डाला, जिससे दुश्मन के हवाई खतरों का मुकाबला करने की भारत की क्षमता का प्रदर्शन हुआ।

तकनीकी और सामरिक महत्व

- इस अभ्यास में विभिन्न उद्योगों के ड्रोनों का व्यापक प्रदर्शन हुआ, जिनमें कई अत्याधुनिक स्वदेशी प्लेटफ़ॉर्म भी शामिल थे, जिसने मानवरहित प्रणालियों में भारत की आत्मनिर्भरता और तकनीकी प्रगति को उजागर किया।
- इसने आधुनिकीकरण, ड्रोन एकीकरण और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध की तैयारियों के प्रति भारतीय सेना की प्रतिबद्धता को और पुष्ट किया।

अतिरिक्त:

- पश्चिमी कमान: भारतीय सेना की छह परिचालन कमानों में से एक, जिसका मुख्यालय हरियाणा के चंडीमंदिर में है।
- ऑपरेशन सिंदूर: भारतीय सेना का एक हालिया अभियान जिसमें ड्रोन-रोधी प्रणालियों का प्रभावी ढंग से उपयोग किया गया।
- स्वदेशी ड्रोन विकास: भारत रक्षा क्षेत्र में मेक इन इंडिया पहल पर तेज़ी से ध्यान केंद्रित कर रहा है, जिसमें डीआरडीओ, एचएएल जैसी कंपनियाँ और निजी स्टार्टअप यूएवी (मानवरहित हवाई वाहन) विकसित कर रहे हैं।
- इलेक्ट्रॉनिक युद्ध (ईडब्ल्यू): इसमें दुश्मन के संचार और रडार को रोकने, बाधित करने या धोखा देने के लिए विद्युत चुम्बकीय स्पेक्ट्रम का उपयोग शामिल है।
- द्वि-पक्षीय अभ्यास: एक सैन्य अभ्यास प्रारूप जिसमें सेनाओं को यथार्थवादी युद्ध परिदृश्यों का अनुकरण करने के लिए "लाल बल" (शत्रु) और "नीला बल" (मित्र) में विभाजित किया जाता है।
- अंबाला: हरियाणा में एक रणनीतिक सैन्य केंद्र, जहाँ भारतीय सेना और वायु सेना की कई इकाइयाँ स्थित हैं।

लघु लेख

कैरिबियन में तेज़ी से बढ़ते अमेरिकी सैन्य जमावड़े के बारे में जानें विस्तार से

पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप, वेनेज़ुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो और वेनेज़ुएला की सेना के बीच बढ़ते तनाव ने अमेरिकी हस्तक्षेप, लैटिन अमेरिकी संप्रभुता और शासन की स्थिरता की सीमाओं पर वैश्विक बहस को फिर से छेड़ दिया है। इस संकट के केंद्र में वेनेज़ुएला की सेना है - वह निर्णायक शक्ति जो यह तय कर सकती है कि मादुरो का शासन कायम रहेगा या ढह जाएगा।

वेनेज़ुएला का लंबा राजनीतिक संकट

- एक दशक से भी ज़्यादा समय से, वेनेज़ुएला गंभीर आर्थिक पतन, अत्यधिक मुद्रास्फीति, खाद्य और दवाओं की कमी और बड़े पैमाने पर प्रवासन का सामना कर रहा है। मादुरो के नेतृत्व में, देश की संस्थाएँ खोखली हो गई हैं, जबकि सत्ता राष्ट्रपति पद और सेना के इर्द-गिर्द केंद्रित हो गई है।
- शासन और वाणिज्य में गहराई से समाहित सशस्त्र बल, मादुरो की जीवन रेखा और ढाल दोनों बन गए हैं। वरिष्ठ अधिकारी महत्वपूर्ण क्षेत्रों - सीमा नियंत्रण से लेकर तेल उद्योग तक - को नियंत्रित करते हैं - वफ़ादारी के बदले में धन और सुरक्षा प्राप्त करते हैं। विपक्ष, हालाँकि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर समर्थित है, इस गठबंधन को तोड़ने में बार-बार विफल रहा है।

ट्रम्प का नया कठोर रुख

- डोनाल्ड ट्रम्प के राजनीतिक पुनरुत्थान ने वेनेज़ुएला को अमेरिकी विदेश नीति में फिर से अग्रणी स्थान पर ला दिया है। अपने हालिया बयानों में, उन्होंने प्रतिबंधों और संभावित सैन्य कार्रवाई की धमकियों को फिर से दोहराया है, और वेनेज़ुएला को एक मानवीय त्रासदी और सुरक्षा चुनौती दोनों के रूप में प्रस्तुत किया है।
- ट्रम्प की रणनीति में बयानबाजी का दबाव, आर्थिक अलगाव और क्षेत्रीय कूटनीति का मिश्रण है। पड़ोसी देशों से समर्थन

जुटाकर, वह मादुरो को अवैध ठहराना और आंतरिक असंतोष को बढ़ावा देना चाहते हैं।
- हालांकि, आलोचकों का तर्क है कि इस तरह के आक्रामक रुख से अस्थिरता या सशस्त्र संघर्ष भड़कने का खतरा है, जबकि समर्थकों का दावा है कि यह अंततः सेना की वफादारी को तोड़ सकता है और लोकतांत्रिक बहाली का द्वार खोल सकता है।

सेना: निर्णायक शक्ति मध्यस्थ
- वेनेज़ुएला की सेना देश के भविष्य में सबसे शक्तिशाली मध्यस्थ बनी हुई है। मादुरो का अस्तित्व उसकी वफादारी पर निर्भर करता है; उसके दलबदल से संभवतः उसका शासन समाप्त हो जाएगा।
- सेना को प्रभावित करने के अमेरिकी प्रयासों में आम माफ़ी, सुरक्षित मार्ग और संक्रमण के बाद की भूमिकाओं के वादे शामिल हैं, जिनका उद्देश्य अधिकारी वर्ग में दरार पैदा करना है। लेकिन सेना एकीकृत नहीं है - इसमें कट्टरपंथी, व्यावहारिक और अवसरवादी शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक वफ़ादारी के पुरस्कारों के विरुद्ध विद्रोह के जोखिमों का आकलन करता है।
- ख़तरा विखंडन में निहित है। आंशिक दलबदल भी आंतरिक संघर्ष या गृहयुद्ध को जन्म दे सकता है, क्योंकि प्रतिस्पर्धी गुट नियंत्रण के लिए होड़ करते हैं।

विदेशी शक्तियाँ और रणनीतिक दांव
- वेनेज़ुएला का गतिरोध केवल एक घरेलू मुद्दा नहीं है - यह एक वैश्विक शक्ति संघर्ष है। रूस, चीन, क्यूबा और ईरान, सभी वित्तीय सहायता, खुफिया जानकारी साझा करने और सैन्य सहयोग के माध्यम से मादुरो का समर्थन करते हैं, और वेनेज़ुएला को पश्चिमी गोलार्ध में एक रणनीतिक आधार मानते हैं।
- इस बीच, पश्चिमी शक्तियाँ और OAS जैसे क्षेत्रीय गुट प्रतिबंधों, कूटनीति और मानवाधिकारों पर दबाव बनाने पर ज़ोर दे रहे हैं, हालाँकि कुछ ही प्रत्यक्ष हस्तक्षेप की वकालत करते हैं।
- परिणामस्वरूप एक तनावपूर्ण संतुलन है: एक ऐसा राज्य जो न तो ढह रहा है और न ही स्थिर हो रहा है, अपने गठबंधनों द्वारा संरक्षित है, फिर भी भीतर से कमज़ोर है।

आगे की संभावित परिस्थितियाँ
- विश्लेषकों को चार संभावित परिणाम दिखाई दे रहे हैं:
- तख्तापलट या सैन्य दलबदल: जनरलों द्वारा एक समन्वित कदम मादुरो के शासन को शीघ्र ही समाप्त कर सकता है।
- शासन का लचीलापन: मादुरो दमन और बाहरी समर्थन के माध्यम से नियंत्रण कड़ा करता है।
- बातचीत द्वारा परिवर्तन: अंतर्राष्ट्रीय मध्यस्थता चुनाव या साझा शासन की ओर ले जाती है।
- गृहयुद्ध: गुटीय लड़ाई देश को और अस्थिर करती है।
- प्रत्येक परिदृश्य इस बात पर निर्भर करता है कि सेना एकजुट रहती है या दबाव में बिखर जाती है।

क्षेत्रीय और वैश्विक निहितार्थ
- वेनेज़ुएला का भाग्य पूरे लैटिन अमेरिका में प्रवासन, क्षेत्रीय स्थिरता और लोकतांत्रिक मानदंडों को प्रभावित करेगा। पतन के कारण लाखों और शरणार्थी पड़ोसी देशों में जा सकते हैं, जबकि अमेरिकी हस्तक्षेप क्षेत्र में अमेरिकी नीति की धारणाओं को नया रूप दे सकता है।
- वाशिंगटन के लिए, वेनेज़ुएला संकल्प और संयम, दोनों की परीक्षा है - चाहे कूटनीति से नेतृत्व किया जाए या दबाव से।
- अंततः, वेनेज़ुएला की सेना के पास अंतिम दांव है। अगर वह मादुरो का साथ छोड़ देती है, तो शासन कुछ ही दिनों में गिर सकता है; अगर वह दृढ़ रहती है, तो दमन और अस्तित्व की यथास्थिति बनी रहेगी। जैसे-जैसे ट्रम्प का नया ध्यान दबाव बढ़ा रहा है, दुनिया यह देखने के लिए उत्सुक है कि क्या वेनेज़ुएला की अगली क्रांति अंदर से आएगी - या एक बार फिर उसकी सीमाओं के बाहर से आकार लेगी।

सर क्रीक का महत्व: भारत और पाकिस्तान सीमा विवाद सुलझाने में क्यों विफल रहे हैं

सर क्रीक क्या है और यह क्यों महत्वपूर्ण है
- सर क्रीक लगभग 96 किलोमीटर लंबा एक ज्वारीय मुहाना है जो भारत और पाकिस्तान के बीच स्थित है और भारतीय राज्य गुजरात और पाकिस्तान के सिंध प्रांत के बीच भूमि-समुद्री सीमा का एक हिस्सा है। यह दलदली है, मानसून के दौरान बाढ़ आती है और यहाँ आबादी कम है - लेकिन इसके बावजूद, इसका सामरिक और आर्थिक महत्व बहुत अधिक है।
- चूँकि सर क्रीक में सटीक सीमा का निर्धारण नहीं हुआ है, इसलिए यह विवाद दोनों देशों के बीच जल, मछली पकड़ने के अधिकार, ऊर्जा क्षमता और समुद्री सीमाओं पर नियंत्रण को प्रभावित करता है।

सामरिक महत्व: केवल जल से परे

सुरक्षा और रक्षा संबंधी चिंताएँ
सर क्रीक पाकिस्तान के बंदरगाह शहर कराची के निकट स्थित है। इस खाड़ी पर नियंत्रण आर्थिक और सैन्य रूप से महत्वपूर्ण इस क्षेत्र के निकट नौसैनिक या सुरक्षा अभियानों के लिए रणनीतिक लाभ प्रदान कर सकता है। भारत सर क्रीक को न केवल एक सीमा के रूप में देखता है, बल्कि एक संभावित प्रक्षेपण या घुसपैठ मार्ग के रूप में भी देखता है - इसलिए वह इस क्षेत्र के पास पाकिस्तान के सैन्य निर्माण के प्रति सतर्क है।

आर्थिक और संसाधन संबंधी दांव

- माना जाता है कि सर क्रीक के पास के जल और समुद्र तल में तेल और गैस के भंडार हैं। सीमा की सुरक्षा किसी देश को इन संसाधनों पर बड़ा दावा करने का मौका दे सकती है। इसके अलावा, यह खाड़ी मछली पकड़ने के उद्योग के लिए भी महत्वपूर्ण है। अस्पष्ट सीमाओं के कारण अक्सर उन मछुआरों को गिरफ्तार किया जाता है जो अनजाने में दूसरे देश के जलक्षेत्र में चले जाते हैं, जिससे आजीविका प्रभावित होती है।
- इसके अलावा, सर क्रीक में सीमा कैसे खींची जाती है, यह निर्धारित करता है कि प्रत्येक देश का अनन्य आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) अरब सागर तक कैसे फैला है। एक अनुकूल सीमा समुद्री संसाधनों से समृद्ध अपतटीय क्षेत्रों पर एक मजबूत दावा दे सकती है।

विवाद कैसे शुरू हुआ

- यह विवाद 20वीं सदी की शुरुआत का है, जब कच्छ (भारत) और सिंध (पाकिस्तान) के आसपास की स्थानीय रियासतों के बीच इस बात पर बहस हुई कि उन्हें विभाजित करने वाली एक खाड़ी पर किसका नियंत्रण है। स्वतंत्रता और विभाजन के बाद, यह विवाद जारी रहा, लेकिन कभी पूरी तरह से हल नहीं हुआ।
- 1968 में, एक न्यायाधिकरण ने कच्छ के रण सीमा विवाद के अधिकांश हिस्से का निपटारा कर दिया, जिससे विवादित क्षेत्र का 90% हिस्सा भारत को मिल गया। लेकिन इसमें सर क्रीक को शामिल नहीं किया गया और कहा गया कि सीमा के एक हिस्से पर बाद में बातचीत की जानी चाहिए - और वह "बाद में" अभी तक नहीं हुई है।

वर्तमान दावे और कानूनी विवाद

- पाकिस्तान पूरे सर क्रीक पर अपना दावा करता है। हालाँकि, भारत का तर्क है कि सीमा थलवेग सिद्धांत के अनुसार होनी चाहिए - अर्थात सीमा क्रीक के नौगम्य चैनल के मध्य से होकर गुजरनी चाहिए। भारत का कहना है कि क्रीक नौगम्य है (मछुआरों द्वारा उपयोग की जाती है), इसलिए थलवेग लागू होना चाहिए।
- पाकिस्तान इसे अस्वीकार करता है और कहता है कि क्रीक नौगम्य नहीं है, इसलिए थलवेग का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। इस प्रकार, दोनों अपने दावों को सही ठहराने के लिए अलग-अलग कानूनी, भौगोलिक और ऐतिहासिक व्याख्याओं का सहारा लेते हैं।

अब तक वार्ता विफल क्यों रही है

- पिछले कुछ वर्षों में, भारत और पाकिस्तान ने कई दौर की द्विपक्षीय वार्ता, तकनीकी बैठकें और कार्यसमूह आयोजित किए हैं। फिर भी, कोई स्थायी समझौता नहीं हो पाया है। एक कारण यह है कि यह विवाद बड़े राजनीतिक तनावों से जुड़ा हुआ है - वार्ता अक्सर संकटों, सुरक्षा चिंताओं या अविश्वास के कारण रुक जाती है।
- एक समय, पाकिस्तान ने इस मुद्दे का अंतर्राष्ट्रीयकरण करने (इसे वैश्विक न्यायालय में ले जाने) का प्रयास किया, लेकिन भारत ने इस मुद्दे को द्विपक्षीय रूप से (केवल दोनों देशों के बीच) सुलझाने पर ज़ोर दिया। भारत ने सर क्रीक मामले में तीसरे पक्ष की मध्यस्थता का लगातार विरोध किया है, यह तर्क देते हुए कि यह मामला उनकी आपसी बातचीत के अंतर्गत आता है।

समझौता करने में चुनौतियाँ

- भूगोल और बदलता परिदृश्य: सर क्रीक का भूभाग, जल प्रवाह और नौवहन मार्ग समय के साथ ज्वार, गाद और बाढ़ के कारण बदलते रहते हैं। गतिशील वातावरण में एक निश्चित सीमा निर्धारित करना मुश्किल है।
- भिन्न कानूनी व्याख्याएँ: क्या थलवेग लागू होता है, या "नौगम्य" को कैसे परिभाषित किया जाए, यह एक तकनीकी लेकिन राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण प्रश्न बन जाता है।
- विश्वास और रणनीतिक दांव: दोनों पक्ष बहुत अधिक समझौता करने से डरते हैं, क्योंकि सर क्रीक के प्रभाव उनकी सीमाओं से परे भी हैं।
- बाहरी दबाव: भारत और पाकिस्तान के बीच अन्य विवाद या सुरक्षा घटनाएँ अक्सर सर क्रीक वार्ता को पटरी से उतार देती हैं।

सर क्रीक का मामला अब तक क्यों नहीं सुलझा

- हालांकि दोनों देश अपनी-अपनी ज़िम्मेदारियों को समझते हैं, लेकिन कानूनी पेचीदगियों, बदलते हालात, ऐतिहासिक बोझ, सुरक्षा संबंधी संदेह और राजनीतिक हस्तक्षेप के कारण इसका समाधान नहीं हो पाया है। दोनों पक्ष ऐसी शर्तें मानने को तैयार नहीं हैं जो उनके दावों को कमज़ोर करें या दूसरे को फ़ायदा पहुँचाएँ।
- भारत के लिए, सर क्रीक का मामला सुलझाने से उसके समुद्री दावों का निपटारा करने, मछुआरों को मदद करने और ऊर्जा महत्वाकांक्षाओं को बल मिलेगा। पाकिस्तान के लिए, इस खाड़ी पर नियंत्रण हासिल करने से कराची और संसाधन क्षेत्रों तक पहुँच मज़बूत हो सकती है।
- जब तक दोनों पक्ष तकनीकी परिभाषाओं पर सहमत नहीं हो जाते और राजनीतिक विश्वास फिर से स्थापित नहीं हो जाता, तब तक सर क्रीक संभवतः एक विवादित सीमा बनी रहेगी—एक ऐसी सीमा जिसका महत्व उसके जलीय दलदलों से कहीं आगे तक फैला हुआ है।

यूक्रेन को टॉमहॉक मिसाइलें

अमेरिकी राष्ट्रपति ने संकेत दिया है कि अगर रूस मौजूदा संघर्ष को कम करने के लिए विश्वसनीय उपाय नहीं करता है, तो वाशिंगटन यूक्रेन को लंबी दूरी की टॉमहॉक क्रूज मिसाइलें देने पर विचार कर सकता है। इन मिसाइलों के संभावित हस्तांतरण से यूक्रेन के लिए पश्चिमी समर्थन में उल्लेखनीय वृद्धि होगी और

दुश्मन के इलाके में गहराई तक सटीक हमले करने की उसकी क्षमता बढ़ेगी।

टॉमहॉक मिसाइलों का अवलोकन

टॉमहॉक एक लंबी दूरी की, सभी मौसमों में काम करने वाली, सबसोनिक क्रूज मिसाइल है जिसे उच्च-मूल्य वाले या अत्यधिक किलेबंद लक्ष्यों पर सटीक हमले के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसे जहाजों और पनडुब्बियों दोनों से दागा जा सकता है, जिससे नौसैनिक युद्ध में लचीलापन मिलता है। लगभग 1,600 किमी (1,000 मील) की मारक क्षमता के साथ, यह सीधे टकराव के बिना दूर से हमला करने में सक्षम है। यह मिसाइल रडार प्रणालियों से बचने और जटिल इलाकों में प्रभावी ढंग से नेविगेट करने के लिए कम ऊंचाई पर उड़ान भरती है।

तकनीकी विशेषताएँ और मार्गदर्शन प्रणाली

टॉमहॉक दो-चरणीय प्रणोदन प्रणाली से संचालित होता है: प्रारंभिक प्रक्षेपण के लिए एक ठोस प्रणोदक बूस्टर और निरंतर उड़ान के लिए एक टर्बोफैन इंजन। इसका कम ऊष्मा उत्सर्जन इन्फ्रारेड सेंसरों का उपयोग करके इसका पता लगाना मुश्किल बनाता है। मिसाइल को GPS (ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम), INS (इनर्शियल नेविगेशन सिस्टम), TERCOM (टेरेन कॉन्टूर मैचिंग) और DSMAC (डिजिटल सीन मैचिंग एरिया कोरिलेशन) के संयोजन द्वारा निर्देशित किया जाता है, जिससे उच्च परिशुद्धता सुनिश्चित होती है। आधुनिक संस्करणों को लक्ष्य बदलने या मिशन रद्द करने के लिए उड़ान के बीच में भी पुनः प्रोग्राम किया जा सकता है।

क्रूज़ मिसाइल बनाम बैलिस्टिक मिसाइल

टॉमहॉक जैसी क्रूज़ मिसाइलें पृथ्वी के वायुमंडल में एक नियंत्रित, कम ऊँचाई वाले प्रक्षेप पथ को बनाए रखती हैं, जबकि बैलिस्टिक मिसाइलें गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव में वायुमंडल से बाहर निकलती और पुनः प्रवेश करती हुई प्रक्षेप्य पथ का अनुसरण करती हैं। क्रूज़ मिसाइलों की दूरी आमतौर पर कम होती है, जबकि बैलिस्टिक मिसाइलें अंतरमहाद्वीपीय दूरी तय कर सकती हैं।

क्रूज़ मिसाइलों के **भारतीय उदाहरणों** में ब्रह्मोस, निर्भय और एलआरएलएसीएम शामिल हैं, जबकि बैलिस्टिक मिसाइलों के उदाहरण अग्नि श्रृंखला, पृथ्वी I और II, धनुष, शौर्य, K-15 (सागरिका) और K-4 हैं। वैश्विक स्तर पर, टॉमहॉक (अमेरिका), कलिब्र (रूस), CJ-10 (चीन) और बाबर (पाकिस्तान) प्रमुख क्रूज़ मिसाइलें हैं, जबकि मिनटमैन III (अमेरिका), DF-41 (चीन), RS-24 यार्स (रूस) और शाहीन-II (पाकिस्तान) बैलिस्टिक मिसाइल प्रणालियाँ हैं।

रणनीतिक महत्व

टॉमहॉक की सटीकता, दूरी और गुप्त क्षमता इसे निवारक और आक्रामक दोनों अभियानों के लिए एक महत्वपूर्ण हथियार बनाती है। यूक्रेन में इसकी तैनाती यूक्रेन की मारक क्षमता का विस्तार करके पूर्वी यूरोप में सामरिक संतुलन को बदल सकती है। इसकी तात्कालिक सामरिक भूमिका से परे, ऐसा कदम संघर्ष में अमेरिकी सैन्य सहायता की गहरी प्रतिबद्धता का संकेत देगा।

- निर्माता: रेथियॉन टेक्नोलॉजीज़, यूएसए
- पहला परिचालन प्रयोग: 1991 का खाड़ी युद्ध
- गति: लगभग 880 किमी/घंटा (मैक 0.74)
- युद्धक क्षमता: लगभग 450 किलोग्राम (पारंपरिक या परमाणु)
- संधि संदर्भ: 1987 की *आईएनएफ संधि* ने मध्यम और मध्यवर्ती दूरी की मिसाइलों पर प्रतिबंध लगा दिया था, लेकिन 2019 में अमेरिका के हटने से ऐसी प्रणालियों के और आधुनिकीकरण की अनुमति मिल गई।
- भारतीय समकक्ष:** भारत और रूस द्वारा संयुक्त रूप से विकसित एक सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल *ब्रह्मोस*, जिसकी मारक क्षमता अब लगभग 800 किमी तक बढ़ा दी गई है।

"यदि मंज़िल न मिले तो रास्ते बदलो !
क्योंकि वृक्ष अपनी पत्तियाँ बदलते हैं जड़े नहीं !!"

"जब तक किसी काम को किया नहीं जाता !
तब तक वह असंभव ही लगता है !!"

सामाजिक मुद्दे एवं योजनाएँ

प्रधानमंत्री मोदी ने कृषि क्षेत्र में बदलाव लाने के लिए ₹35,440 करोड़ की कृषि योजनाओं का शुभारंभ किया

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ₹35,440 करोड़ के संयुक्त परिव्यय के साथ दो प्रमुख कृषि पहलों - प्रधानमंत्री धन धान्य कृषि योजना (पीएमडीडीकेवाई) और दलहन आत्मनिर्भरता मिशन - का शुभारंभ किया। इन प्रमुख योजनाओं का उद्देश्य कृषि उत्पादकता, किसानों की आय और दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना है, जो खाद्य सुरक्षा के लिए भारत के विज़न 2047 की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह शुभारंभ भारत रत्न लोकनायक जयप्रकाश नारायण की जयंती के अवसर पर हुआ, जिसमें ग्रामीण विकास और किसानों के कल्याण पर सरकार के फोकस पर ज़ोर दिया गया।

घोषणा की मुख्य विशेषताएँ

1. प्रधानमंत्री धन धान्य कृषि योजना (पीएमडीडीकेवाई)

- उद्देश्य: कम उत्पादकता, मध्यम फसल सघनता और औसत से कम ऋण पहुँच के आधार पर पहचाने गए 100 कृषि जिलों का विकास करना।
- परिव्यय: ₹24,000 करोड़ (मौजूदा योजनाओं से एकत्रित)।

फोकस क्षेत्र:

- फसल विविधीकरण और बेहतर ऋण पहुँच
- कृषि-बुनियादी ढाँचे का विकास (गोदाम, सिंचाई, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म)
- स्थानीय बाज़ारों और एफपीओ (किसान उत्पादक संगठन) को मज़बूत बनाना
- कार्यान्वयन: कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत, नाबार्ड और राज्य कृषि विभागों द्वारा समर्थित।

2. दलहन में आत्मनिर्भरता मिशन

- परिव्यय: ₹11,440 करोड़
- कार्यान्वयन अवधि: 2025-26 से 2030-31
- 2030-31 तक लक्ष्य:
- क्षेत्र विस्तार: 310 लाख हेक्टेयर
- उत्पादन लक्ष्य: 350 लाख टन
- उपज: 1,130 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर
- उद्देश्य: दलहन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना, आयात पर निर्भरता कम करना और फसल विविधीकरण को बढ़ावा देना।
- नोडल मंत्रालय: कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
- अनुमोदित: केंद्रीय मंत्रिमंडल, 1 अक्टूबर, 2025

प्रधानमंत्री 62,000 करोड़ रुपये से अधिक की युवा-केंद्रित पहलों का अनावरण करेंगे

पीएम-सेतु: आईटीआई का रूपांतरण

- योजना: उन्नत आईटीआई के माध्यम से प्रधानमंत्री कौशल एवं रोजगार क्षमता रूपांतरण (पीएम-सेतु)
- निवेश: 60,000 करोड़ रुपये (केंद्र प्रायोजित, विश्व बैंक और एशियाई विकास बैंक से वैश्विक सह-वित्तपोषण सहित)
- उद्देश्य: हब-एंड-स्पोक मॉडल (200 हब, 800 स्पोक) में 1,000 सरकारी आईटीआई का उन्नयन

बिहार में युवा-केंद्रित पहल

- मुख्यमंत्री निश्चय स्वयं सहायता भत्ता योजना: पाँच लाख स्नातक युवाओं को 1,000 रुपये का मासिक भत्ता और दो बच्चों के लिए निःशुल्क कौशल प्रशिक्षण वर्ष
- नवीनीकृत बिहार स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना: उच्च शिक्षा के लिए 4 लाख रुपये तक का ब्याज-मुक्त ऋण; 7,880 करोड़ रुपये के ऋण से 3.92 लाख छात्र लाभान्वित
- बिहार युवा आयोग: 18-45 आयु वर्ग के युवाओं के लिए वैधानिक आयोग
- जन नायक कर्पूरी ठाकुर कौशल विश्वविद्यालय: उद्योग-उन्मुख पाठ्यक्रम और व्यावसायिक शिक्षा

उच्च शिक्षा और अनुसंधान अवसंरचना

- पीएम-उषा (प्रधानमंत्री उच्चतर शिक्षा अभियान): पटना विश्वविद्यालय, भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, जय प्रकाश विश्वविद्यालय और नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय में नई सुविधाओं का शिलान्यास
- आवंटन: 160 करोड़ रुपये; आधुनिक प्रयोगशालाओं, छात्रावासों और बहु-विषयक शिक्षा से 27,000 से अधिक छात्रों को लाभ
- एनआईटी पटना, बिहटा परिसर: 6,500 छात्रों की क्षमता; इसमें 5G यूज़ केस लैब, क्षेत्रीय अंतरिक्ष शैक्षणिक केंद्र (इसरो के सहयोग से), और 9 स्टार्ट-अप्स को सहायता प्रदान करने वाला एक नवाचार एवं इनक्यूबेशन केंद्र शामिल है।

पीएम मोदी ने बिहार की मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना शुरू की

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बिहार की मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना शुरू की।

योजना क्या है?

बिहार की लगभग 75 लाख महिलाओं को सीधे बैंक ट्रांसफर के माध्यम से ₹10,000 मिलेंगे। इसका उद्देश्य हर परिवार की एक महिला को उनकी पसंद का कोई आय-सृजन करने वाला काम शुरू करने में मदद करना है - जैसे खेती, हस्तशिल्प, बुनाई, पशुपालन, आदि। बाद के चरणों में ₹2 लाख तक का अतिरिक्त सहायता मिल सकती है।

कैसे करें रजिस्ट्रेशन?

- ग्रामीण क्षेत्रों में: स्वयं सहायता समूह (SHG) की महिलाएं ग्राम संगठन के माध्यम से आवेदन कर सकती हैं।

- जो महिलाएं SHG की सदस्य नहीं हैं, उन्हें पहले ग्राम संगठन के माध्यम से SHG में शामिल होना होगा।
- शहरी क्षेत्रों में: योग्य महिलाएं, अगर वे पहले से SHG की सदस्य नहीं हैं, तो जीविका वेबसाइट (brlps.in) के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन कर सकती हैं।

और क्या सहायता मिलेगी?

SHG से जुड़े सामुदायिक संसाधन व्यक्तियों के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जाएगा। महिलाओं को अपने उत्पाद बेचने में मदद करने के लिए, सरकार राज्य भर में ग्रामीण हाट-बाजार (ग्रामीण बाजार) विकसित करेगी।

लघु लेख

भक्ति से विवाद तक: सबरीमाला स्वर्ण-लेपन विवाद के अंदर का सच

केरल उच्च न्यायालय ने प्रसिद्ध सबरीमाला मंदिर में स्वर्ण-लेपन कार्य में कथित अनियमितताओं की विस्तृत जाँच का आदेश दिया है। यह निर्णय उन रिपोर्टों के बाद आया है जिनमें कहा गया था कि मंदिर के अंदर स्वर्ण-लेपित "द्वारपालक" (द्वारपाल) मूर्तियों को अदालत को सूचित किए बिना मरम्मत के लिए चेन्नई ले जाया गया था, जो पहले के आदेशों के विरुद्ध है। मंदिर की सभी मूल्यवान वस्तुओं की जाँच के लिए उच्च न्यायालय के एक पूर्व न्यायाधीश को नियुक्त किया गया है, और मंदिर सतर्कता अधिकारी स्वर्ण-लेपन परियोजना में उठाए गए प्रत्येक कदम की समीक्षा करेंगे।

अदालत ने बड़ी अनियमितताओं की ओर इशारा किया

नियमों का उल्लंघन

अदालत ने कहा कि पहले के निर्देशों में स्पष्ट रूप से कहा गया था कि कोई भी मरम्मत या रखरखाव कार्य मंदिर के अंदर और पूर्व अनुमति के बाद ही किया जाना चाहिए। हालाँकि, स्वर्ण-लेपित मूर्तियों को बिना अनुमति के राज्य से बाहर ले जाया गया, जिससे प्रक्रिया की पारदर्शिता पर गंभीर संदेह पैदा हुआ।

ठेकेदार और कार्यप्रणाली पर संदेह

चेन्नई स्थित एक कंपनी, जिसने पहले लंबी वारंटी के तहत ऐसा ही काम किया था, को उसके प्रदर्शन के बारे में पहले की शिकायतों के बावजूद मरम्मत के लिए फिर से चुना गया। इससे चयन प्रक्रिया पर सवाल उठे।

परियोजना के प्रायोजक, उन्नीकृष्णन पोट्टी का मंदिर के अधिकारियों पर गहरा प्रभाव पाया गया। मंदिर का प्रबंधन करने वाले त्रावणकोर देवस्वोम बोर्ड (टीडीबी) के साथ उनकी भूमिका और संबंधों की अब जाँच की जा रही है।

गायब सोना और दोषपूर्ण प्रक्रिया

- जब मरम्मत की गई मूर्तियाँ और प्लेटें चेन्नई से वापस की गईं, तो अधिकारियों ने लगभग पाँच किलोग्राम सोने की कमी पाई। इसके बावजूद, कोई गंभीर कार्रवाई नहीं की गई और उसी ठेकेदार को काम जारी रखने दिया गया।
- बीच में ही प्रक्रिया में भी बदलाव किया गया - पारंपरिक सोने की परत चढ़ाने की जगह इलेक्ट्रोप्लेटिंग कर दी गई, जो सस्ती तो है लेकिन कम टिकाऊ है। यह बदलाव निजी परामर्श के बाद, अदालत या मंदिर अधिकारियों की उचित अनुमति के बिना किया गया था।
- अधिकारी यह सुनिश्चित करने में भी विफल रहे कि मरम्मत का काम मंदिर के नियमों के अनुसार उचित निगरानी में किया जाए।

प्रायोजक की भूमिका जाँच के घेरे में

- उन्नीकृष्णन पोट्टी, जिन्होंने शुरुआत में स्वर्ण-लेपन को प्रायोजित करने की पेशकश की थी, अब इस विवाद का मुख्य पात्र बन गए हैं। कभी मंदिर के सहायक रहे पोट्टी ने बाद में मंदिर से जुड़ी कई गतिविधियों को वित्तपोषित करके और प्रभावशाली लोगों के साथ मज़बूत संबंध बनाकर प्रभाव प्राप्त किया।
- जाँचकर्ताओं ने पाया कि मंदिर से गायब कुछ वस्तुएँ उनके परिवार के घर से बरामद हुईं, जिससे मंदिर की कीमती वस्तुओं के दुरुपयोग का संदेह और बढ़ गया।

पूर्व विवाद और जन प्रतिक्रिया

- यह पहली बार नहीं है जब सबरीमाला में स्वर्ण-लेपन ने ध्यान आकर्षित किया है। अतीत में भी इसी तरह की परियोजनाओं में इस्तेमाल किए गए सोने की मात्रा और काम के प्रबंधन को लेकर सवाल उठे थे।
- नए मामले ने जनता में रोष पैदा कर दिया है और मंदिर की संपत्ति और दान के प्रबंधन के तरीके को लेकर चिंताएँ पैदा कर दी हैं। कई भक्तों का मानना है कि जवाबदेही की कमी और मंदिर के मामलों पर निजी व्यक्तियों का बढ़ता प्रभाव भारत के सबसे पवित्र स्थलों में से एक की पवित्रता को नुकसान पहुँचा रहा है।

आगे क्या होगा

- उच्च न्यायालय ने सभी चल रहे मरम्मत कार्यों को रोक दिया है और आदेश दिया है कि सभी कीमती वस्तुओं को तुरंत मंदिर में वापस लाया जाए। अब एक विस्तृत जाँच परियोजना के हर चरण—परिवहन से लेकर सोने के उपयोग तक—की जाँच करेगी ताकि किसी भी गड़बड़ी के लिए ज़िम्मेदार लोगों की पहचान की जा सके।
- अगर जाँच में कुप्रबंधन या सोने की हानि की पुष्टि होती है, तो इसमें शामिल लोगों के खिलाफ सख्त कानूनी और प्रशासनिक कार्रवाई की उम्मीद है।
- कानूनी मुद्दों से परे, यह घोटाला एक और गहरी समस्या को उजागर करता है—धार्मिक संस्थानों के प्रबंधन में ईमानदारी, पारदर्शिता और सम्मान कैसे सुनिश्चित किया जाए। यह मामला मंदिरों की अखंडता की रक्षा करने और उनके प्रशासन में जनता का विश्वास बहाल करने की राज्य की क्षमता की परीक्षा बन गया है।

पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी

हिमाचल प्रदेश का शीत मरुस्थल जैवमंडल रिज़र्व यूनेस्को के वैश्विक नेटवर्क में शामिल

हिमाचल प्रदेश स्थित शीत मरुस्थल जैवमंडल रिज़र्व को यूनेस्को के विश्व जैवमंडल रिज़र्व नेटवर्क (WNBR) में शामिल कर लिया गया है। यह घोषणा चीन के हांग्जो में आयोजित विश्व जैवमंडल रिज़र्व सम्मेलन के दौरान की गई। पश्चिमी हिमालय में स्थित, यह रिज़र्व लगभग 7,770 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है, जो इसे वैश्विक महत्व का एक महत्वपूर्ण उच्च-ऊंचाई वाला पारिस्थितिकी तंत्र बनाता है।

मुख्य विशेषताएँ:

- उच्च-ऊंचाई वाला शीत मरुस्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र।
- ऊबड़-खाबड़ भूभाग, अल्पाइन घास के मैदान, बर्फ से सिंचित नदियाँ।
- हिम तेंदुआ, हिमालयी आइबेक्स और अन्य दुर्लभ प्रजातियों का आवास।

इतिहास:

- 2009 में राष्ट्रीय जैवमंडल रिज़र्व घोषित।
- अब यूनेस्को के वैश्विक नेटवर्क में शामिल होने वाला भारत का 13वाँ जैवमंडल रिज़र्व।
- संरक्षित क्षेत्र: पिन घाटी राष्ट्रीय उद्यान, किब्बर वन्यजीव अभयारण्य।
- मानव जनसंख्या: लगभग 12,000 निवासी।

वन्यजीव सप्ताह 2025: भारत ने प्रजातियों के संरक्षण पर पाँच राष्ट्रीय परियोजनाएँ शुरू कीं

केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव ने वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआई) परिसर स्थित इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी (आईजीएनएफए), देहरादून के हरि सिंह सभागार में वन्यजीव सप्ताह 2025 समारोह का उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम का विषय "मानव-वन्यजीव सह-अस्तित्व" था, जिसका उद्देश्य मानव और प्रकृति के बीच सामंजस्य को बढ़ावा देना था।

आयोजक संस्थाएँ

- समारोह का आयोजन संयुक्त रूप से निम्नलिखित द्वारा किया गया:
- पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफसीसी)
- भारतीय वन्यजीव संस्थान (डब्ल्यूआईआई)
- भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद (आईसीएफआरई)
- आईजीएनएफए और वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआई)

वन्यजीव संरक्षण के लिए पाँच प्रमुख परियोजनाएँ शुरू की गईं

1. प्रोजेक्ट डॉल्फिन (चरण II) - गंगा और सिंधु नदी की डॉल्फ़िन सहित नदी और समुद्री सीतासियों के बेहतर संरक्षण और निगरानी पर केंद्रित।
2. प्रोजेक्ट स्लॉथ बियर - भारतीय पर्यावासों में स्लॉथ भालुओं के संरक्षण के लिए एक राष्ट्रीय ढाँचे का शुभारंभ।
3. प्रोजेक्ट घड़ियाल - घड़ियालों की आबादी के संरक्षण और उनके नदी-पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्स्थापित करने हेतु कार्यान्वयन योजना।
4. मानव-वन्यजीव संघर्ष प्रबंधन उत्कृष्टता केंद्र (सीओई-एचडब्ल्यूसी) - कोयंबटूर स्थित सलीम अली पक्षीविज्ञान एवं प्राकृतिक इतिहास केंद्र (एसएसीओएन) में स्थापित किया जाएगा। यह नीतिगत समर्थन, क्षेत्रीय अनुसंधान और शमन रणनीतियाँ प्रदान करेगा।
5. टाइगर रिज़र्व के बाहर बाघ पहल - प्रौद्योगिकी, सामुदायिक सहभागिता और भू-दृश्य-स्तरीय योजना का उपयोग करके गैर-संरक्षित भू-दृश्यों में बाघ-मानव संघर्षों के प्रबंधन हेतु एक नया दृष्टिकोण।

अतिरिक्त मुख्य तथ्य:

- भारत में हर साल 2 से 8 अक्टूबर तक वन्यजीव सप्ताह मनाया जाता है।
- प्रोजेक्ट डॉल्फिन की घोषणा सबसे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2020 में राष्ट्रीय गंगा परिषद के तहत की थी।
- प्रोजेक्ट टाइगर 1973 में और प्रोजेक्ट एलीफेंट 1992 में शुरू किया गया था।
- भारत का वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 में लागू किया गया था।
- भारतीय वन्यजीव संस्थान (WII) का मुख्यालय देहरादून, उत्तराखंड में है।
- भारत में 54 बाघ अभयारण्य हैं (2025 तक), जो भारत के लगभग 2.3% भू-भाग को कवर करते हैं।
- घड़ियाल को IUCN की लाल सूची में गंभीर रूप से संकटग्रस्त के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।
- ग्रेट इंडियन बस्टर्ड भारत में सबसे गंभीर रूप से संकटग्रस्त पक्षी प्रजातियों में से एक है, जो मुख्य रूप से राजस्थान और गुजरात में पाई जाती है।

बिहार को दो नए रामसर स्थल मिले: गोकुल जलाशय और उदयपुर झील

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिहार की दो आर्द्रभूमियों को नए रामसर स्थलों के रूप में मान्यता मिलने पर खुशी जताई।

नए स्थल जोड़े गए:

- गोकुल जलाशय - बक्सर ज़िला
- उदयपुर झील - पश्चिम चंपारण ज़िला

महत्व:

- रामसर स्थल = रामसर कन्वेंशन (1971) के तहत नामित अंतर्राष्ट्रीय महत्व की आर्द्रभूमियाँ।
- रामसर कन्वेंशन मुख्यालय - ग्लैंड, स्विट्ज़रलैंड।
- भारत के कुल रामसर स्थल = 93 (क्षेत्रफल: 13,60,719 हेक्टेयर)।

अतिरिक्त मुख्य तथ्य:

- भारत का पहला रामसर स्थल (1981): चिल्का झील (ओडिशा) और केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (राजस्थान)।
- सबसे अधिक रामसर स्थलों वाला राज्य: तमिलनाडु (16 स्थल)।
- हाल ही में जोड़े गए स्थल (2024-25): गोकुल जलाशय (बक्सर, बिहार), उदयपुर झील (पश्चिम चंपारण, बिहार)।

आर्द्रभूमियों का महत्व:

- कार्बन सिंक के रूप में कार्य करें और बाढ़ नियंत्रण में मदद करें।
- स्थानीय समुदायों (मत्स्य पालन, कृषि, पर्यटन) को आजीविका प्रदान करें।
- वैश्विक रामसर संख्याएँ: दुनिया भर में 2,500 से अधिक स्थल, 250 मिलियन हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र को कवर करते हैं।
- विश्व आर्द्रभूमि दिवस: 2 फरवरी (रामसर कन्वेंशन को अपनाने का प्रतीक)।

"जितने वाले कुछ अलग चीज़े नहीं करते !
बस वो चीज़ो को अलग तरीके से करते हैं !!

"इंतेज़ार करने वालो को सिर्फ उतना मिलता है !
जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते है !!"

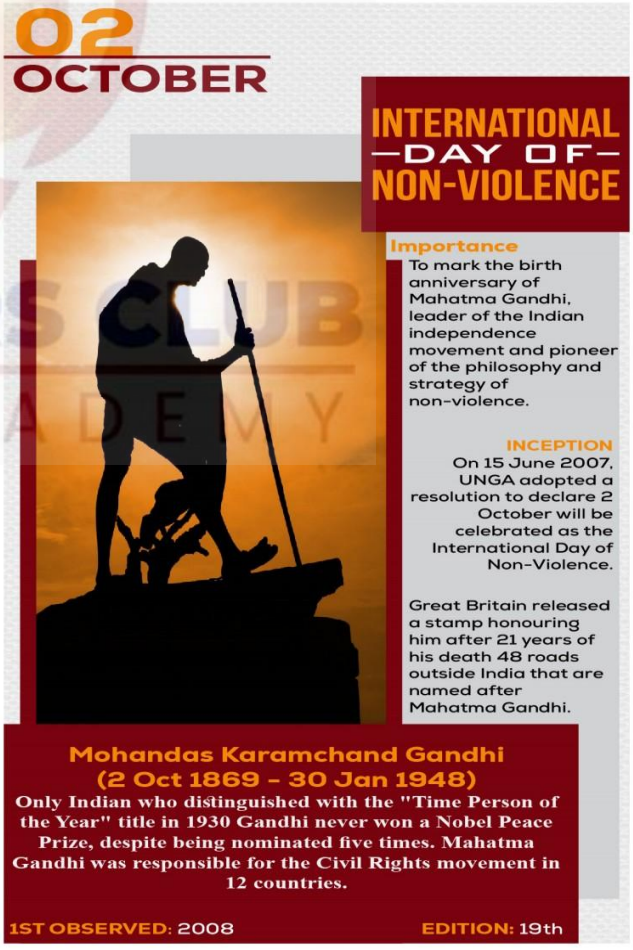

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

दक्षिण कोरिया ने पहली 3,600 टन की नौसैनिक हमलावर पनडुब्बी का प्रक्षेपण किया

दक्षिण कोरिया ने अपनी पहली 3,600 टन श्रेणी की हमलावर पनडुब्बी का प्रक्षेपण किया है, जो उसकी नौसैनिक रक्षा क्षमताओं को मज़बूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

चांगबोगो-III बैच-II कार्यक्रम का हिस्सा

ROKS जंग येओंग-सिल (SS-087) नामक यह पनडुब्बी, चांगबोगो-III (KSS-III) बैच-II श्रृंखला का प्रमुख पोत है। इसकी लंबाई 89 मीटर है और यह दक्षिण कोरियाई पनडुब्बियों की अगली पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती है।

उन्नत तकनीक और विशेषताएँ

नई पनडुब्बी उन्नत लड़ाकू और सोनार प्रणालियों, पानी के भीतर लंबे समय तक टिकने के लिए लिथियम-आयन बैटरियों और कम पहचान के लिए उन्नत स्टील्थ तकनीक से लैस है।

राष्ट्रीय रक्षा को मज़बूत करना

यह विकास क्षेत्रीय सुरक्षा तनावों के बीच दक्षिण कोरिया की पानी के भीतर निवारक क्षमताओं को बढ़ाता है और देश की बढ़ती रक्षा प्रौद्योगिकी विशेषज्ञता को उजागर करता है।

वितरण और भविष्य की योजनाएँ

यह पनडुब्बी 2027 तक नौसेना को मिलने की उम्मीद है, और इसी श्रेणी की दो अतिरिक्त पनडुब्बियाँ पहले से ही निर्माणाधीन हैं।

दक्षिण कोरिया

- राजधानी: सियोल
- मुद्रा: दक्षिण कोरियाई वोन
- राष्ट्रपति: ली जे म्युंग
- प्रधानमंत्री: किम मिन-सियोक

भारत ने पहला स्वदेशी एंटीबायोटिक - नैफिथ्रोमाइसिन विकसित किया

भारत ने अपनी पहली स्वदेशी एंटीबायोटिक, नैफिथ्रोमाइसिन, के विकास के साथ एक बड़ी वैज्ञानिक सफलता हासिल की है, जो दवा और जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। नैफिथ्रोमाइसिन प्रतिरोधी श्वसन संक्रमणों के विरुद्ध अत्यधिक प्रभावी है, जिससे यह कैंसर रोगियों और खराब नियंत्रित मधुमेह वाले लोगों के लिए विशेष रूप से लाभकारी है।

हीमोफीलिया के लिए स्वदेशी जीन थेरेपी परीक्षण

केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने एक अन्य वैज्ञानिक उपलब्धि पर भी प्रकाश डाला - हीमोफीलिया के उपचार हेतु जीन थेरेपी का भारत का पहला स्वदेशी नैदानिक परीक्षण। यह परीक्षण जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) के सहयोग से क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज (सीएमसी), वेल्लोर, तमिलनाडु में किया गया। इस थेरेपी ने शून्य रक्तस्राव के साथ 60-70% सुधार दर हासिल की, जो उल्लेखनीय सफलता दर्शाता है। इस नैदानिक परीक्षण के परिणाम दुनिया की सबसे प्रतिष्ठित चिकित्सा पत्रिकाओं में से एक, न्यू इंग्लैंड जर्नल ऑफ मेडिसिन में प्रकाशित हुए।

मानव जीनोम अनुक्रमण प्रगति

भारत ने 10,000 से अधिक मानव जीनोम का सफलतापूर्वक अनुक्रमण किया है और आने वाले वर्षों में इस संख्या को दस लाख तक बढ़ाने की योजना बना रहा है। यह प्रयास व्यक्तिगत चिकित्सा, आनुवंशिक अनुसंधान और रोग निवारण क्षमताओं को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाएगा।

अतिरिक्त मुख्य तथ्य:

- एंटीबायोटिक का नाम: नैफिथ्रोमाइसिन
- प्रकार: भारत का पहला स्वदेशी रूप से खोजा गया एंटीबायोटिक
- प्रतिरोधी श्वसन संक्रमणों के विरुद्ध प्रभावी
- लाभार्थी: कैंसर रोगी, मधुमेह रोगी
- विकसितकर्ता: जैव प्रौद्योगिकी विभाग के भारतीय वैज्ञानिक
- अन्य उपलब्धि: सीएमसी वेल्लोर में हीमोफीलिया के लिए स्वदेशी जीन थेरेपी परीक्षण
- सफलता दर: 60-70% सुधार, शून्य रक्तस्राव प्रकरण
- प्रकाशित: न्यू इंग्लैंड जर्नल ऑफ मेडिसिन
- जीनोम अनुक्रमण लक्ष्य: 10,000 से 1 मिलियन मानव जीनोम तक

यूआईडीएआई ने भारत के आईडी तकनीक पारिस्थितिकी तंत्र को मज़बूत करने के लिए एसआईटीएए (SITAA) शुरू किया

भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (यूआईडीएआई) ने भारत के डिजिटल पहचान पारिस्थितिकी तंत्र में नवाचार, सहयोग और तकनीकी प्रगति को बढ़ावा देने के लिए आधार के साथ नवाचार और प्रौद्योगिकी सहयोग योजना (एसआईटीएए) शुरू की है।

एसआईटीएए की मुख्य विशेषताएँ:

- सहयोग का दायरा: डिजिटल पहचान क्षेत्र में स्टार्टअप, शिक्षा जगत और उद्योग भागीदार।
- उद्देश्य: सुरक्षित, मापनीय और स्वदेशी पहचान तकनीकों का विकास करना।
- पायलट कार्यक्रम के लिए आवेदन: 15 नवंबर 2025 तक खुले हैं।

फोकस क्षेत्र:

- बायोमेट्रिक उपकरण और प्रमाणीकरण ढाँचे
- पहचान प्रबंधन में डेटा गोपनीयता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई)
- सुरक्षित पहचान अनुप्रयोग और समाधान

चीन के अपस्ट्रीम बांध निर्माण के बीच भारत ने 77 अरब डॉलर की जलविद्युत योजना का अनावरण किया

भारत ने 2047 तक ब्रह्मपुत्र बेसिन से 76 गीगावाट से अधिक जलविद्युत विकसित और परिवहन के लिए 6.4 ट्रिलियन रुपये ($77 अरब) की जलविद्युत पारेषण योजना की घोषणा की है, जिसका उद्देश्य बढ़ती घरेलू बिजली की माँग को पूरा करना और ऊर्जा सुरक्षा को मज़बूत करना है। यह योजना केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण (सीईए) द्वारा जारी की गई है।

जलविद्युत योजना की मुख्य विशेषताएँ

- कुल निवेश: ₹6.4 ट्रिलियन (लगभग 77 अरब डॉलर)
- शामिल जलविद्युत परियोजनाएँ: पूर्वोत्तर राज्यों में 12 उप-बेसिनों में 208 बड़ी जलविद्युत परियोजनाएँ।

क्षमता:

- जलविद्युत: 64.9 गीगावाट
- पंप-भंडारण संयंत्र: 11.1 गीगावाट

चरणवार लागत:

- चरण 1 (2035 तक): ₹1.91 ट्रिलियन
- चरण 2 (2035 के बाद): ₹4.52 ट्रिलियन
- शामिल राज्य: अरुणाचल प्रदेश, असम, सिक्किम, मिज़ोरम, मेघालय, मणिपुर, नागालैंड, पश्चिम बंगाल
- शामिल प्रमुख उपयोगिताएँ: एनएचपीसी, नीपको, एसजेवीएन

रणनीतिक और पर्यावरणीय संदर्भ

- ब्रह्मपुत्र नदी तिब्बत, चीन से निकलती है और भारत से होकर बांग्लादेश में बहती है।
- चीन की सीमा से लगे अरुणाचल प्रदेश में 52.2 गीगावाट जलविद्युत क्षमता है, जो इस बेसिन में सबसे अधिक है।
- भारत चिंतित है कि यारलुंग ज़ंगबो (ऊपरी ब्रह्मपुत्र) पर चीन का बांध भारत में शुष्क मौसम में जल प्रवाह को 85% तक कम कर सकता है, जिससे सीमा पार जल प्रबंधन एक रणनीतिक प्राथमिकता बन जाएगा।

यह योजना भारत के स्वच्छ ऊर्जा लक्ष्यों के अनुरूप है:

- 2030 तक 500 गीगावाट गैर-जीवाश्म ईंधन क्षमता
- 2070 तक शुद्ध शून्य कार्बन उत्सर्जन

योजना के उद्देश्य

- भारत में ऊर्जा सुरक्षा को बढ़ाना और बढ़ती बिजली की मांग को पूरा करना।
- पूर्वोत्तर क्षेत्र में जलविद्युत क्षमता को अधिकतम करना।
- कुशल विद्युत हस्तांतरण के लिए पारेषण अवसंरचना का विकास करना।
- भारत के नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों का समर्थन करना और जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करना।
- अपस्ट्रीम चीनी बांध परियोजनाओं के बीच सीमा पार जल संसाधनों पर रणनीतिक नियंत्रण को मजबूत करना।

भारत का गैलेक्सआई 2026 में 'मिशन दृष्टि' उपग्रह समूह लॉन्च करेगा

भारतीय अंतरिक्ष-तकनीक स्टार्टअप गैलेक्सआई ने अपने पहले उपग्रह मिशन - 'मिशन दृष्टि' की घोषणा की है, जिसका प्रक्षेपण 2026 की पहली तिमाही में होना है। यह मिशन गैलेक्सआई के महत्वाकांक्षी उपग्रह समूह कार्यक्रम की शुरुआत का प्रतीक है, जिसके तहत 2029 तक 8-12 उपग्रहों को तैनात किए जाने की उम्मीद है, जिससे लगभग वास्तविक समय में पृथ्वी अवलोकन क्षमताएँ सक्षम होंगी।

मिशन दृष्टि के बारे में

'मिशन दृष्टि' भारत का सबसे बड़ा निजी तौर पर निर्मित उपग्रह बनने वाला है, जिसका वजन 160 किलोग्राम है, और यह देश का उच्चतम-रिज़ॉल्यूशन वाला पृथ्वी अवलोकन उपग्रह होगा। यह गैलेक्सआई की स्वामित्व वाली सिंकफ्यूज़्ड ऑप्टो-एसएआर तकनीक का उपयोग करता है, जो सिंथेटिक अपर्चर रडार (एसएआर) और उच्च-रिज़ॉल्यूशन ऑप्टिकल सेंसर को एक ही प्लेटफ़ॉर्म पर जोड़ती है। यह अनूठा एकीकरण "सभी मौसमों में, हर समय" इमेजिंग को सक्षम बनाता है, जिससे प्रकाश या मौसम की स्थिति की परवाह किए बिना सटीक पृथ्वी अवलोकन डेटा प्राप्त होता है - जो राष्ट्रीय सुरक्षा, बुनियादी ढांचे और आपदा प्रबंधन कार्यों के लिए एक बड़ा लाभ है।

इस उपग्रह ने इसरो के यू आर राव उपग्रह केंद्र (यूआरएससी) में संरचनात्मक परीक्षण सफलतापूर्वक पूरे कर लिए हैं, जिससे अंतरिक्ष की कठोर परिस्थितियों के लिए इसकी तैयारी साबित होती है।

अनुप्रयोग

मिशन दृष्टि की उच्च-रिज़ॉल्यूशन (1.5-मीटर) इमेजिंग और त्वरित पुनरीक्षण क्षमता विभिन्न क्षेत्रों में सहायता करेगी, जिनमें शामिल हैं:
सरकार और रक्षा - सीमा निगरानी और सुरक्षा निगरानी
आपदा प्रबंधन - बाढ़, चक्रवात और जंगल की आग से निपटने की प्रतिक्रिया

- कृषि - फसल स्वास्थ्य और उत्पादकता मूल्यांकन
- बुनियादी ढांचा और उपयोगिताएँ - संपत्ति निगरानी और योजना
- वित्त और बीमा - जोखिम मूल्यांकन और दावा सत्यापन

महत्व

यह भारत के निजी अंतरिक्ष क्षेत्र में एक प्रमुख मील का पत्थर है, जो "मेक इन इंडिया" और "आत्मनिर्भर भारत" पहलों के तहत देश की आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देता है। वैश्विक भू-अवलोकन बाज़ार में भारत की उपस्थिति को मज़बूत करता है, और अग्रणी अंतरराष्ट्रीय कंपनियों के साथ प्रतिस्पर्धा करता है। आधुनिक भू-स्थानिक बुद्धिमत्ता में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI)-संचालित उपग्रह इमेजिंग की भूमिका को प्रदर्शित करता है।

गैलेक्सआई:

- सीईओ: सुयश सिंह
- स्थापना: 2020 (आईआईटी मद्रास के पूर्व छात्रों द्वारा)
- मिशन का उद्देश्य: वैश्विक अनुप्रयोगों के लिए लगभग वास्तविक समय में भू-अवलोकन

अमेरिका के साथ पाकिस्तान के AMRAAM मिसाइल सौदे का उसकी वायु शक्ति पर क्या प्रभाव पड़ेगा

अमेरिका ने पुष्टि की है कि रेथियॉन के साथ संशोधित हथियार अनुबंध के तहत पाकिस्तान को उन्नत हवा से हवा में मार करने

वाली मिसाइलें मिलेंगी। यह अनुबंध वाशिंगटन और इस्लामाबाद के बीच रक्षा सहयोग के एक नए चरण का प्रतीक है।

संशोधित हथियार अनुबंध का विवरण

अमेरिकी युद्ध विभाग ने घोषणा की है कि विस्तारित मिसाइल उत्पादन सौदे में पाकिस्तान विदेशी सैन्य खरीदारों में शामिल है। रेथियॉन को पिछले अनुबंध पर अतिरिक्त 41.6 मिलियन डॉलर मिले हैं, जिससे इस कार्यक्रम का कुल मूल्य 2.51 बिलियन डॉलर से अधिक हो गया है। इस अनुबंध में नवीनतम AMRAAM वेरिएंट, C8 और D3 का उत्पादन शामिल है, और सभी कार्य मई 2030 तक पूरा होने की उम्मीद है।

मिसाइल वितरण पर स्पष्टीकरण

अमेरिकी दूतावास ने स्पष्ट किया है कि पाकिस्तान को कोई नई AMRAAM नहीं मिलेगी। संशोधित अनुबंध पहले से वितरित हथियारों के रखरखाव और स्पेयर पार्ट्स समर्थन से संबंधित है। हालाँकि, मूल अमेरिकी युद्ध विभाग के दस्तावेज़ में पाकिस्तान को विदेशी सैन्य बिक्री कार्यक्रम के अंतर्गत आने वाले देशों में सूचीबद्ध किया गया था।

AMRAAM मिसाइल का महत्व

AIM-120 AMRAAM एक व्यापक रूप से प्रयुक्त दृश्य-सीमा से परे (BVR) वायु लड़ाकू हथियार है। इसकी "दागो और भूल जाओ" क्षमता इसे प्रक्षेपण के बाद स्वचालित रूप से लक्ष्यों को ट्रैक और फॉलो करने में सक्षम बनाती है, जिससे पायलट रडार लॉक बनाए बिना कई लक्ष्यों को निशाना बना सकते हैं। यह मिसाइल उन्नत संस्करणों, C8 और D3 में विकसित हुई है, जिनकी रेंज और सटीकता बढ़ी है। यह सभी मौसमों में काम कर सकती है और मध्यम से लंबी दूरी पर दुश्मन के विमानों को निशाना बना सकती है।

पाकिस्तान के F-16 बेड़े के साथ अनुकूलता

पाकिस्तान का F-16 बेड़ा AMRAAM प्रणाली के अनुकूल है। इन उन्नत मिसाइलों के एकीकरण से पाकिस्तान की वायु सेना की युद्धक क्षमताओं में वृद्धि होने की उम्मीद है, जो इन अमेरिकी-आपूर्ति वाले विमानों पर बहुत अधिक निर्भर करती है।

क्षेत्रीय निहितार्थ

अमेरिकी मिसाइल कार्यक्रम में पाकिस्तान को शामिल करना, भारत के साथ अपनी बढ़ती रणनीतिक साझेदारी को संतुलित करते हुए, पाकिस्तान की सेना के साथ संबंध बनाए रखने के वाशिंगटन के सतर्क प्रयास को दर्शाता है। इस्लामाबाद के लिए, AMRAAM सौदा घरेलू अस्थिरता और क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा के बीच उसकी हवाई क्षमताओं को मज़बूत कर सकता है।

दक्षिण कोरिया 27 नवंबर को नूरी स्पेस रॉकेट लॉन्च करेगा: कासा

दक्षिण कोरिया ने अपने स्वदेशी स्पेस रॉकेट नूरी (KSLV-II) का चौथा लॉन्च 27 नवंबर को करने का शेड्यूल तय किया है।

लॉन्च विंडो और जगह

अगर मुख्य तारीख इस्तेमाल नहीं हो पाती है, तो 28 नवंबर से 4 दिसंबर तक बैकअप विंडो है। यह लॉन्च कोरिया के दक्षिणी तट पर नारो स्पेस सेंटर से होगा।

पेलोड की जानकारी

रॉकेट में एक मुख्य सैटेलाइट के साथ 12 छोटे सैटेलाइट भी होंगे। छोटे सैटेलाइट अक्टूबर के आखिर तक लॉन्च साइट पर पहुंचने की उम्मीद है।

नई स्पेस एजेंसी के तहत पहला लॉन्च

यह मिशन हाल ही में बनी कोरिया एरोस्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (कासा) द्वारा मैनेज किया जाने वाला पहला लॉन्च है। कासा के नेतृत्व ने सफलता सुनिश्चित करने के लिए सावधानीपूर्वक तैयारी और टीमवर्क की ज़रूरत पर ज़ोर दिया है।

बजट और भविष्य की योजनाएं

दक्षिण कोरिया ने कासा के 2026 के बजट को 15% बढ़ाकर 1.11 ट्रिलियन वन कर दिया है। इस अतिरिक्त फंडिंग से सैटेलाइट डेवलपमेंट, चंद्र मिशन, रॉकेट टेक्नोलॉजी और स्पेस प्रोजेक्ट में निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा मिलेगा।

दक्षिण कोरिया

- राजधानी: सियोल
- मुद्रा: दक्षिण कोरियाई वन
- राष्ट्रपति: ली जे म्यूंग

भारतीय वायु सेना ने छह दशकों की सेवा के बाद मिग-21 लड़ाकू विमानों को सेवामुक्त किया

भारतीय वायु सेना (IAF) ने चंडीगढ़ में आयोजित एक औपचारिक सेवामुक्ति समारोह में मिग-21 लड़ाकू विमान को आधिकारिक रूप से सेवानिवृत्त कर दिया।

महत्व:

रूसी मूल के मिग-21 को 1960 के दशक में भारतीय वायु सेना में शामिल किया गया था। यह भारतीय वायु सेना का सबसे लंबे समय तक सेवा देने वाला लड़ाकू विमान था, जिसने 60 वर्षों से अधिक की सेवा पूरी की। इस विमान को पहली बार 1963 में चंडीगढ़ में युद्ध सेवा में शामिल किया गया था, और दिलबाग सिंह (जो बाद में 1981 में भारतीय वायु सेना प्रमुख बने) ने पहले स्क्वाड्रन का नेतृत्व किया था। एक औपचारिक फ्लाईपास्ट के साथ इस विमान को विदाई दी गई, जिसे रक्षा मंत्रालय ने एक "महान प्रतीक" और "निडर योद्धा" बताया था।

मिग-21 के बारे में:

मिकोयान-गुरेविच डिज़ाइन ब्यूरो, सोवियत संघ द्वारा डिज़ाइन किया गया। भारत में इसे "टाइप 77" उपनाम दिया गया है। सुपरसोनिक लड़ाकू विमान, मैक 2 (2,175 किमी/घंटा) से अधिक गति में सक्षम। 1965, 1971, कारगिल युद्ध (1999) और कई अन्य अभियानों में सेवा प्रदान की। दशकों तक भारतीय वायुसेना की रीढ़ रहा, जिसके बाद धीरे-धीरे सुखोई Su-30MKI, राफेल, तेजस LCA जैसे आधुनिक जेट विमानों ने इसकी जगह ले ली।

भारतीय वायु सेना:

- स्थापना: 8 अक्टूबर 1932।

- आदर्श वाक्य: "नभ स्पर्शं दीप्तम्" (गौरव के साथ आकाश को स्पर्श करें)।
- वर्तमान वायु सेना प्रमुख: एयर चीफ मार्शल ए.पी. सिंह।

अन्य प्रतिस्थापन:

भारतीय वायुसेना आत्मनिर्भर भारत पहल के तहत राफेल (फ्रांस), सुखोई Su-30MKI (रूस) और स्वदेशी HAL तेजस जैसे विमानों के साथ आधुनिकीकरण कर रही है।

सोना कॉमस्टार ने ह्यूमनॉइड विकसित करने के लिए जर्मनी की न्यूरा रोबोटिक्स के साथ साझेदारी की

ऑटो पार्ट्स निर्माता सोना कॉमस्टार ने भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ह्यूमनॉइड और औद्योगिक रोबोटों के संयुक्त विकास और औद्योगीकरण के लिए जर्मन कंपनी न्यूरा रोबोटिक्स GmbH के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं।

शक्तियों का संयोजन: प्रत्येक क्या लाता है

- सोना कॉमस्टार की भूमिका: यह अपनी इंजीनियरिंग और विनिर्माण विशेषज्ञता का योगदान देता है।
- न्यूरा रोबोटिक्स की भूमिका: यह अग्रणी संज्ञानात्मक रोबोटिक्स तकनीकें प्रदान करता है—जो "बुद्धिमान रोबोटिक्स" पर केंद्रित हैं और रोबोटिक्स में नवाचार की कमियों को पाटने पर केंद्रित हैं।

यह साझेदारी क्यों महत्वपूर्ण है

वैश्विक विनिर्माण और लॉजिस्टिक्स क्षेत्र "बुद्धिमान स्वचालन"—ऐसे रोबोट जो मनुष्यों के साथ सोच, अनुकूलन और काम कर सकते हैं—के कारण तेजी से बदलाव के दौर से गुजर रहे हैं। औद्योगिक रोबोट और ह्यूमनॉइड को तकनीकी प्रगति की अगली लहर के रूप में देखा जा रहा है, और इस सहयोग का उद्देश्य ऐसी तकनीकों के लिए नवाचार और मापनीयता के नए मानक स्थापित करना है।

ह्यूमनॉइड का विकास तेजी से क्यों हो रहा है?

- श्रम की कमी: कई देशों में बढ़ती उम्र की आबादी और कामगारों की कमी के कारण कारखानों, अस्पतालों और घरों में मानवरूपी सहायकों की माँग बढ़ रही है।
- अनुकूलनशीलता: मानवरूपी मानव-निर्मित स्थानों में काम कर सकते हैं—सीढ़ियाँ चढ़ सकते हैं, औज़ारों का इस्तेमाल कर सकते हैं और सुरक्षित रूप से बातचीत कर सकते हैं—बिना मौजूदा बुनियादी ढाँचे में बदलाव किए।
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता और तकनीकी प्रगति: कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सेंसर और हल्के पदार्थों में प्रगति मानवरूपी रोबोटों को ज़्यादा स्मार्ट, तेज़ और अधिक कुशल बनाती है।
- कारखानों से परे स्वचालन: उद्योगों को अब रसद, सेवाओं और स्वास्थ्य सेवा में रोबोटों की ज़रूरत है—ऐसे क्षेत्र जहाँ मानवरूपी रोबोट सबसे उपयुक्त हैं।
- भारी निवेश: बड़ी तकनीकी कंपनियाँ और निवेशक मानवरूपी रोबोटों को अगले खरब डॉलर के नवाचार के रूप में देखते हैं, जो तेज़ी से विकास को बढ़ावा दे रहे हैं।
- नवाचार का प्रतीक: मानवरूपी रोबोट कृत्रिम बुद्धिमत्ता और रोबोटिक्स के क्षेत्र में अग्रणी हैं, जो बुद्धिमत्ता को गतिशीलता और मानव-समान व्यवहार के साथ जोड़ते हैं।

न्यूरा रोबोटिक्स GmbH (जिसे अक्सर "न्यूरा रोबोटिक्स" कहा जाता है)

- स्थापना: 2019
- संस्थापक/सीईओ: डेविड रेगर
- मुख्यालय: मेटज़िंगन, जर्मनी (स्टटगार्ट के पास)

" कोशिश हमेशा आखरी सांस तक करनी चाहिए !
या तो लक्ष्य हासिल होगा या अनुभव !!"

"सफलता के लिए किसी भी ख़ास समय का
इंतज़ार मत करो !
बल्कि अपने हर समय को ख़ास बनालो !!"

TOPPERS CLUB IAS ACADEMY

संस्कृति एवं इतिहास

भारतीय मूल के इतिहासकार सुनील अमृत ने 2025 ब्रिटिश अकादमी पुस्तक पुरस्कार जीता

भारतीय मूल के इतिहासकार सुनील अमृत को उनकी पुस्तक "द बर्निंग अर्थ: एन एनवायर्नमेंटल हिस्ट्री ऑफ़ द लास्ट 500 इयर्स" के लिए 2025 ब्रिटिश अकादमी पुस्तक पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। 25,000 पाउंड का यह पुरस्कार मानविकी और सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में दुनिया की सर्वश्रेष्ठ गैर-काल्पनिक कृतियों को दिया जाता है। पुरस्कार समारोह लंदन स्थित ब्रिटिश अकादमी में आयोजित किया गया।

लेखक के बारे में:

- आयु: 46 वर्ष
- पेशा: येल विश्वविद्यालय, अमेरिका में इतिहास के प्रोफेसर
- जन्मस्थान: केन्या
- पारिवारिक पृष्ठभूमि: दक्षिण भारतीय माता-पिता के यहाँ जन्म
- प्रारंभिक जीवन: सिंगापुर में पले-बढ़े

विजेता पुस्तक - "द बर्निंग अर्थ" के बारे में

यह पुस्तक पिछले 500 वर्षों का एक व्यापक पर्यावरणीय इतिहास प्रस्तुत करती है, जिसमें यह पता लगाया गया है कि उपनिवेशीकरण, औद्योगीकरण और मानव बस्तियों ने कैसे ग्रह को आकार दिया है और वर्तमान जलवायु संकट में योगदान दिया है।

- यह मानव इतिहास को पर्यावरणीय परिवर्तन से जोड़ती है।
- यह पुस्तक कई महाद्वीपों और सदियों की यात्रा पर आधारित है, जिसमें अमेरिका की विजय से लेकर दक्षिण अफ्रीका में ब्रिटिश स्वर्ण खनन और ब्लैक डेथ से लेकर द्वितीय विश्व युद्ध तक शामिल हैं।
- निर्णायकों ने इसे "आज के जलवायु संकट की जड़ों को समझने के लिए महत्वपूर्ण पठन सामग्री" बताया।

ब्रिटिश अकादमी पुस्तक पुरस्कार के बारे में:

- स्थापना: 2013
- आयोजक: ब्रिटिश अकादमी, ब्रिटेन की राष्ट्रीय मानविकी और सामाजिक विज्ञान अकादमी
- पुरस्कार राशि: विजेता के लिए £25,000; प्रत्येक चयनित लेखक के लिए £1,000

लियोनेल मेसी ने रिकॉर्ड तोड़ प्रदर्शन के साथ 2025 एमएलएस गोल्डन बूट जीता

फुटबॉल के दिग्गज लियोनेल मेसी ने इंटर मियामी क्लब के साथ अपने दूसरे पूरे सीज़न में 29 गोल और 19 असिस्ट दर्ज करते हुए 2025 मेजर लीग सॉकर (एमएलएस) गोल्डन बूट जीत लिया है। यह मेसी और इंटर मियामी दोनों के लिए एक ऐतिहासिक क्षण है, क्योंकि वह क्लब के पहले गोल्डन बूट विजेता बन गए हैं।

मुख्य उपलब्धि

मेसी ने अपने प्रतिद्वंद्वियों डेनिस बौंगा और सैम सुरिज को पछाड़कर यह प्रतिष्ठित पुरस्कार जीता। उनके कुल 48 गोल (29 गोल + 19 असिस्ट) कार्लोस वेला के 2019 के 49 गोल के रिकॉर्ड से बस एक गोल कम थे, जो 30 की उम्र के बाद भी विश्व फुटबॉल में उनके निरंतर प्रभुत्व को दर्शाता है।

ऐतिहासिक उपलब्धियाँ

मेसी, टैटी कैस्टेलानोस (2021) के बाद एमएलएस गोल्डन बूट जीतने वाले पहले अर्जेंटीनाई खिलाड़ी बने। अपने शानदार 2024 सीज़न के बाद, वह एमएलएस के पहले लगातार एमवीपी (सबसे मूल्यवान खिलाड़ी) बनने की राह पर हैं। इस सीज़न में इंटर मियामी ने सपोर्टर्स शील्ड (सर्वश्रेष्ठ नियमित सीज़न रिकॉर्ड वाली टीम को प्रदान की जाने वाली) जीती थी।

एमएलएस गोल्डन बूट के बारे में

- एमएलएस गोल्डन बूट मेजर लीग सॉकर (यूएसए और कनाडा) के नियमित सीज़न में सबसे ज़्यादा गोल करने वाले खिलाड़ी को प्रतिवर्ष प्रदान किया जाता है।
- यदि खिलाड़ियों के गोल बराबर हो जाते हैं, तो असिस्ट का उपयोग टाईब्रेकर के रूप में किया जाता है।
- यह पुरस्कार आक्रामक उत्कृष्टता को मान्यता देता है और उत्तरी अमेरिकी फ़ुटबॉल में सर्वोच्च व्यक्तिगत सम्मानों में से एक है।

70वें फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार 2025: 'लापता लेडीज़' ने रिकॉर्ड 13 पुरस्कार जीते; आलिया भट्ट, अभिषेक बच्चन, कार्तिक आर्यन विजेताओं में शामिल

70वें फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार 2025 शनिवार को अहमदाबाद के कांकरिया लेक स्थित ईकेए एरिना में आयोजित किए गए। समारोह की मेज़बानी शाहरुख़ खान, करण जौहर और मनीष पॉल ने की और इसमें शाहरुख़ खान, कृति सनोन, काजोल और अन्य कलाकारों ने प्रस्तुति दी। फ़िल्म 'लापता लेडीज़' ने सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म, सर्वश्रेष्ठ निर्देशक, सर्वश्रेष्ठ पटकथा और समीक्षकों व सहायक भूमिकाओं में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता/अभिनेत्री सहित 13 पुरस्कार जीतकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया, और गली बॉय के पिछले रिकॉर्ड की बराबरी की।

फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार 2025 के प्रमुख विजेता

प्रमुख अभिनय पुरस्कार

- सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (पुरुष, मुख्य भूमिका): अभिषेक बच्चन (आई वांट टू टॉक) और कार्तिक आर्यन (चंदू चैंपियन)
- सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (महिला, प्रमुख भूमिका): आलिया भट्ट (जिगरा)
- आलोचकों का सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (पुरुष): राजकुमार राव (श्रीकांत)
- आलोचकों का सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (महिला): प्रतिभा रन्ता (लापता लेडीज)

- सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता (पुरुष): रवि किशन (लापता लेडीज़)
- सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता (महिला): छाया कदम (लापता लेडीज)
- सर्वश्रेष्ठ नवोदित अभिनेता (पुरुष): लक्ष्य (किल)
- सर्वश्रेष्ठ नवोदित अभिनेत्री (महिला): नितांशी गोयल (लापता लेडीज)

प्रमुख फ़िल्म एवं निर्देशन पुरस्कार

- सर्वश्रेष्ठ फिल्म: लापता लेडीज
- सर्वश्रेष्ठ निर्देशक: किरण राव (लापता लेडीज़)
- समीक्षकों की सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म: आई वांट टू टॉक (शूजीत सरकार)
- सर्वश्रेष्ठ नवोदित निर्देशक: कुणाल खेमू (मडगांव एक्सप्रेस), आदित्य सुहास जंभाले (आर्टिकल 370)

लेखन एवं संगीत पुरस्कार

- सर्वश्रेष्ठ पटकथा: स्नेहा देसाई (लापता लेडीज़)
- सर्वश्रेष्ठ कहानी: आदित्य धर और मोनाल ठक्कर (अनुच्छेद 370)
- सर्वश्रेष्ठ संवाद: स्नेहा देसाई (लापता लेडीज)
- सर्वश्रेष्ठ संगीत एल्बम: राम संपत (लापता लेडीज़)
- सर्वश्रेष्ठ गीत: प्रशांत पांडे (लापता लेडीज़)
- सर्वश्रेष्ठ पार्श्वगायक (पुरुष): अरिजीत सिंह (लापता लेडीज)
- सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका (महिला): मधुबंती बागची (स्त्री 2)
- सर्वश्रेष्ठ बैकग्राउंड स्कोर: राम संपत (लापता लेडीज़)

तकनीकी पुरस्कार

- सर्वश्रेष्ठ एक्शन: सीयॉन्ग ओह और परवेज़ शेख (किल)
- सर्वश्रेष्ठ ध्वनि डिज़ाइन: सुबाष साहू (किल)
- सर्वश्रेष्ठ वीएफएक्स: रिडिफाइन (मुंज्या)
- सर्वश्रेष्ठ कोरियोग्राफी: बॉस्को-सीज़र (तौबा-तौबा, बैड न्यूज़)
- सर्वश्रेष्ठ संपादन: शिवकुमार वी. पनिकर (किल)
- सर्वश्रेष्ठ कॉस्ट्यूम डिज़ाइन: दर्शन जालान (लापता लेडीज़)
- सर्वश्रेष्ठ प्रोडक्शन डिज़ाइन: मयूर शर्मा (किल)
- सर्वश्रेष्ठ छायांकन: रफ़ी महमूद (किल)
- सर्वश्रेष्ठ रूपांतरित पटकथा: रितेश शाह और तुषार शीतल जैन (आई वांट टू टॉक)

विशेष पुरस्कार

- लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार: ज़ीनत अमान और श्याम बेनेगल (मरणोपरांत)
- संगीत में उभरती प्रतिभा के लिए आरडी बर्मन पुरस्कार: अचिंत ठक्कर (जिगरा, मिस्टर एंड मिसेज़ माही)

सोनू निगम को राष्ट्रीय लता मंगेशकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया

प्रसिद्ध पार्श्व गायक सोनू निगम को सुगम संगीत के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए इंदौर में राष्ट्रीय लता मंगेशकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने लता मंगेशकर की 96वीं जयंती पर उनके जन्मस्थान पर प्रदान किया।

राष्ट्रीय लता मंगेशकर पुरस्कार के बारे में

- स्थापना: 1984, मध्य प्रदेश के संस्कृति विभाग द्वारा
- उद्देश्य: सुगम संगीत में कलात्मक उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करना
- पूर्व प्राप्तकर्ता: नौशाद, किशोर कुमार और आशा भोसले जैसे दिग्गज कलाकार

सोनू निगम:

- जन्म 30 जुलाई, 1973, कोलकाता में; बॉलीवुड, कन्नड़, तेलुगु और तमिल संगीत उद्योगों में पार्श्व गायन के लिए प्रसिद्ध।
- सुगम संगीत: एक ऐसी शैली जो शास्त्रीय, लोक और लोकप्रिय संगीत के तत्वों को मिलाकर आम दर्शकों के लिए सुलभ बनाती है।

संस्कृत विद्वान भद्रेशदास को 2024 का सरस्वती सम्मान

प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान महामहोपाध्याय साधु भद्रेशदास को संस्कृत में लिखी उनकी पुस्तक "स्वामीनारायण सिद्धांत सुधा" के लिए प्रतिष्ठित सरस्वती सम्मान 2024 के लिए चुना गया है, केके बिड़ला फाउंडेशन ने घोषणा की है।

सरस्वती सम्मान के बारे में

- केके बिड़ला फाउंडेशन द्वारा 1991 में स्थापित।
- यह भारत के सबसे प्रतिष्ठित साहित्यिक पुरस्कारों में से एक है, जो किसी भी भारतीय भाषा में उत्कृष्ट साहित्यिक कृति के लिए प्रतिवर्ष दिया जाता है।
- पात्र कृतियाँ किसी भारतीय नागरिक द्वारा पिछले 10 वर्षों के भीतर प्रकाशित होनी चाहिए।
- इस पुरस्कार में एक प्रशस्ति पत्र, एक पट्टिका और ₹15 लाख का नकद पुरस्कार दिया जाता है।
- चयन समिति के अध्यक्ष वर्तमान में सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति अर्जन कुमार सीकरी हैं।

साधु भद्रेशदास के बारे में

- 1966 में महाराष्ट्र के नांदेड़ में जन्मे, वे एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित संस्कृत विद्वान और BAPS (बोचासनवासी अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था) के एक दीक्षित भिक्षु हैं।
- भारतीय दर्शन के एक अग्रणी बुद्धिजीवी के रूप में मान्यता प्राप्त, पारंपरिक वैदिक ज्ञान के संरक्षण और संवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान के साथ।
- भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद (ICPR) से कई प्रतिष्ठित उपाधियों और आजीवन उपलब्धि पुरस्कार से सम्मानित।

पुरस्कार विजेता कृति के बारे में

- 2022 में प्रकाशित स्वामीनारायण सिद्धांत सुधा, प्रस्थानत्रयी पर विस्तार से प्रकाश डालती है और अक्षर-पुरुषोत्तम दर्शन की दार्शनिक दृष्टि प्रस्तुत करती है।

- यह कृति दर्शाती है कि भारत की दार्शनिक खोजों की परंपरा जीवित और विकसित हो रही है, और आज भी नई दार्शनिक अंतर्दृष्टि उत्पन्न कर रही है।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने राष्ट्रीय भूविज्ञान पुरस्कार 2024 प्रदान किए

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने राष्ट्रपति भवन सांस्कृतिक केंद्र, नई दिल्ली में राष्ट्रीय भूविज्ञान पुरस्कार (एनजीए) 2024 प्रदान किए।

पुरस्कारों के बारे में:

- भूविज्ञान के क्षेत्र में भारत के सबसे पुराने और प्रतिष्ठित सम्मानों में से एक।
- भूविज्ञान में प्रतिबद्धता, नवाचार और उत्कृष्टता को मान्यता।

पुरस्कार वितरण:

3 श्रेणियों में 12 पुरस्कारों के अंतर्गत कुल 20 पुरस्कार विजेता:

आजीवन उपलब्धि के लिए राष्ट्रीय भूविज्ञान पुरस्कार - 1 पुरस्कार प्रो. श्याम सुंदर राय (आईएनएसए वैज्ञानिक और विजिटिंग प्रोफेसर, आईआईएसईआर पुणे) को प्रायद्वीपीय भारत, पश्चिमी हिमालय और लद्दाख में भूकंपीय अनुसंधान सहित ठोस पृथ्वी और अन्वेषण भूभौतिकी में योगदान के लिए प्रदान किया गया।

राष्ट्रीय युवा भूवैज्ञानिक पुरस्कार - 1 पुरस्कार

मेघालय, झारखंड, बुंदेलखंड क्रेटन के विवर्तनिक विकास पर अग्रणी कार्य, सुपरकॉन्टिनेंट संयोजन और खनिज उत्पत्ति के ज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए, जीएसआई के वरिष्ठ भूविज्ञानी श्री सुशोभन नियोगी को प्रदान किया गया।

राष्ट्रीय भूविज्ञान पुरस्कार - विभिन्न क्षेत्रों में 10 पुरस्कार।

राष्ट्रीय भूविज्ञान पुरस्कार:

- प्रारंभ: 1966।
- आयोजक: खान मंत्रालय, भारत सरकार।
- केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री (2025): जी. किशन रेड्डी।

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई):

- 1851 में स्थापित (2025 में 175 वर्ष पूरे होने का जश्न)।
- मुख्यालय कोलकाता में।
- खनिज अन्वेषण और मानचित्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भारत में खनन क्षेत्र:

- भारत के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 2.5% का योगदान देता है।
- महत्वपूर्ण रोजगार प्रदान करता है और संबद्ध उद्योगों को समर्थन देता है।

दुर्लभ मृदा तत्व (आरईई):

- 17 महत्वपूर्ण खनिजों का समूह।
- केरल, ओडिशा, झारखंड, राजस्थान, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में पाया जाता है।
- भारत का लक्ष्य आत्मनिर्भर भारत के तहत आयात पर निर्भरता कम करना है।

एनएसडी और भारत भवन ने रंगमंडल रंगमंडल को पुनर्जीवित करने के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एनएसडी) और भारत भवन, भोपाल ने रंगमंडल रंगमंडल को पुनर्जीवित करने के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं, जो 20 वर्षों से अधिक समय से निष्क्रिय था। इस समझौते का उद्देश्य मध्य प्रदेश में रंगमंच संस्कृति को पुनर्जीवित करना और पूरे भारत में गुणवत्तापूर्ण नाट्य प्रदर्शनों को बढ़ावा देना है। इस समझौता ज्ञापन पर 11 अक्टूबर 2025 को केंद्रीय संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत और मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए गए।

इस पहल के बारे में:

रंगमंडल रंगमंडल कभी भारत भवन के अधीन एक प्रतिष्ठित रंगमंच समूह था, जो भारतीय नाटक और प्रदर्शन कलाओं को बढ़ावा देने के लिए जाना जाता था। पुनर्जीवित संयुक्त एनएसडी-भारत भवन रंग मंडल कलाकारों, नाटककारों और रंगमंच के छात्रों को क्षेत्रीय और राष्ट्रीय प्रस्तुतियों के सहयोग और प्रदर्शन के लिए एक मंच प्रदान करेगा। इस पहल का उद्देश्य युवा प्रतिभाओं को पोषित करना, भारत की समृद्ध नाट्य परंपराओं को संरक्षित करना और प्रदर्शन कला शिक्षा तक पहुँच का विस्तार करना है।

"निंदा से घबराकर अपने लक्ष्य को न छोड़े !
क्योंकि लक्ष्य प्राप्त होते ही निंदा करने वालो की राय बदल जाती है !!

"यह ज़रूरी नहीं कि आपकी उम्र क्या है !
ज़रूरी यह है कि आप किस उम्र की सोच रखते हो !!"

खेल-कूद

फॉर्मूला 1: वेरस्टैपेन ने यूएस ग्रां प्री स्प्रिंट पोल जीता

मैक्स वेरस्टैपेन ने टेक्सास के ऑस्टिन स्थित सर्किट ऑफ द अमेरिकाज में 2025 यूनाइटेड स्टेट्स ग्रां प्री में अपना दबदबा कायम रखते हुए सीज़न की अपनी पाँचवीं जीत हासिल की। पोल पोजीशन से शुरुआत करते हुए, वेरस्टैपेन ने पूरी रेस में अपनी बढ़त बनाए रखी और मैकलारेन के लैंडो नॉरिस से 7.959 सेकंड आगे रहे, जिन्होंने फेरारी के चार्ल्स लेक्लर को मामूली अंतर से पीछे छोड़ते हुए दूसरा स्थान हासिल किया।

रेस परिणाम

स्थिति	ड्राइवर	टीम
1.	मैक्स वेरस्टैपेन	रेड बुल रेसिंग
2.	लैंडो नॉरिस	मैकलारेन-मर्सिडीज
3.	चार्ल्स लेक्लर	फेरारी

चैंपियनशिप के निहितार्थ

इस जीत के साथ, वेरस्टैपेन ने ड्राइवर्स चैंपियनशिप स्टैंडिंग में अंतर कम कर दिया है, अब वह लीडर ऑस्कर पियास्त्री से 40 अंक पीछे हैं। मैकलारेन के नॉरिस अभी भी दौड़ में बने हुए हैं, लेकिन वेरस्टैपेन का लगातार अच्छा प्रदर्शन सीज़न के आगे बढ़ने के साथ शीर्ष दावेदारों पर दबाव बढ़ा रहा है।

भारत के जॉबी मैथ्यू ने काहिरा में 2025 पैरा पावरलिफ्टिंग विश्व चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीता

भारतीय पैरा पावरलिफ्टर जॉबी मैथ्यू ने मिस्र के काहिरा में आयोजित 2025 पैरा पावरलिफ्टिंग विश्व चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीता। उन्होंने 65 किग्रा लीजेंड (मास्टर्स) वर्ग में भाग लिया और कुल 300 किग्रा भार उठाया, जिसमें 148 किग्रा और 152 किग्रा भार सफलतापूर्वक उठाया। इस प्रदर्शन ने बीजिंग विश्व कप 2025 में बनाए गए उनके 150 किग्रा के व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन को तोड़ दिया। स्वर्ण पदक थाईलैंड के फोंगसाकोन चुमचाई (162 किग्रा) ने जीता और रजत पदक पेरू के नील ग्रासिया (161 किग्रा) ने जीता।

पैरा पावरलिफ्टिंग विश्व चैंपियनशिप 2025 के बारे में:

- मेजबान शहर: काहिरा, मिस्र
- आयोजक: अंतर्राष्ट्रीय पैरालंपिक समिति (आईपीसी) के तहत विश्व पैरा पावरलिफ्टिंग (डब्ल्यूपीपी) द्वारा
- यह चैंपियनशिप 2028 लॉस एंजिल्स पैरालिंपिक के लिए एक क्वालीफाइंग इवेंट के रूप में कार्य करती है।

लिनथोई चानम्बम ने जूडो जूनियर विश्व चैंपियनशिप में भारत को पहला पदक दिलाकर इतिहास रचा

मणिपुर की 19 वर्षीय जूडोका लिनथोई चानम्बम ने पेरू के लीमा में आयोजित 2025 की जूडो जूनियर विश्व चैंपियनशिप में भारत को पहला पदक दिलाकर इतिहास रच दिया। उन्होंने महिलाओं के 63 किलोग्राम वर्ग में नीदरलैंड की जोनी गेलेन को हराकर कांस्य पदक जीता। चनम्बम ने अपना ग्रुप डी मैच जापान की सो मोरीचिका से हारने के बाद रेपेचेज राउंड के ज़रिए पदक के लिए प्रवेश किया, जो बाद में फाइनल में पहुँच गईं।

जूडो शासी निकाय: अंतर्राष्ट्रीय जूडो महासंघ (IJF)

- स्थापना: 11 जुलाई 1951
- मुख्यालय: बुडापेस्ट, हंगरी
- अध्यक्ष: मारियस वाइज़र

प्रमोद भगत ने अबिया पैरा बैडमिंटन इंटरनेशनल में तिहरा स्वर्ण पदक जीता

प्रमोद भगत ने नाइजीरिया के अबिया में आयोजित पहले अबिया पैरा बैडमिंटन इंटरनेशनल में विभिन्न श्रेणियों में तीन स्वर्ण पदक जीतकर अपना दबदबा बनाया।

स्वर्ण पदक: स्पर्धाएँ और साझेदार

- पुरुष एकल SL3: फाइनल में हमवतन भारतीय मंटू कुमार को हराया।
- पुरुष युगल: सुकांत कदम के साथ मिलकर पेरू के वर्गास/रोजास की जोड़ी के खिलाफ स्वर्ण पदक जीता।
- मिश्रित युगल (SL3-SU5): आरती पाटिल के साथ जोड़ी बनाकर एक करीबी फाइनल मैच जीतकर स्वर्ण पदक अपने नाम किया।

अन्य भारतीय एथलीटों के मुख्य आकर्षण

- रणजीत सिंह: तीन कांस्य पदक जीते (पुरुष एकल WH1, पुरुष युगल WH1-WH2, मिश्रित युगल WH1-WH2)।
- नुरुल हुसैन खान: पुरुष एकल WH2 में रजत।
- उमा सरकार: महिला एकल SL3 में रजत; साथ ही आरती के साथ महिला युगल SL3-SU5 में कांस्य।
- अन्य: नीलेश गायकवाड़ (पुरुष SL4) और कनक सिंह जादौन (महिला SL4) को कांस्य।
- पुरुष एकल SU5: भारत ने तीनों पोडियम स्थान हासिल किए—करण पनीर ने स्वर्ण, राहुल विमल ने रजत और सतीवाड़ा ने कांस्य पदक जीता।

भारत ने 22 पदकों के साथ विश्व पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2025 का समापन किया

भारत ने नई दिल्ली में आयोजित विश्व पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2025 में अपना अभियान कुल 22 पदकों - 6 स्वर्ण, 9 रजत और 7 कांस्य - के साथ समाप्त किया। यह प्रतियोगिता जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में आयोजित हुई और इसमें दुनिया भर के शीर्ष पैरा एथलीटों ने भाग लिया।

यह उपलब्धि क्यों महत्वपूर्ण है

यह पैरा एथलेटिक्स, विशेष रूप से ट्रैक और फ़ील्ड स्पर्धाओं में भारत की मज़बूत प्रगति को दर्शाता है। यह टोक्यो 2020 पैरालिंपिक और हांग्जो 2022 एशियाई पैरा खेलों में मिली सफलता को जारी रखता है। यह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन करने वाले भारत के प्रतिभाशाली पैरा एथलीटों के बढ़ते समूह को दर्शाता है।

2025 चैंपियनशिप में भारत की पदक तालिका

- कुल पदक: 22
- स्वर्ण: 6
- रजत: 9
- कांस्य: 7

मीराबाई चानू ने नॉर्वे में विश्व चैंपियनशिप में महिलाओं के 48 किग्रा वर्ग में रजत पदक जीता

भारतीय भारोत्तोलक मीराबाई चानू ने नॉर्वे के फोर्डे में आयोजित विश्व भारोत्तोलन चैंपियनशिप 2025 में महिलाओं के 48 किग्रा वर्ग में रजत पदक जीता। चानू ने कुल 199 किग्रा (स्नैच - 84 किग्रा, क्लीन एंड जर्क - 115 किग्रा) भार उठाया। 2022 के बाद से यह उनकी पहली विश्व चैंपियनशिप थी और पेरिस 2024 ओलंपिक में चौथे स्थान पर रहने के बाद उनकी दूसरी प्रतियोगिता थी। री सोंग-गम (उत्तर कोरिया) ने 213 किग्रा भार उठाकर स्वर्ण पदक जीता।

मीराबाई चानू - संक्षिप्त तथ्य

- पूरा नाम: सैखोम मीराबाई चानू
- जन्मस्थान: मणिपुर, भारत (1994)
- प्रतियोगिता: महिलाओं का 48 किग्रा/49 किग्रा भारोत्तोलन

उल्लेखनीय उपलब्धियाँ:

- टोक्यो 2020 ओलंपिक - रजत (49 किग्रा)
- विश्व चैंपियनशिप 2017 (अनाहेम, अमेरिका) - स्वर्ण (48 किग्रा)
- राष्ट्रमंडल खेल - स्वर्ण (2018, 2022)
- पद्म श्री (2018), खेल रत्न (2018)।

भारत ने एशिया कप 2025 जीता, अभिषेक शर्मा और कुलदीप यादव ने जीते शीर्ष पुरस्कार

दुबई में आयोजित एशिया कप 2025 टी20आई में भारत ने पाकिस्तान को 5 विकेट से हराकर अपना दूसरा एशिया कप टी20आई खिताब जीता।

पुरस्कार राशि:

- भारत (विजेता): ₹21 करोड़
- पाकिस्तान (उपविजेता): ₹75,000

प्रमुख प्रदर्शन और पुरस्कार

- प्लेयर ऑफ़ द मैच (फ़ाइनल): तिलक वर्मा - प्रभावशाली रन बनाए; सबसे ज़्यादा छक्के (4) लगाए।
- गेमचेंजर ऑफ़ द मैच: शिवम दुबे - 22 गेंदों पर 33 रन।
- जीडब्ल्यूएम प्लेयर ऑफ़ द टूर्नामेंट: अभिषेक शर्मा - 314 रन, स्ट्राइक रेट 200, औसत 44; ₹15,000 + हवल कार प्राप्त की।
- मोस्ट वैल्यूएबल प्लेयर (टूर्नामेंट): कुलदीप यादव - 17 विकेट; ट्रॉफी + 15,000 अमेरिकी डॉलर प्रदान किए गए।
- विशेष नोट: भारतीय टीम ने पाकिस्तानी प्रतिनिधियों से जुड़े पुरस्कार समारोह का बहिष्कार किया।
- एशिया कप: एशियाई क्रिकेट परिषद (एसीसी) द्वारा आयोजित, पहली बार 1984 में आयोजित किया गया।
- प्रारूप: टी20आई (2016 से) और वनडे (मूल प्रारूप)।
- भारत के एशिया कप टी20आई खिताब: 2 (2025 में नवीनतम)।
- पाकिस्तान के एशिया कप टी20आई खिताब: 2 (2022 में नवीनतम)।
- एशिया कप इतिहास में उल्लेखनीय भारतीय खिलाड़ी: विराट कोहली, रोहित शर्मा, एमएस धोनी, सूर्यकुमार यादव।
- स्थल का महत्व: दुबई क्रिकेट स्टेडियम (जैसे, दुबई अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम) अक्सर तटस्थ स्थल व्यवस्था के कारण एशिया कप फाइनल की मेजबानी करते हैं।
- एशिया कप ट्रॉफी मूल्य: विजेताओं को आमतौर पर नकद पुरस्कार + ट्रॉफी मिलती है; एसीसी पुरस्कार प्लेयर ऑफ़ द मैच, प्लेयर ऑफ़ द सीरीज़, सर्वाधिक छक्के, गेमचेंजर आदि को मान्यता देते हैं।
- भारत के वर्तमान टी20I कप्तान (2025): सूर्यकुमार यादव।

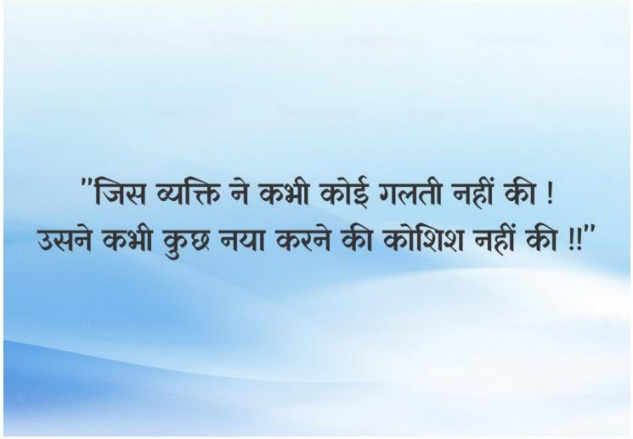

निधन

पद्मश्री पीयूष पांडे, प्रतिष्ठित भारतीय विज्ञापन निर्माता, का 70 वर्ष की आयु में निधन

भारतीय विज्ञापन जगत के शिल्पकार के रूप में विख्यात पीयूष पांडे का 70 वर्ष की आयु में निधन हो गया। विज्ञापनों को जीवंतता प्रदान करने के लिए जाने जाने वाले, उन्होंने एक स्वदेशी शैली विकसित करके भारतीय विज्ञापन जगत में क्रांति ला दी, जिस पर पहले पश्चिमी दृष्टिकोण हावी थे।

कार्यक्रम की मुख्य उपलब्धियाँ:

- ओगिल्वी एंड माथर में मुख्य रचनात्मक अधिकारी (2019) और भारत में कार्यकारी अध्यक्ष।
- विज्ञापन के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए 2016 में पद्मश्री से सम्मानित।
- ओगिल्वी इंडिया को विश्व के सबसे रचनात्मक कार्यालयों में से एक में बदलने का श्रेय।
- फेविकोल, कैडबरी, लूना मोपेड, सनलाइट डिटर्जेंट और एशियन पेंट्स के लिए प्रतिष्ठित अभियान बनाए।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा:

- 1955 में नौ भाई-बहनों वाले परिवार में जन्मे, जिनमें गायिका इला अरुण और फिल्म निर्देशक प्रसून पांडे शामिल थे।
- सेंट जेवियर्स स्कूल, जयपुर से पढ़ाई की और सेंट स्टीफंस कॉलेज, दिल्ली से इतिहास में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की।
- 1982 में ओगिल्वी में क्लाइंट सर्विसिंग एक्जीक्यूटिव के रूप में शामिल हुए; पहला विज्ञापन सनलाइट डिटर्जेंट के लिए लिखा था।
- 1988 में क्रिएटिव विभाग में स्थानांतरित होकर, विज्ञापन में 40 साल के शानदार करियर की शुरुआत की।

विज्ञापन के अलावा योगदान:

राष्ट्रीय एकता अभियान (1988) के लिए देशभक्ति गीत "मिले सुर मेरा तुम्हारा" की रचना की। फिल्म भोपाल एक्सप्रेस की पटकथा का सह-लेखन किया। जॉन अब्राहम और नरगिस फाखरी अभिनीत फिल्म मद्रास कैफे में कैबिनेट सचिव के रूप में पर्दे पर दिखाई दिए। आईसीआईसीआई बैंक के एक मार्केटिंग अभियान, मैजिक पेंसिल प्रोजेक्ट वीडियो में प्रदर्शित।

थाईलैंड की राजमाता सिरीकित का 93 वर्ष की आयु में निधन

थाईलैंड की राजमाता सिरीकित, जो पूर्व राजपत्नी और वर्तमान सम्राट राजा महा वजीरालोंगकोर्न की माता थीं, का 93 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वह देश के सबसे लंबे समय तक शासन करने वाले सम्राट, राजा भूमिबोल अदुल्यादेज की विधवा थीं, जिन्होंने 2016 में अपने निधन तक 70 वर्षों तक शासन किया।

विरासत और राष्ट्रीय महत्व:

रानी सिरीकित थाईलैंड में व्यापक रूप से पूजनीय थीं और उन्हें "राष्ट्रमाता" माना जाता था। उनका जन्मदिन, 12 अगस्त, थाईलैंड में प्रतिवर्ष मातृ दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने ग्रामीण थाईलैंड में सामाजिक कल्याण, हस्तशिल्प और सांस्कृतिक संरक्षण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

यहाँ तक कि 2020-2021 में राजशाही के खिलाफ छात्रों के नेतृत्व में हुए विरोध प्रदर्शनों के दौरान भी, जनता की आलोचना मुख्यतः राजा पर केंद्रित थी, न कि रानी सिरीकित या दिवंगत राजा भूमिबोल पर, जो उनकी स्थायी लोकप्रियता को दर्शाता है।

थाई राजशाही के बारे में:

थाईलैंड की राजशाही दुनिया की सबसे पुरानी और सबसे प्रतिष्ठित संस्थाओं में से एक है। शाही परिवार को सख्त लेसे-मैजेस्टे कानूनों द्वारा कानूनी रूप से संरक्षित किया जाता है, जो राजशाही की किसी भी आलोचना को अपराध मानते हैं। राजाओं को अर्ध-दैवीय व्यक्ति माना जाता है, और उनके चित्र पूरे देश में प्रमुखता से प्रदर्शित किए जाते हैं।

मुख्य तथ्य:

- थाईलैंड के वर्तमान सम्राट: राजा महा वजीरालोंगकोर्न (राम दशम)।
- सरकार का स्वरूप: संवैधानिक राजशाही (1932 से)।
- थाईलैंड की राजधानी: बैंकॉक।
- मुद्रा: थाई बाट।
- थाईलैंड के प्रधानमंत्री (2025 तक): अनुतिन चार्नविराकुल।
- राजवंश: चक्री राजवंश।
- महत्वपूर्ण कानून: थाईलैंड की दंड संहिता के अंतर्गत लेसे-मैजेस्टे कानून - धारा 112।

दिग्गज अभिनेता गोवर्धन असरानी का 84 वर्ष की आयु में निधन

वरिष्ठ बॉलीवुड अभिनेता गोवर्धन असरानी, जिन्हें असरानी के नाम से भी जाना जाता है, का 84 वर्ष की आयु में मुंबई में निधन हो गया।

असरानी का करियर पाँच दशकों से भी ज़्यादा समय तक चला और उन्होंने हिंदी सिनेमा में, खासकर हास्य और सहायक भूमिकाओं में, काफ़ी योगदान दिया। 1975 की क्लासिक फ़िल्म "शोले" में जेलर की भूमिका निभाकर उन्हें एक प्रतिष्ठित पहचान मिली। उनकी अन्य उल्लेखनीय फ़िल्मों में "चुपके चुपके", "भूल भुलैया", "धमाल", "बंटी और बबली 2" और कई अन्य शामिल हैं। उन्होंने ऋषिकेश मुखर्जी, राजकुमार संतोषी और डेविड धवन जैसे प्रमुख निर्देशकों के साथ काम किया, जिससे भारतीय सिनेमा की विभिन्न पीढ़ियों में उनकी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय मिला। उन्होंने 1974 में "आज की ताज़ा खबर" और 1977 में "बालिका बधू" में अपने अभिनय के लिए सर्वश्रेष्ठ हास्य अभिनेता का फिल्मफेयर पुरस्कार जीता।

दिग्गज अभिनेता पंकज धीर का कैंसर से लंबी लड़ाई के बाद मुंबई में निधन हो गया।

उन्होंने 1983 में फिल्म "सूखा" से अभिनय की शुरुआत की।

महाभारत (1988) में कर्ण की महत्वपूर्ण भूमिका:

बी.आर. चोपड़ा की "महाभारत" (1988) में कर्ण के रूप में देशव्यापी ख्याति प्राप्त की। शुरुआत में उन्होंने अर्जुन के लिए ऑडिशन दिया था, लेकिन बाद में बी.आर. चोपड़ा के समझाने पर उन्हें कर्ण के रूप में चुना गया। स्कूल की पाठ्यपुस्तकों में कर्ण के रूप में उनकी छवि का इस्तेमाल किया गया। करनाल और बस्तर में उनके सम्मान में मूर्तियाँ और मंदिर बनाए गए, जहाँ उन्हें कर्ण के रूप में पूजा जाता है।

वरिष्ठ गायिका रावू बालासरस्वती देवी का 97 वर्ष की आयु में निधन

तेलुगु सिनेमा की पहली पार्श्व गायिका, प्रतिष्ठित अभिनेता-गायिका रावी बालासरस्वती देवी का 97 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

पुरस्कार और सम्मान:

- रघुपति वेंकैया पुरस्कार (1999)
- आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा प्रदान किया गया।
- यह तेलुगु सिनेमा के सर्वोच्च सम्मानों में से एक है, जो फिल्म उद्योग में आजीवन योगदान के लिए दिया जाता है।

कलईमामणि पुरस्कार

- संगीत और पार्श्व गायन में उत्कृष्टता के लिए तमिलनाडु सरकार द्वारा प्रदान किया गया।
- तेलुगु और तमिल दोनों फिल्म उद्योगों में उनके योगदान को मान्यता दी गई।

संगीत कला सागर उपाधि

उनकी बहुमुखी गायन प्रतिभा और भक्ति संगीत प्रस्तुतियों के लिए विभिन्न सांस्कृतिक संगठनों द्वारा सम्मानित।

आल इंडिया रेडियो (AIR) सम्मान

एक रेडियो गायिका और कलाकार के रूप में उनकी उत्कृष्ट सेवा के लिए ऑल इंडिया रेडियो द्वारा सम्मानित, जिससे उन्हें "लाइट म्यूजिक क्वीन" की उपाधि मिली।

केन्या के पूर्व प्रधानमंत्री रैला ओडिंगा का केरल में निधन

केन्या के पूर्व प्रधानमंत्री रैला ओडिंगा का बुधवार सुबह केरल में 80 वर्ष की आयु में कथित तौर पर हृदय गति रुकने से निधन हो गया। उनका इलाज कूथाट्टुकुलम के एक आयुर्वेदिक अस्पताल में चल रहा था।

चिकित्सा पृष्ठभूमि

केरल आने से पहले, ओडिंगा ने मुंबई के एक अस्पताल में कई स्वास्थ्य समस्याओं का इलाज करवाया था। वह लगभग एक सप्ताह पहले आयुर्वेदिक उपचार के लिए केरल आए थे।

राजनीतिक जीवन और योगदान

रैला ओडिंगा ने 1992 से 2013 तक केन्याई संसद में लंगाटा निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया और 2008 से 2013 तक प्रधानमंत्री के रूप में कार्य किया। उन्होंने 1991 में बहुदलीय लोकतंत्र की वकालत करने और 2010 में एक नए केन्याई संविधान को लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ओडिंगा अज़ीमियो ला उमोजा-वन केन्या गठबंधन पार्टी के नेता भी थे।

राजनयिक और प्रक्रियात्मक अद्यतन

उनके निधन के बाद, अस्पताल ने विदेश मंत्रालय और केन्याई दूतावास को सूचित किया। उनके पार्थिव शरीर और आधिकारिक प्रोटोकॉल के संबंध में आगे की कार्रवाई निर्देशों के अनुसार समन्वित की जा रही है।

केन्या

- राजधानी: नैरोबी
- मुद्रा: केन्याई शिलिंग
- आधिकारिक भाषाएँ: स्वाहिली, अंग्रेज़ी
- राष्ट्रपति: विलियम रुटो

गोवा के वरिष्ठ राजनेता रवि नाइक का 79 वर्ष की आयु में निधन

गोवा के पूर्व मुख्यमंत्री और वरिष्ठ भाजपा नेता रवि नाइक का 79 वर्ष की आयु में एक निजी अस्पताल में हृदय गति रुकने से निधन हो गया। नाइक कई दशकों तक गोवा में एक प्रमुख राजनीतिक हस्ती रहे और भंडारी समुदाय से थे।

राजनीतिक जीवन:

- गोवा के मुख्यमंत्री: 1991-1993 (दो वर्षों से अधिक) और 1994 में छह दिनों के लिए।
- विधायी जीवन: पोंडा निर्वाचन क्षेत्र से सात बार विधायक; पहली बार 1984 में चुने गए।
- संसद सदस्य: उत्तरी गोवा से सांसद (1998-1999) रहे।

उल्लेखनीय योगदान और विवाद:

- गोवा में एक तीसरा ज़िला बनाने की वकालत की, 2021 में सत्तारी, पोंडा और धारबंदोरा तालुकाओं को शामिल करने के लिए एक निजी सदस्य का प्रस्ताव पेश किया।
- स्कारलेट कीलिंग मामले में गृह मंत्री के रूप में कार्यकाल के दौरान विवाद, जिसमें उनके बेटे पर आरोप लगे।
- प्रारंभिक जीवन में एक बेहतरीन वॉलीबॉल खिलाड़ी और पोंडा नगर परिषद के पार्षद रहे।

प्रसिद्ध कन्नड़ अभिनेता और रंगमंच कलाकार राजू तालिकोटी का 62 वर्ष की आयु में निधन

वरिष्ठ कन्नड़ रंगमंच कलाकार और हास्य कलाकार राजू तालिकोटी का 62 वर्ष की आयु में कर्नाटक के उडुपी जिले के मणिपाल में दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। राजू तालिकोटी उत्तर कर्नाटक के रंगमंच जगत में एक प्रमुख हस्ती थे, जो अपनी असाधारण हास्य शैली और मंचीय प्रस्तुतियों के प्रति समर्पण के लिए जाने जाते थे। उनके प्रशंसित नाटक "कलियुगद कुडुका" ने उन्हें व्यापक पहचान दिलाई और कन्नड़ रंगमंच और सिनेमा में एक लोकप्रिय नाम के रूप में स्थापित किया।

कर्नाटक:

- स्थापना: 1 नवंबर 1956
- राजधानी: बेंगलुरु
- राज्यपाल: थावर चंद गहलोत
- मुख्यमंत्री: सिद्धारमैया
- उपमुख्यमंत्री: डी. के. शिवकुमार

टीटीके प्रेस्टीज के संस्थापक और रसोई के दिग्गज टी टी जगन्नाथन का 77 वर्ष की आयु में निधन

टीटीके प्रेस्टीज के मानद अध्यक्ष और भारत के किचनवेयर उद्योग में अग्रणी व्यक्ति टी टी जगन्नाथन का 77 वर्ष की आयु में बेंगलुरु में निधन हो गया। उन्हें टीटीके प्रेस्टीज को भारत के सबसे विश्वसनीय घरेलू ब्रांडों में से एक बनाने के लिए व्यापक रूप से जाना जाता था।

टीटीके प्रेस्टीज में करियर और योगदान

जगन्नाथन पाँच दशक से भी पहले टीटीके प्रेस्टीज बोर्ड में शामिल हुए थे और कंपनी के विकास पथ को आकार देने में महत्वपूर्ण

भूमिका निभाई थी। उन्होंने 1975 से 2000 तक प्रबंध निदेशक और 2000 से 2019 तक कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। उनके नेतृत्व में, टीटीके प्रेस्टीज ने कई उत्पाद नवाचार पेश किए, जिनमें प्रेशर कुकर में गैस्केट रिलीज़ सिस्टम भी शामिल है, जिससे वे अधिक सुरक्षित और कुशल बन गए। उन्होंने "डिसरप्ट एंड कॉन्कर: हाउ टीटीके प्रेस्टीज बिकेम अ बिलियन डॉलर कंपनी" नामक पुस्तक लिखी, जिसमें कंपनी के एक अग्रणी ब्रांड में परिवर्तन का वर्णन है।

वेस्टइंडीज के पूर्व ऑलराउंडर, 1975 विश्व कप विजेता बर्नार्ड जूलियन का 75 वर्ष की आयु में निधन

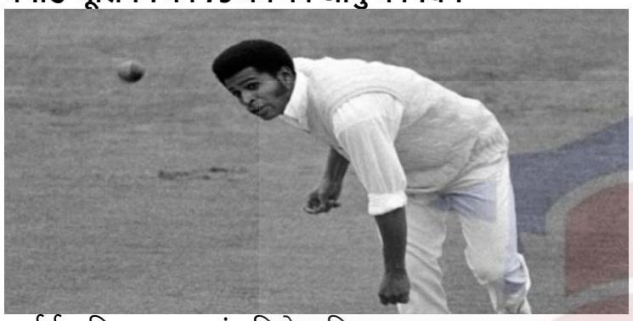

बर्नार्ड जूलियन: एक शांत क्रिकेट दिग्गज

वेस्टइंडीज के पूर्व ऑलराउंडर और 1975 में पहला क्रिकेट विश्व कप जीतने वाली टीम के एक प्रमुख सदस्य, बर्नार्ड जूलियन का 75 वर्ष की आयु में उत्तरी त्रिनिदाद के वाल्सेन में निधन हो गया।

करियर की मुख्य उपलब्धियाँ

- टेस्ट मैच: 24 मैच खेले, 30.92 की औसत से 866 रन बनाए और 37.36 की औसत से 50 विकेट लिए।
- वनडे: 12 मैचों में खेले, 25.72 की औसत से 18 विकेट लिए।
- प्रथम श्रेणी क्रिकेट: केंट और त्रिनिदाद एवं टोबैगो का प्रतिनिधित्व करते हुए 195 मैचों में 5,700 से ज़्यादा रन और 480 विकेट हासिल किए।

अनुभवी अभिनेत्री और नृत्यांगना संध्या शांताराम का 87 वर्ष की उम्र में निधन हो गया

प्रसिद्ध अभिनेत्री और शास्त्रीय नृत्यांगना संध्या शांताराम का 87 वर्ष की आयु में मुंबई में निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार मुंबई के शिवाजी पार्क श्मशान घाट पर किया गया। संध्या को फिल्म निर्माता वी. शांताराम की फिल्म "नवरंग" (1959) से प्रसिद्धि मिली, खासकर लोकप्रिय नृत्य अनुक्रम "अरे जा रे हट नटखट"।

उन्हें फिल्मों में उनकी भूमिकाओं के लिए भी सराहा गया:

- झनक झनक पायल बाजे (1955) - सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीता।
- दो आंखें बारह हाथ (1957) - बर्लिन अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में गोल्डन ग्लोब पुरस्कार और सिल्वर बियर जीता।
- अमर भूपाली (1951)
- जल बिन मछली नृत्य बिन बिजली (1971) - सिनेमास्कोप में भारत की पहली फिल्म।
- पिंजरा (1972) - वी. शांताराम द्वारा निर्देशित मराठी फिल्म, जिसने मराठी में सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीता।
- वह दादा साहब फाल्के पुरस्कार (1985) से सम्मानित, महान फिल्म निर्माता वी. शांताराम (1901-1990) की पत्नी थीं।

दिल्ली के अनुभवी फुटबॉल प्रशासक एन.के. भाटिया का निधन

अनुभवी फुटबॉल प्रशासक एन.के. भाटिया का 76 वर्ष की आयु में निधन

कारण: आयु संबंधी जटिलताओं के कारण लंबी बीमारी के बाद निधन।

करियर और योगदान

पद:

- फुटबॉल दिल्ली (पूर्व में दिल्ली सॉकर एसोसिएशन - डीएसए) के उपाध्यक्ष।
- दिल्ली फुटबॉल एसोसिएशन के पूर्व सचिव और कोषाध्यक्ष।
- अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) की विभिन्न स्थायी समितियों के सदस्य।
- सेवाकाल: 1970 के दशक से फुटबॉल प्रशासन में सक्रिय।
- प्रतिनिधित्व: एआईएफएफ की बैठकों में अक्सर दिल्ली सॉकर एसोसिएशन का प्रतिनिधित्व।
- नेतृत्व भूमिका: उनके नेतृत्व में, दिल्ली ने कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय फुटबॉल टूर्नामेंटों की सफलतापूर्वक मेजबानी की।

वरिष्ठ पत्रकार टीजेएस जॉर्ज का बेंगलुरु में निधन

एशियावीक के संस्थापक संपादक और लंबे समय तक स्तंभकार रहे टीजेएस जॉर्ज का 97 वर्ष की आयु में लंबी बीमारी के बाद बेंगलुरु में निधन हो गया।

कार्यक्रम और योगदान

- उन्हें द न्यू इंडियन एक्सप्रेस में अपने साप्ताहिक स्तंभ "पॉइंट ऑफ़ व्यू" के लिए जाना जाता था, जिसे उन्होंने 2022 तक दो दशकों से अधिक समय तक लिखा।
- जॉर्ज ने एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी, नरगिस और एन.टी. रामाराव सहित प्रमुख हस्तियों की जीवनियाँ लिखीं।
- 1965 में, तत्कालीन बिहार के मुख्यमंत्री की आलोचना करने के कारण उन्हें राजद्रोह के आरोप में जेल भेज दिया गया था।
- 2011 में पद्म भूषण से सम्मानित, उन्हें उनके निडर लेखन और बौद्धिक दृढ़ता के लिए सम्मानित किया गया।

निजी जीवन और विरासत

- जॉर्ज मूल रूप से केरल के थे, लेकिन उन्होंने अपना अधिकांश जीवन बेंगलुरु में बिताया।
- उनके परिवार में उनके बच्चे हैं - जीत थायिल, एक लेखक, और शीबा, एक पत्रकार।

पद्म विभूषण गायक पंडित छन्नूलाल मिश्रा का 89 वर्ष की आयु में उत्तर प्रदेश में निधन हो गया

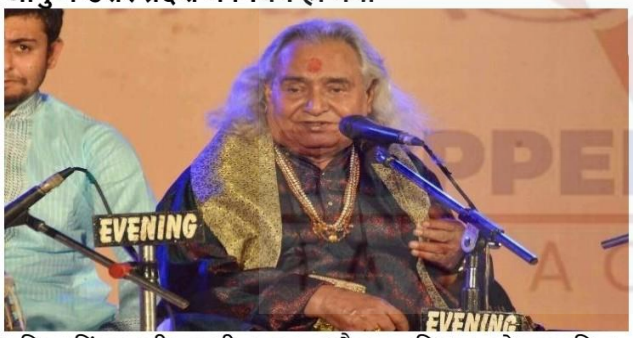

प्रसिद्ध हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायक और पद्म विभूषण से सम्मानित पंडित छन्नूलाल मिश्रा का लंबी बीमारी के बाद 89 वर्ष की आयु में उत्तर प्रदेश के मिर्ज़ापुर में निधन हो गया। 1936 में आज़मगढ़ में जन्मे, वह हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के पुरोधा थे। ख्याल, ठुमरी, दादरा, चैती, कजरी और भजन में उन्हें महारत हासिल थी। उनके गुरुओं में उनके पिता बद्री प्रसाद मिश्रा, उस्ताद अब्दुल गनी खान (किराना घराना) और ठाकुर जयदेव सिंह शामिल थे।

- पुरस्कार: पद्म भूषण (2010) और पद्म विभूषण (2020)।

पंडित छन्नूलाल मिश्र

पूरब अंग गायकी में विशेषज्ञता, लोक प्रभाव (विशेष रूप से पूर्वी यूपी/बिहार परंपराओं) से समृद्ध हिंदुस्तानी संगीत की एक शैली। रामचरितमानस भजनों और मौसमी गीतों (कजरी, चैती, होरी) की भक्ति और लोक प्रस्तुतियों के लिए जाना जाता है।

वयोवृद्ध गांधीवादी, समाजवादी और स्वतंत्रता सेनानी जी.जी. पारिख का 100 वर्ष की आयु में मुंबई में निधन

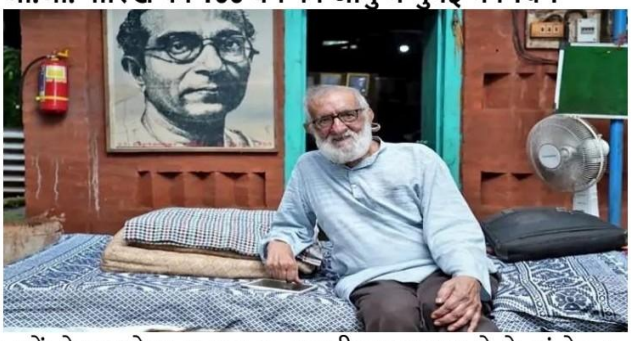

उन्हें दो बार जेल जाना पड़ा - पहली बार भारत छोड़ो आंदोलन (1942) के दौरान और बाद में आपातकाल (1975-77) के दौरान।

उन्होंने 1940 के दशक के प्रारंभ में सौराष्ट्र और मुंबई में अपनी सक्रियता शुरू की। 1947 में, उन्होंने बॉम्बे छात्र कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। अपनी दृढ़ समाजवादी विचारधारा के लिए जाने जाने वाले, पारिख ने स्वतंत्रता के बाद भी सार्वजनिक जीवन में अपना काम जारी रखा और गांधीवादी मूल्यों और सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्ध रहे।

वरिष्ठ भाजपा नेता विजय कुमार मल्होत्रा का निधन

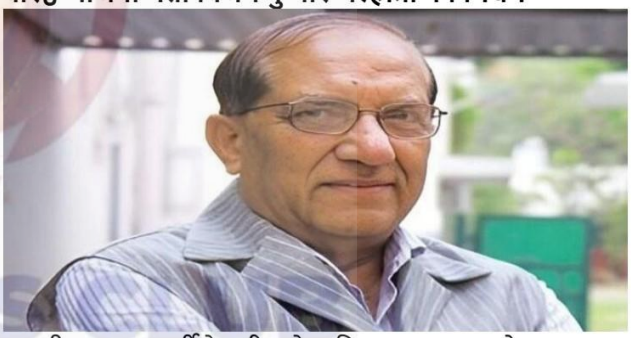

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता विजय कुमार मल्होत्रा का 94 वर्ष की आयु में दिल्ली में निधन हो गया। वह कई दिनों से बीमार चल रहे थे।

राजनीतिक सफर और उपलब्धियां

मल्होत्रा 45 साल से अधिक समय तक दिल्ली की राजनीति में सक्रिय रहे। वह पांच बार सांसद और दो बार विधायक रहे। उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों में 1999 के लोकसभा चुनाव में पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को हराना भी शामिल है। वह दिल्ली भाजपा के पहले अध्यक्ष थे और उन्होंने पार्टी को राजधानी में मजबूत करने में अहम भूमिका निभाई।

प्रभाव और प्रतिक्रियाएं

उनके निधन को दिल्ली की राजनीति में एक युग के अंत के रूप में देखा जा रहा है। पार्टी नेताओं और गणमान्य लोगों ने शोक व्यक्त किया और उन्हें उनकी लगन, सादगी और जनसेवा के प्रति समर्पण के लिए याद किया।

परीक्षाओं हेतु महत्वपूर्ण दिन

दिवस	मनाया जाता है	थीम / महत्व
1 नवम्बर	विश्व शाकाहारी दिवस	1944 में यूके वेगन सोसाइटी की स्थापना की स्मृति हेतु
5 नवम्बर	विश्व सुनामी दिवस	2015 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा सेंडाई फ्रेमवर्क को अपनाने के उपलक्ष्य में
7 नवम्बर	शिशु संरक्षण दिवस	शिशुओं की सुरक्षा के बारे में जागरूकता फैलाना
7 नवम्बर	राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस	नोबेल पुरस्कार विजेता मैरी क्यूरी की जयंती मनाने हेतु
9 नवम्बर	उत्तराखंड स्थापना दिवस	2000 में उत्तराखंड राज्य की स्थापना के उपलक्ष्य में
11 नवम्बर	युद्धविराम दिवस (स्मरण दिवस)	यह वह दिन है जब प्रथम विश्व युद्ध 1918 में 11वें महीने के 11वें दिन सुबह 11 बजे समाप्त हुआ था।
12 नवम्बर	विश्व निमोनिया दिवस	निमोनिया को रोकने की लड़ाई में अग्रणी भूमिका निभाना
13 नवम्बर	विश्व दयालुता दिवस	लोगों, समाज और समुदाय को अच्छे काम करने और सभी के प्रति दयालु होने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु
14 नवम्बर	विश्व मधुमेह दिवस	मधुमेह और स्वास्थ्य
14 नवम्बर	बाल दिवस	भारत के पहले प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू की जयंती मनाने हेतु, जिनका जन्म 14 नवंबर, 1889 को हुआ था।
15 नवम्बर	झारखण्ड स्थापना दिवस	2000 में झारखंड राज्य की स्थापना के उपलक्ष्य में
19 नवम्बर	अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस	पुरुषों में मानसिक स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाना
19 नवम्बर	विश्व शौचालय दिवस	वैश्विक स्वच्छता संकट से निपटने के लिए कार्रवाई को प्रेरित करना
20 नवम्बर	सार्वभौमिक बाल दिवस	दुनिया भर में बच्चों के बीच जागरूकता को बढ़ावा देना और बच्चों के कल्याण में सुधार करना
21 नवम्बर	विश्व टेलीविजन दिवस	22 नवंबर, 1996 को संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रथम विश्व टेलीविजन फोरम की स्थापना के उपलक्ष्य में
25 नवम्बर	महिलाओं के खिलाफ हिंसा उन्मूलन के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस	वैश्विक, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं के खिलाफ हिंसा को रोकना और समाप्त करना
26 नवम्बर	भारत का संविधान दिवस	26 नवंबर 1949 को भारत के संविधान को अपनाने के उपलक्ष्य में

पुस्तकें एवं लेखक

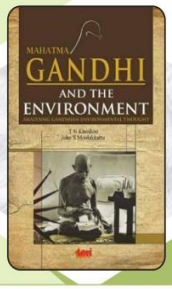

पुस्तक: महात्मा गांधी एंड द एनवायरनमेंट
लेखक: टी. एन. खोशू
बारे में: यह पुस्तक गांधीजी के मूल पर्यावरणीय विचारों को संकलित करती है और उन्हें आधुनिक चुनौतियों के संदर्भ में प्रस्तुत करती है।

पुस्तक: सेइओबो देयर बिलो
लेखक: लास्ज़लो क्रास्ज़नाहोरकाई
बारे में: यह पुस्तक कला, पीड़ा और सौंदर्य की गहन खोज है, जिसमें बेतुकेपन को पूर्वी आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि के साथ मिश्रित किया गया है।

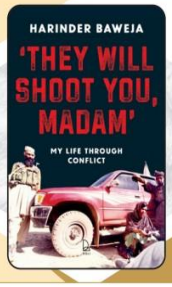

पुस्तक: दे विल शूट यू, मैडम
लेखक: हरिंदर बावेजा
बारे में: यह पुस्तक भारत और उसके बाहर के अस्थिर क्षेत्रों में चार दशकों से अधिक समय तक रिपोर्टिंग करने के लेखक के अनुभवों का वर्णन करती है।

पुस्तक: हर्श्ट 07769: अ नावेल
लेखक: लास्ज़लो क्रास्ज़नाहोरकाई
बारे में: यह उपन्यास मिथक और यथार्थवाद का एक काव्यात्मक मिश्रण है, जो अराजकता के बीच भय, परिवर्तन और क्षणभंगुर सौंदर्य को चित्रित करता है।

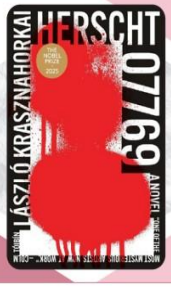

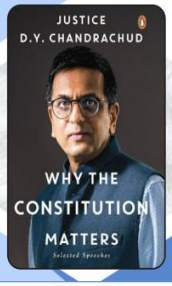

पुस्तक: व्हाई द कंसटीट्यूशन मैटर्स
लेखक: डी.वाई. चंद्रचूड़
बारे में: यह पुस्तक कानूनी विश्लेषण से आगे बढ़कर एक प्रभावशाली सार्वजनिक आख्यान प्रस्तुत करती है कि भारतीय संविधान वास्तविक जीवन को कैसे प्रभावित करता है।

पुस्तक: आई लिव इन द स्लम्स
लेखक: कैन ज़ू
बारे में: आई लिव इन द स्लम्स में चीनी भौतिकवाद - भौतिक वस्तुओं के प्रति प्रेम - और पश्चिमी अमूर्त सोच, दोनों के तत्व समाहित हैं।

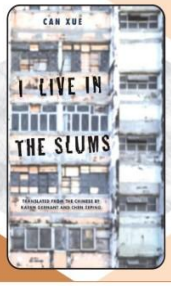

पुस्तक: सैटान्टैंगो
लेखक: लास्ज़लो क्रास्ज़नाहोरकाई
बारे में: 1985 में प्रकाशित इस पुस्तक में चार साल बाद हंगरी में कम्युनिस्ट शासन के पतन की भविष्यवाणी की गई थी।

पुस्तक: लव इन द न्यू मिल्लेनियम
लेखक: कैन ज़ू
बारे में: इस गहरे हास्य उपन्यास में, महिलाओं का एक समूह निरंतर निगरानी की दुनिया में रहता है, जहाँ मुखबिर फूलों की क्यारियों में छिपे रहते हैं और झूठी खबरें उड़ती रहती हैं।

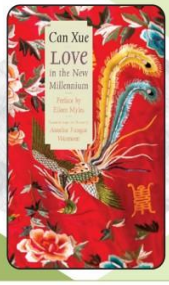

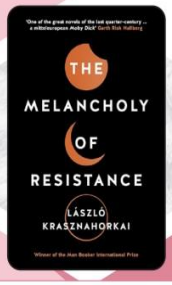

पुस्तक: द मेलनकोले ऑफ़ रेसिस्टेंस
लेखक: लास्ज़लो क्रास्ज़नाहोरकाई
बारे में: यह पुस्तक रहस्यमय अजनबियों द्वारा आक्रमण किए गए एक छोटे से शहर में अराजकता, निरर्थक कार्रवाई और सत्ता परिवर्तन की एक गहरी हास्यपूर्ण, अवास्तविक कहानी बयान करती है।

पुस्तक: द लास्ट लवर
लेखक: कैन ज़ू
बारे में: यह पुस्तक पतियों, पत्नियों और प्रेमियों के एक पूरे समूह से रूबरू कराती है। जटिल और अक्सर कष्टदायक रिश्तों में उलझे हुए।

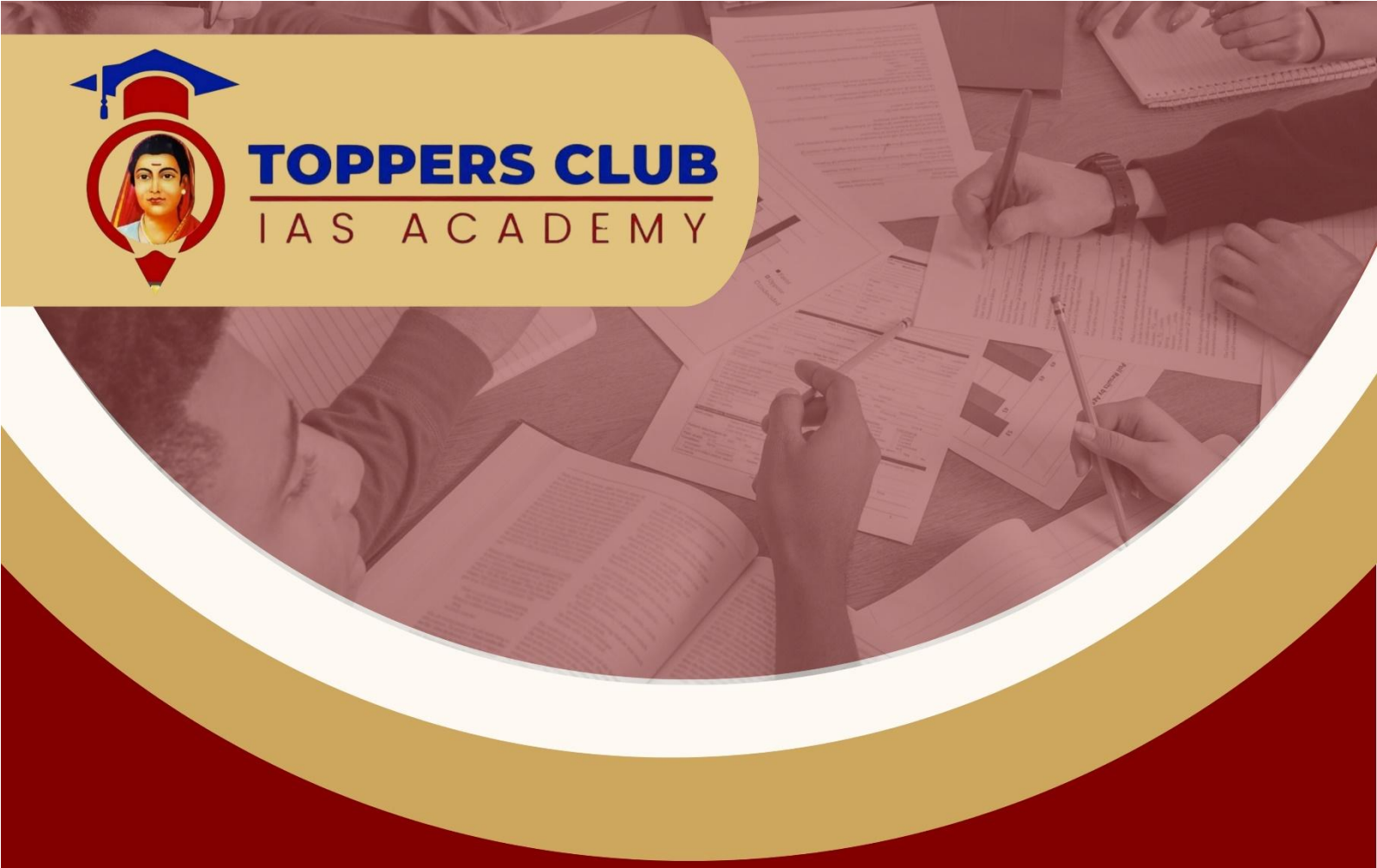

TOPPERS CLUB
IAS ACADEMY

Monthly CURRENT AFFAIRS

By - Toppers Club

Staying updated with current affairs is crucial for academic and professional growth. It enhances knowledge, sharpens critical thinking, and improves decision-making. Awareness of global issues aids in competitive exams, essays, and interviews. Beyond academics, it reflects adaptability and curiosity—key traits in today's fast-changing world. Being informed broadens perspective, builds confidence, and opens up new opportunities.

+91 6388671098
dpsctc@gmail.com
Toppers CLUB IAS
www.topperclubiasacademy.in
Sec 12 HNO 687 MUNSHI PULIYA INDIRA NAGAR LUCKNOW 226016